अंधेरे में उजाला

मनोरंजक और शिक्षाप्रद नाटक

लेखक
लियो टॉल्सटॉय

अनुवादक
क्षेमानन्द 'राहत'

अंधेरे में उजाला

मनोरंजक और शिक्षाप्रद नाटक

•

लेखक
लियो टाल्सटाय

•

अनुवादक
क्षेमानन्द 'राहत'

•

2007

सस्ता साहित्य मण्डल

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

ISBN 81-7309-206-0

•

प्रकाशक

सस्ता साहित्य मण्डल

एन-77, पहली मंजिल, कनॉट सर्कस, नई दिल्ली-110001

फोन : 23310505, 41523565

शाखा : 126, जीरो रोड, इलाहाबाद-211003

फोन : 0532-2400034

•

संस्करण : 2007

प्रतियां : 1100

मूल्य : रु. 30.00

•

मुद्रक

इण्डिया बाइंडिंग हाऊस

ए-98, सेक्टर 65, नोएडा

प्रकाशकीय

प्रस्तुत पुस्तक रूस के महान विचारक महर्षि टाल्सटाय की अमर कृति 'लाइट शाइन्स इन डार्कनैस' का अनुवाद है। वैसे तो टाल्सटाय की सभी रचनाएं उच्चकोटि की हैं; लेकिन इस नाटक का उनकी रचनाओं में एक विशिष्ट स्थान है, कारण कि इसकी रचना उन्होंने कोरी कल्पना के आधार पर नहीं की; बल्कि इसमें उन्होंने अपने जीवन की घटनाओं को ही चित्रित किया है। इस प्रकार इस कृति में पाठकों को स्वयं नाटककार के जीवन की झांकी मिलती है।

टाल्सटाय की अनेक रचनाएं हिंदी में प्रकाशित हो चुकी हैं और अपने नैतिक समाधान, परिपक्व विचार और विशिष्ट शैली के लिए उन्होंने हिंदी के पाठकों के बीच बड़ा नाम और मान पाया है। उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे सबके लिए उपयोगी हैं।

हमें विश्वास है कि इस श्रेष्ठ नाटक को जो भी पढ़ेगा, उसे लाभ ही होगा।

आशा है, पाठक इस तथा लेखक की अन्य पुस्तकों का भरपूर लाभ लेंगे।

—मंत्री

प्रस्तावना

महर्षि टाल्सटाय उन्नीसवीं शताब्दी के एक महान् विचारक और लेखक हुए हैं। उन्होंने अपनी प्रतिभाशालिनी लेखनी से न केवल अपने महान् देश रूस में ही प्रत्युत समस्त यूरोपीय भूखण्ड में एक स्वास्थ्यमय क्रांति की लहर फैला दी। धार्मिक और सामाजिक रूढ़ियों से घिरे हुए समस्त ईसाई जगत् में उन्होंने एक नवीन विचार-धारा बहा दी। उनके जीवनकाल में ही उनका नाम समस्त सभ्य संसार में विख्यात हो गया था और संसारभर के समान-धर्मा लोग उन्हें अपना आचार्य तथा पथ-प्रदर्शक मानने लगे थे।

टाल्सटाय ने अनेक उपन्यास, कहानियां, निबंध और गंभीर विवेचनात्मक ग्रंथ लिखे हैं। धर्म, समाज, विज्ञान, कला और स्त्री-पुरुष संबंध पर उनके विचार अत्यंत मार्मिक, मौलिक और प्रौढ़ हैं और संसार के विचारकों पर उनका गहरा असर पड़ा है। टाल्सटाय की लेखनी में जबरदस्त शक्ति थी। वह जिस बात का वर्णन करते हैं, उसका चित्र-सा खींच देते हैं, जिस बात को समझाते हैं, उसके लिए प्राय: समस्त संभव तर्कनाओं का उपयोग करके उसे सिद्ध करते हैं। टाल्सटाय के ग्रंथों का अवलोकन करने से पता चलता है कि वह एक बहु-विज्ञ विद्वान थे। जिस विषय पर वह लेखनी उठाते हैं उसमें उनकी पर्याप्त गति है। वह केवल अपने ही विचार लिखकर संतुष्ट नहीं हो जाते, परंतु अपने पूर्व-वर्ती तथा समकालीन यूरोपीय विद्वानों ने संबंधित विषय पर जो विचार प्रकट किये हैं उनका उल्लेख और उचित आलोचना करके किसी निष्कर्ष पर पहुंचते हैं। इसीलिए उनके तर्क-प्रधान ग्रंथों में विस्तार का बाहुल्य है।

टाल्सटाय ईसा के सच्चे भक्त थे, परंतु आजकल ईसाइयत के नाम पर जो बातें प्रचलित हैं उनसे उनका गहरा विरोध था। वह चर्च के अस्तित्व को अनावश्यक और उसकी सत्ता को हानिकारक मानते थे। उनका खयाल था कि

चर्च ने ईसा का बहिष्कार किया है और ईसा के उपदेशों के मनमाने अर्थ लगाकर बिल्कुल उनके विरुद्ध और विपरीत भावनाओं का लोगों में प्रचार कर रखा है। ईसा के 'गिरि-प्रवचन' पर वह संपूर्ण हृदय से मुग्ध थे और मानते थे कि आध्यात्मिक कल्याण तथा सांसारिक सुख और शांति के लिए उन नियमों पर चलना और व्यवहार करना परमावश्यक ही नहीं अनिवार्य है। महात्मा ईसा का वह उपदेश अवश्य ही मनुष्य-मात्र के अध्ययन करने की चीज है। समस्त विश्व के साहित्य में उससे बढ़कर सरल, सुंदर और ऊंची चीज मिलना कठिन है।

किंतु टाल्सटाय केवल विचारक, लेखक और प्रचारक ही नहीं थे, वास्तव में वह संत थे। वह विपरीत परिस्थिति से बुरी तरह जकड़े हुए होने पर भी अपने विचारों के अनुकूल आचरण करने के लिए छटपटाते थे और जिन बातों को उन्होंने आवश्यक समझा, उनपर अमल भी किया। रूस के एक अत्यंत प्रतिष्ठित और समृद्धिशाली सामंत-कुल में जन्म लेने पर भी उन्होंने अपने जीवन को बहुत ही सादा बना लिया था। उनकी प्रबल इच्छा थी कि वह अपनी विशाल संपत्ति किसानों को दे डालें; क्योंकि वह मानते थे कि उस जमीन पर उनका कोई अधिकार नहीं, वह तो किसानों की ही चीज है; किंतु घरवालों ने उन्हें ऐसा करने नहीं दिया। वह मानते थे कि मनुष्य कितना ही बड़ा और विद्वान क्यों न हो, उसे शारीरिक श्रम द्वारा अपनी आजीविका उपार्जन करना चाहिए और इसलिए उन्होंने स्वयं श्रम करना प्रारंभ किया। ज्ञान न बेचने के भाव से स्वरचित पुस्तकों की आय लेने से उन्होंने इन्कार कर दिया।

क्रांतिकारी विचार रखने के कारण रूसी सरकार की क्रूर-दृष्टि तो उनपर थी ही, पर सामाजिक और संपत्ति-संबंधी विचारों पर अमल करने की कोशिश करने के कारण वह अपने मित्रों और सगे-संबंधियों के भी बुरे बन गये थे। उनकी स्त्री और बच्चे उनकी बातों से सहमत न थे। और उनकी 'सनकों' के कारण बहुत ही दुखी और परेशान थे। कहीं से किसी प्रकार की सहायता न मिलने और घनिष्ट आत्मीयों के सतत् विरोध के कारण वह अपने जीवन के महत्त्वपूर्ण परिवर्तनों में सफल न हो सके, यह उनके अंतिम जीवन की बड़ी ही व्यथामय और करुण घटना है।

टाल्सटाय का प्रारंभिक जीवन ठीक वैसा ही न था जैसाकि अपना प्रौढ़ और अंतिम जीवन उन्होंने बना लिया था।

यौवनं धन संपत्तिः प्रभुत्वमविवेकता।
एकैकमप्यनर्थाय किमुयत्र चतुष्टयम्॥

इस श्लोक में एक नित्य सत्य है। इसी यौवन, धन, संपत्ति और सत्ता के विष ने न जाने कितने ही होनहार नवयुवकों और युवतियों के अधखिले जीवन को विषाक्त बनाकर सदा के लिए नष्ट-भ्रष्ट कर दिया है। युवक टाल्सटाय भी इसकी लपेट में आ गया और कुसंग में पड़कर अपने शरीर और आत्मा पर तथा दूसरों पर उसने तरह-तरह के अनाचार किये। किंतु वह संस्कारी प्राणी था। इसलिए अपने घोर पतन के समय भी उसने विवेक को एकदम तिलांजलि नहीं दी और उसी विवेक के बल पर अपने को पतन के गड्ढ़े से निकालकर और पाप-पाश को छिन्न-भिन्न करके फिर संसार के सामने एक शुद्ध और मुमुक्षु जीव के रूप में अपने व्यक्तित्व को लाकर खड़ा करने में समर्थ हुआ। टाल्सटाय का उदाहरण स्वभावजन्य दुर्बलताओं से भरे हुए मनुष्य-समाज के लिए बहुत ही स्फूर्तिदायी है। टाल्सटाय देवता न था, वह मानवी दुर्बलताओं से परिपूर्ण एक मनुष्य था। अमीरी और अमीरों के चारों ओर जो पाप-जाल फैला रहता है, उसका वह बेतरह शिकार हुआ; किंतु वह उठा और उठकर वहां पहुंचा जहां संसार की बड़ी-से-बड़ी सत्ता और विद्वत्ता की महत्ता प्रेम और आदर के साथ उसे सिर झुकाती थी। निस्संदेह अपने जमाने का वह सबसे बड़ा महापुरुष था। उसका चरित्र-बल और संसार भर में फैला हुआ उसका यश इतना प्रबल था कि अत्यंत अवाञ्छनीय समझते हुए भी रूस की जारशाही को उसे हानि पहुंचाने की हिम्मत न हुई।

टाल्सटाय की आत्मा भारतीयता के बहुत अनुकूल थी। वह आत्मा की अमरता में विश्वास रखते थे। एक अंग्रेज मुलाकाती भक्त ने जब उनसे आत्मा की अमरता और मृत्यु के बाद के जीवन की चर्चा करते हुए कहा, ''ऐसा विश्वास रखने पर मौत का सारा भय दूर हो जाता है'', तो इन्होंने उत्तर दिया था–''यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात है। इसके बिना तो जीवन का कोई अर्थ नहीं। किंतु भविष्य-जीवन की वास्तविकता का सच्चा सबूत आध्यात्मिक घटनाओं में नहीं, बल्कि उस साक्ष्य, उस विश्वास में है, जो जीवन में सदाचार के नियमों का अनुसरण करने से स्वतः मनुष्य के हृदय में पैदा होता है।'' उनका अंतिम वाक्य इस बात को घोषित करता है कि उनका ज्ञान और आत्मिक विश्वास पुस्तकों के अध्ययन

पर नहीं, बल्कि स्वकीय चारित्र्यगत अनुभूति पर अवलंबित था।

महात्मा टाल्सटाय ने पूर्ण परिपक्व अवस्था में विवाह किया था और उनके कई बच्चे भी थे; किंतु स्त्री-पुरुष का कैसा संबंध रहना चाहिए, इस विषय में उनके विचार कठोर और उच्च हैं और महात्मा गांधी के विचारों से मिलते-जुलते हैं। ब्रह्मचर्य और संयम—यही उनका आदर्श है। स्त्री और पुरुष ब्रह्मचर्य-धारण करके मानव-समाज की सेवा करें और जब ब्रह्मचर्य-निर्वाह में अपने को असमर्थ पावें तभी विवाह का विचार करें और विवाहित जीवन को भी कठोर संयम के साथ व्यतीत करें। जो संतान उत्पन्न हो, उसका आदर्श व्यक्तिगत सांसारिक उत्कर्ष अथवा अर्थ-संचय न हो, प्रत्युत मानव-समाज की सेवा करना ही वह अपना लक्ष्य बनाये। तलाक-प्रथा के वह विरुद्ध हैं।

टाल्सटाय जीवन-पर्यंत अपने आदर्शों को व्यवहार में लाने के लिए परिस्थिति से लड़ते रहे और अंत समय में घर छोड़कर चल दिये। बहुत दिनों पहले एक सज्जन ने अपने व्याख्यान में कहा था कि टाल्सटाय ने एक विशिष्ट भारतीय पुस्तक में वृद्धावस्था में संन्यास ग्रहण करने की बात देखकर घर छोड़कर संन्यासाश्रम स्वीकार कर लिया। यह बात भारतीय आदर्श की प्रेरणा से टाल्सटाय ने की थी अथवा घर में रहकर अपने प्राण-प्रिय सिद्धांतों में सफलता प्राप्त करना असंभव जानकर वह संन्यासी हो गये, यह कहना कठिन है। पर, इसमें संदेह नहीं कि अंतिम अवस्था में उन्होंने घर-बार छोड़कर कुहरे और पाले से भरे हुए उस रूसी प्रदेश में, भगवान् के बनाये हुए इस विशाल प्रांगण में प्रवेश किया और इस प्रकार अपनी आदर्शप्रियता का एक अंतिम और जाज्वल्यमान उदाहरण संसार के झिझकनेवाले पथिकों को प्रोत्साहन देने के लिए इस अनंत रंग-मंच पर ला रखा।

प्रस्तुत पुस्तक इन्हीं ऋषितुल्य टाल्सटाय ने 'लाइट शाइन्स इन डार्कनैस' (Light shines in Darkness) नाटक का अनुवाद है। टाल्सटाय उन लोगों में से नहीं हैं जो 'कला केवल कला के लिए है' इस सिद्धांत को मानते हैं। वह मानते हैं कि कला जीवन को मधुर और सुंदर बनाने के लिए होनी चाहिए। उनके नाटक, उपन्यास और कहानियां इसी लक्ष्य को लेकर लिखी गई हैं और यह नाटक भी उन्हीं में से एक है।

'अंधेरे में उजाला' टाल्सटाय की श्रेष्ठतम कृति कही जाती है। इसमें

टाल्सटाय ने अपने मनोभावों को व्यक्त किया है। यह नाटक कल्पना के आधार पर नहीं लिखा है, इसमें व्यक्तिगत जीवन की स्पष्ट छाया है और यह जीवन और किसी का नहीं स्वयं नाट्यकार का और मुख्यत: उसके परिवार का जीवन है, जो इस नाटक के कथानक में प्रस्फुटित हुआ है। इस नाटक का प्रमुख पात्र निकोलस टाल्सटाय का प्रतिबिंब है और मेरी सरयान्तसव टाल्सटाय की धर्म-पत्नी का अभिनय करती है।

जॉन कोलमैन केनवर्दी ने 'टाल्सटाय–उनकी जीवनी और कृतियां' नामक पुस्तक में टाल्सटाय-मिलन का जिक्र करते हुए उनकी स्त्री आदि के संबंध में लिखा है–

''काउन्टेस का कद लंबा है, काफी उम्र की होते हुए भी वह सजीव और फुर्तीली तथा शक्तिशाली और रोबदारवाली है। वह (अर्थात् काउन्टेस), अधेड़ उम्र का ज्येष्ठ पुत्र, दो बड़ी कन्याएं, एक छोटा लड़का और एक लड़की और दो या तीन अभ्यागत–यह सब स्पष्टत: सिद्ध करते हैं कि घर का मालिक आगे–अन्य सब लोगों की पहुंच से आगे बढ़ गया है और वह अपनी-अपनी भिन्न रुचि के अनुसार जैसा और जितना जिसके जी में आता है उतना ही उसका अनुसरण करते हैं।''

प्रत्यक्षदर्शी लेखक ने इन पंक्तियों में टाल्सटाय के गार्हस्थ्य जीवन की वास्तविक स्थिति का खाका खींच दिया है और इस नाटक के अंदर भी हम निकोलस के परिवार का कुछ ऐसा ही चित्र देखते हैं। टाल्सटाय ने दया करके मेरी को उतना जबरदस्त न बनाकर प्रेमल और कोमल प्रकृति का बनाया है और अपने बच्चों के खयाल से तथा अपनी तेज-तर्रार बहन अलेक्जेण्ड्रा के द्वारा बराबर बहकाये जाने से ही वह निकोलस की इच्छाओं के प्रति विरोध प्रदर्शित करने में समर्थ होती है। मेरी एक ऐसी सरल प्रकृति की स्त्री है जो सब प्रकार की महत्त्वाकांक्षाओं से रहित है और जिसका जीवन पति, पुत्र और परिवार तक ही परिमित है। वह अभिमान करने की नहीं, केवल प्यार और पूजा करने की चीज है। मेरी अपने पति निकोलस की जब-तब उठनेवाली नित-नई तरंगों से परेशान है। निकोलस जब सारी जायदाद किसानों को देने के लिए जोर देता है तब वह इस आशा का आश्रय लेती है–''उनकी पहली तरंगों की भांति यह भी चली जायंगी।'' किंतु उसका वह सहारा बालू की भांति ढह जाता है। कौन समझेगा

उसकी उस असहायावस्था को कि जब निकोलस अपनी जिद से बाज नहीं आता और मेरी की साधारण विवेक-बुद्धि उसके परंपरागत संस्कार और उसके चारों ओर का संसार अपनी पैतृक संपत्ति को इस प्रकार लुटाकर अपने प्यारे बाल-बच्चों को बिल्कुल भिखारी बना डालने के विचार का घोर विरोध करता है और जब निकोलस के प्रबल युक्तिसंगत तर्कों का कोई जवाब न पाकर मन-ही-मन उनसे प्रभावित होकर वह अपनी सखी 'शाहजादी चेरमशनव्स' से कहती है—"यह तो और भी भयानक है। मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि वह जो-कुछ कहते हैं वह सब सच है।"

दु:खित मेरी को ढ़ाढ़स देने के लिए शाहजादी कहती है—"यह इसलिए कि आप उन्हें प्यार करती हैं।"

थाह न पाये हुए मनुष्य की भांति मेरी उत्तर देती है—"मालूम नहीं। मगर है यह बड़ी गड़बड़—और यही ईसाई धर्म है।"

मेरी की आत्मा का विचित्र स्वरूप हम उस समय देखते हैं कि जब निकोलस के घर छोड़कर जाने के समय खबर मिलते ही वह दौड़ी आती है। उसे सदा की तर्क-विहीन निरस्त्र सीधी-सादी गृहिणी में यकायक यह इतनी तर्कना-शक्ति कहां से फूट पड़ी? घर छोड़कर जाने के लिए निकोलस जब द्वार पर आता है तो वहां मेरी को खड़ा देखकर आश्चर्य करता है—"अरे, तुम यहां कहां-क्यों आ गई!"

स्त्री-सुलभ अभिमान और अधिकार के साथ मेरी कहती है—"क्यों आ गई? तुम्हें इस वज्र निठुराई से रोकने के लिए। तुम यह क्या कर रहे थे? घर क्यों छोड़े जाते हो?"

खासी बहस छिड़ जाती है। आज मेरी के पैंतरे देखिये। सिपाही अपने मालिक की जान बचाने के लिए जूझ रहा है। माता जलते हुए घर में से सोते हुए बच्चे को निकालने के लिए दौड़ी है।

मेरी एक जगह शराबी और दीन अलेक्जेन्ड्र पेट्रोविच की ओर संकेत करके कहती है—"भला तुम्हारा और इसका क्या मेल है, वह तुम्हारी स्त्री से भी बढ़कर तुम्हें प्यारा क्यों है?"

दूसरी जगह कहती है—"देखो तुम ईसाई हो, तुम दूसरों के साथ नेकी करना चाहते हो, और तुम कहते हो कि तुम सब आदमियों को प्यार करते हो;

लेकिन उन बेचारी औरत को क्यों सताते हो, जिसने सारा जन्म तुम्हारी सेवा में बिताया है।''

निकोलस इस लांछन का पूरा निराकरण करने भी न पाया था कि मेरी ने दूसरा वार किया। निकोलस के घर छोड़कर जाने से उसकी कितनी बदनामी और बेइज्जती होगी इस बात का जिक्र करते हुए मेरी कुहक उठती है, ''और सिर्फ बेइज्जती ही नहीं, सबसे बुरी बात तो यह है कि अब तुम मुझे प्यार नहीं करते। तुम औरों को प्यार करते हो, सारी दुनिया को चाहते हो, और उस शराबी अलेक्जेन्ड्र पेट्रोविच तक को प्यार करते हो। बस दुनिया भर में एक मैं ही ऐसी बुरी, बदकिस्मत और गई-गुजरी हूं जिसे तुम प्यार करना नहीं चाहते। तुम मुझे प्यार करो या न करो, मगर मैं तुम्हें अब भी चाहती हूँ और तुम्हारे बिना जी नहीं सकती। अरे, निर्मोही, तुम यह क्यों करते हो? क्यों मुझे छोड़ते हो?''

यह वक्तृता न थी, संसार के कोमलतम काव्यों का अत्यंत कमनीय सार था और इसपर उन आंखों से आंसुओं का बह उठना कि जिन्हें जीवन-भर प्यार किया हो।

बेचारा निकोलस सिटपिटा जाता है, किंतु हथियार डाले बिना ही कहता है—''मगर तुम मेरे जीवन—मेरे आध्यात्मिक जीवन को समझना भी तो नहीं चाहती।''

उत्तर बना-बनाया था—''मैं समझना चाहती हूं, मगर नहीं समझ पाती। मैं तो देखती हूं कि तुम्हारे ईसाई-धर्म ने तुम्हें मुझसे और बच्चों से घृणा करना सिखला दिया है।''

पुरुष निकोलस ने अपनी समझ में एक बड़ी जबरदस्त और मार्के की बात कही, ''लोग उसकी हँसी उड़ायेंगे। कहेंगे कि बातें तो बहुत बघारता है मगर कुछ करता नहीं।''

मेरी एक चतुर तर्क-शास्त्री की भांति कह उठती है, ''तो तुम्हें डर इस बात का है कि लोग क्या कहेंगे? सचमुच तुम इस लोकापवाद की अवहेलना करके क्या इससे ऊपर नहीं उठ सकते?''

निकोलस पूछता है, ''फिर भला, मैं क्या करूं?''

मेरी समझाती है, ''वही करो जिसे तुम अक्सर मनुष्य का कर्तव्य बताते थे। धैर्य धारण करो और प्रेम-पूर्वक व्यवहार करो।''

मेरी बोल रही थी कि इतने में नाच-पार्टी में आये हुए मेहमानों का संदेश लाकर वानिया कहता है, ''मां, वे लोग तुम्हें बुला रहे हैं।''

यह तो ऐन मार्के की चाल के समय शतरंज के खिलाड़ी को भोजन का बुलावा आ पहुंचा। मन-ही-मन झुंझलाकर मेरी ने कहा, ''कह दो, मैं अभी नहीं आ सकती। जाओ, जाओ।''

और आखिर मेरी वहां से उठी अपनी बात मनवाकर। निकोलस जब बिदा लेकर जाने ही लगा तो मेरी ने सर्व-विजयी दृढ़ता के साथ कहा, ''अगर तुम जाओगे तो मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगी और यदि साथ न जाऊंगी तो जिस ट्रेन से तुम जाओगे उसी के नीचे कट मरूंगी। जाने दो इन सबको जहन्नत में—मिसी और काटिया को भी। हाय भगवन्! यह तुमने कैसी मुसीबत कर दी!'' यह कहते-कहते वह सिसक-सिसककर रो उठी।

निकोलस ने द्वार पर जाकर कहा, ''पेट्रोविच, तुम जाओ। मैं नहीं जाऊंगा।'' यह कहकर उन्होंने अपना ओवरकोट उतार डाला।

आंसुओं की विजय हुई। इतनी बुद्धि, इतनी तर्कना, इतनी आध्यात्मिकता न जाने कहां विलीन हो गई!

स्त्री यदि अनुकूल हो तो स्वयं देवी बनकर मनुष्य को देवता बना सकती है; किंतु जिसकी स्त्री उसका साथ नहीं देती उसके दुर्भाग्य की बात न पूछिये। बड़े-से-बड़े मनुष्य को भी ऐसी हालत में अपने को संभालना महादुस्तर हो उठता है।

टाल्सटाय घर छोड़कर चले जाते हैं किंतु निकोलस शाहजादी चेरमशनोव्स के हाथों गोली का शिकार होता है। यही इन दोनों के जीवन में अंतर है।

निकोलस को इस बात का दु:ख है कि उसने जहां जिस काम में हाथ लगाया, वहीं उसे असफलता हुई; किंतु मरते समय उसे इस बात का संतोष है कि उसने जीवन के अर्थ को समझ लिया।

वासिली नाम का एक युवक पुरोहित है, जो निकोलस के संसर्ग में आने से, धीरे-धीरे उसके मत का हो जाता है। वासिली का जीवन उन असहयोगी भाइयों की याद दिलाता है जो असहयोग के तूफानी जमाने में भावुकतावश कालेज या कचहरी छोड़कर स्वतंत्रता के सैनिकों में आ मिले थे, किंतु जोश ठंडा होते ही अपनी कृति पर पछताते हुए फिर अपनी-अपनी जगह पर लौट गये। वासिली

को पीछे हटता देखकर निकोलस को बड़ा दु:ख होता है। उसे इस बात का अभिमान था कि घर के लोगों ने न सही, कम-से-कम वासिली ने तो उसके समान सत्य को समझा है और साहसपूर्वक उसका अनुसरण किया है, किंतु उसका यह मधुर सुख स्वप्न बड़े बेमौके टूटता है।

इस नाटक का एक और पात्र है, जिसके चरित्र का उल्लेख करने की आवश्यकता है। यह है युवक बोरिस। बोरिस शाहजादी नोरगशकोव्स का एकमात्र पुत्र है जिसे उसने बड़ी मुसीबतें सहकर पाला है। वह निकोलस के सिद्धांतों को पसंद करने लगता है और उनपर अमल करने को कटिबद्ध होता है। निकोलस की लड़की ल्यूबा का उससे प्रेम-संबंध है और दोनों का विवाह होना भी एक प्रकार निश्चित हो चुका है। निकोलस टाल्सटाय की ही तरह फौजी सेवा को घोर क्रूर हिंस्र कर्म मानता है। बोरिस भी इस बात को समझता है और इस काम से घृणा करने लगता है। लेकिन यही बोरिस कसौटी पर कसा जाता है और उस नवयुवक का अंत कितना ही दु:खद क्यों न हो; किन्तु प्रत्येक आत्मा के लिए यह परम संतोष की बात होगी कि बहादुर बोरिस उस भयंकर कसौटी पर खरा उतरा।

उस समय ऐसा नियम था कि नवयुवक सामंतों को कुछ समय के लिए सेना में भरती होकर सैनिक सेवा करना अनिवार्य था। बोरिस इससे इन्कार करता है। वह गिरफ्तार किया जाता है। अफसर उसे डराते हैं, धमकाते हैं, समझाते हैं पर वह दृढ़ रहता है। उसकी मां, ल्यूबा और स्वयं उसका गुरु निकोलस उससे पुनर्विचार का अनुरोध करते हैं, किंतु वह विचलित नहीं होता। बोरिस को पागल बताकर पागलखाने में भेजा जाता है। वहां उसे कैसी-कैसी यातनाएं भुगतनी पड़ती हैं! मगर एक भयंकर बात यह होती है कि उसकी प्रेमिका यानी ल्यूबा उसे प्यार करना छोड़ देती है और दूसरे के साथ विवाह करने को तैयार हो जाती है। पता नहीं, उस अभागे युवक ने इस हत्यारी घटना को किस प्रकार सहन किया, क्योंकि टाल्सटाय ने अंतिम अंक बिना पूरा किये ही इस नाटक को छोड़ दिया। इसमें संदेह नहीं कि बोरिस अंत तक दृढ़ रहता है और संभवत: बेचारा जेल में ही पड़ा-पड़ा मर जाता है। बोरिस ही वह पवित्र और उज्ज्वल बलिदान है जो निकोलस के सिद्धांतों की वेदी पर चढ़ाया गया।

आशा है, यह नाटक पाठकों को मनोरंजक और शिक्षाप्रद प्रतीत होगा।

इसमें एक आत्मा के ऊंचे उठने के उद्योग की कहानी है। इसको पढ़ने से हीन भावों की जागृति नहीं होती और इसीलिए यह मुख्य नाटक होते हुए भी बालकों और कुमारियों के हाथ में निस्संकोच दिया जा सकता है।

—क्षेमानंद राहत

पात्र

निकोलस आइवनोविच सरयान्तसव
मेरी सरयान्तसव—उसकी पत्नी
ल्यूबा
मिसी—उसकी कन्याएं
कातिया—उसकी छोटी बच्ची
स्ट्यूपा—उनका पुत्र
वानिया—छोटा पुत्र
अलेक्जेण्डरा मिकालोविच—ल्यूबा का भावी पति
मिट्रोफ़न—वानिया का शिक्षक
अलेक्जेण्डरा या अलीना—मेरी की बड़ी बहन
पीटर सेमीनोविच—उसका पति
लिसा—उनकी लड़की
शाहज़ादी चेरमशनोब्स
बोरिस—उसका पुत्र
टानिया—उसकी पुत्री
वासिली—निकोलस के पुरोहित का नाम
आहवन—एक किसान
आहवन की स्त्री
मालाशका—किसान की लड़की, जो अपने छोटे भाई को गोद में खिलाती है।
पीटर—किसान
गांव का एक पुलिसमैन
बाबा जिरैसियन—पादरी
एक बढ़ई

एक जनरल
एक कर्नल
एक संतरी
हेड डाक्टर
असिस्टेंट डाक्टर
अस्पताल में बीमार लोग
अलेक्जेण्डरा पिट्रोविच—एक गरीब शराबी आदमी

किसान, मर्द और औरतें, विद्यार्थी, महिलाएं, नाचनेवाले युवक-युवतियां, सैनिक, क्लर्क और सरकारी अफसर।

पहला अंक

पहला दृश्य

(मेरी एक चालीस वर्ष की खूबसूरत स्त्री, उसकी बहन अलेक्जेण्डरा, एक पैंतालीस वर्ष की बेवकूफ जिद्दी औरत और उसका पति पीटर, एक मोटा-सा आदमी, यह सब बैठे शराब पीते हैं।)

अलेक्जेण्डरा—अगर तुम मेरी बहन न होती, बल्कि मुझसे अपरिचित अजनवी होतीं और निकोलस तुम्हारा पति न होकर महज एक मुलाकाती होता तो मैं इन बातों को मौलिक और मजेदार समझती और शायद मैं उसे कुछ उत्साहित भी करती; लेकिन जब मैं देखती हूं कि तुम्हारा पति बेवकूफों-हां, बिल्कुल बेवकूफों का-सा काम कर रहा तब मुझसे चुप नहीं रहा जाता। इसीलिए इस संबंध में मेरे जो विचार हैं वह प्रकट कर देती हूं और तुम्हारे पति निकोलस से भी साफ-साफ कह दूंगी। मैं किसीसे डरती नहीं।

मेरी—सच है, बहन, तुम्हारा कहना सच है, मैं भी सबकुछ देखती हूं लेकिन कुछ बोलती नहीं—मैं उन बातों पर अधिक ध्यान नहीं देती।

अलेक्जेण्डरा—तुम अभी तो ध्यान नहीं देती हो, लेकिन मैं कहे देती हूं कि अगर यही हाल रहा तो तुम लोग भिखारी बन जाओगे।

पीटर—देखो तो सही! भिखारी बन जायंगे! इतनी आमदनी होते हुए?

अलेक्जेण्डरा—हां, भिखारी! लेकिन मेहरबानी करके तुम हमारी बातों में दखल न दो। मर्द चाहे कुछ भी करें तुम लोगों को तो वह ठीक मालूम देता है।

पीटर—ओफ! मैं यह नहीं जानता। मैं तो कह रहा था...

अलेक्जेण्डरा—मगर तुमको इसका जरा भी खयाल नहीं रहता कि तुम क्या कह रहे हो; क्योंकि तुम मर्द लोग जब कोई बेवकूफी करने लगते हो तो

फिर ठहरना तो जानते ही नहीं। मैं तो बस इतना ही कहती हूं कि अगर मैं तुम्हारी जगह होती तो ये बातें कभी न होने देती। उन्हें एकदम रोक देती। आखिर इसके मानी क्या हैं? उसके औरत है, बाल-बच्चे हैं, घर-बार है लेकिन इधर तो कोई ध्यान ही नहीं। न कोई काम है और न किसी चीज की देख-भाल है। सभी चीजें लुटाये देता है। जिसे जी में आया बस उठाकर दे दिया। मैं जानती हूं और खूब अच्छी तरह जानती हूं कि इसका क्या नतीजा होगा।

पीटर—(**मेरी से**) मगर मेरी, मुझे जरा बताओ तो सही यह नई हलचल क्या है? मैं आजादखयाली, आम तालीम और कौंसिल-बहिष्कार आदि बातों को तो समझ सकता हूं और समाजवाद, हड़ताल और श्रमजीवियों के प्रश्न को भी जानता हूं लेकिन यह सब क्या है? जरा बताओ तो सही।

मेरी—मगर कल उन्होंने आपको समझाया तो था।

पीटर—मैं मानता हूं कि मैं नहीं समझा। बाइबिल, पर्वत पर का उपदेश, आदि की बातें कह रहे थे और कहते थे कि गिरजों की कोई आवश्यकता नहीं है। मगर फिर कोई पूजा-पाठ किस तरह करेगा?

मेरी—हां, यही तो खराबी है। वह सब बातों को तो नष्ट कर देना चाहते हैं, मगर उनके स्थान पर कोई नई चीज हम लोगों को नहीं देते।

पीटर—इसका आरंभ किस तरह हुआ?

मेरी—पारसाल से उनकी बहन की मृत्यु के बाद ही यह सब आरंभ हुआ। वह अपनी बहन को बहुत प्यार करते थे। उसकी मौत से उनको बड़ा धक्का लगा। वह बहुत ही गमगीन हो गये और हमेशा मौत का ही जिक्र किया करते थे। और फिर, जैसाकि आप जानते हैं, बीमार पड़ गये। जब अच्छे हुए तब तो वह बिल्कुल ही बदल गये।

अलेक्जेण्डरा—मगर फिर भी फागुन के महीने में जब वह मुझसे मिलने मास्को आये थे तब तो वह अच्छे भले थे और खूब हँसी-खेल किया करते थे।

मेरी—यह तो ठीक, लेकिन फिर भी उनमें बहुत-कुछ परिवर्तन हो गया था।

पीटर—किस तरह का?

मेरी—वह घर-गिरिस्ती की बातों से बिल्कुल लापरवाह थे और एक तरह की

धुन उन्हें लगी रहती थी। वह कई दिनों तक लगातार बाइबिल पढ़ते रहते थे और रात को भी सोते न थे। वह रात को उठकर पढ़ा करते, कुछ उद्धरण लिखते, नोट्स लेते रहते और फिर उसके बाद से वह पादरियों तथा दरवेशों से मिलने जाने लगे और उनसे धर्म-संबंधी वार्तालाप करने लगे।

अलेक्जेण्डरा—और क्या वे व्रत, उपवास रखते और पूजादि करते थे?

मेरी—हमारे विवाह के समय से-याने बीस वर्ष पहले से लेकर-उस समय तक उन्होंने न कभी व्रत-उपवास आदि रखा और न कभी पूजापाठ किया; मगर उस समय एक बार, उन्होंने गुरुद्वारे में मंत्र लिया और उसके बाद ही उन्होंने निश्चय कर लिया कि न तो किसीको मंत्र ही लेना चाहिए और न गिरजाघर ही जाना चाहिए।

अलेक्जेण्डरा—यही तो मैं कहती हूं कि वह एक बात पर दृढ़ नहीं रहते।

मेरी—हां, एक महीने पहले वह कभी गिरजा जाने से नहीं चूकते थे और हरेक व्रत रखते थे, लेकिन उसके बाद ही अचानक उन्होंने यह निर्णय कर लिया कि ये सब अनावश्यक है। भला, ऐसे आदमी के साथ कोई क्या करे?

अलेक्जेण्डरा—मैंने उससे बात की थी और फिर उससे बात करूंगी।

पीटर—ठीक है, मगर यह मामला इतना जरूरी नहीं है।

अलेक्जेण्डरा—जरूरी नहीं? तुम्हारे लिए नहीं होगा, क्योंकि तुम मर्दों को तो धर्म-कर्म का कोई खयाल ही नहीं है।

पीटर—मेरी बात तो सुनो। मैं कहता हूं, यह कोई बात नहीं। बात यह है कि यदि वह गिरजा को अस्वीकार करते हैं तो फिर बाइबिल को किसलिए चाहते हैं।

मेरी—इसीलिए कि हम लोग बाइबिल और पर्वत पर के उपदेश के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करें और जो हमारे पास है वह सब दूसरों को दे डालें।

पीटर—अगर सबकुछ दे डालें तो फिर जिंदगी किस तरह बसर करें?

अलेक्जेण्डरा—और पर्वत पर के उपदेशों में उसे यह कहां मिला कि हम लोगों को नौकरों और साइसों से भी हाथ मिलाना चाहिए? उसमें है "नम्र लोग धन्य हैं" मगर उसमें हाथ मिलाने का तो कोई जिक्र ही नहीं है।

पीटर—आज वह शहर किसलिए गये हैं ?

मेरी—उन्होंने मुझसे कहा तो नहीं लेकिन मैं जानती हूं कि वह उन दरख्तों के मामले में गये हैं जो कुछ लोगों ने काट गिराये हैं। किसान लोग हमारे बाग से पेड़ों को काट कर ले जाते हैं।

पीटर—उस शीशमवाले बाग से ?

मेरी—हां, वे लोग शायद जेलखाने भेज दिये जायंगे और उन्हें दरख्तों की कीमत देनी होगी। उनके मुकदमे की आज पेशी है। यह बात उन्होंने मुझसे कही थी। इसीसे मुझे विश्वास है कि इसीलिए वह शहर गये हैं।

अलेक्जेण्डरा—वह उन्हें जाकर माफ कर देगा और कल को वे आकर पार्क में से पेड़ों को काट ले जावेंगे।

मेरी—और क्या! इसका यही नतीजा होगा। अब भी तो वे हमारे आमों को तोड़ ले जाते हैं और हरे-भरे अनाज के खेतों को रौंद डालते हैं। और वह हैं कि इनसब बातों को माफ कर देते हैं।

पीटर—बड़ी अजीब बात है।

अलेक्जेण्डरा—यही तो मैं भी कहती हूं कि ऐसा नहीं होने देना चाहिए और अगर यही सिलसिला जारी रहा तो सब बरबाद हो जायगा। मेरा तो खयाल है कि एक मां की हैसियत से तुम्हें इन बातों को रोकने की कोशिश करनी चाहिए।

मेरी—भला बताओ तो सही, मैं कर ही क्या सकती हूं ?

अलेक्जेण्डरा—करने को क्या है ? बस उसे रोक दो। उसे कह दो कि ऐसा नहीं हो सकता। तुम बाल-बच्चेदार आदमी हो। उनके लिए यह कैसी मिसाल है ?

मेरी—इसमें संदेह नहीं कि यह कष्टप्रद है लेकिन मैं उसे सह लेती हूं। और यह आशा लगाये बैठी हूं कि उनकी पहलेवाली तरंगों की तरह यह भी चली जायगी।

अलेक्जेण्डरा—यह तो ठीक है, लेकिन तुम जानती हो कि ईश्वर उनकी मदद करता है जो अपनी मदद आप करते हैं। तुमको चाहिए कि तुम उसे यह महसूस करा दो कि घर में अकेला वही नहीं है, और यह कि इस तरह गुजारा नहीं हो सकता।

मेरी—खराबी तो यही है कि अब उन्हें बच्चों का कुछ खयाल ही नहीं रहता है। और मुझे ही सबकुछ करना पड़ता है। और बड़े बच्चों के अलावा मेरी गोद में भी एक बच्चा है। इन बच्चों—लड़के-लड़कियों—की देखभाल भी करनी पड़ती है, पढ़ाने-लिखाने की भी व्यवस्था करनी पड़ती है, और यह सब मुझे अकेले ही करना पड़ता है। पहले तो वह बच्चों से बहुत प्रेम रखते थे और उनकी बड़ी खबरगिरी लेते थे; मगर अब तो, मालूम होता है, उन्हें कुछ परवा ही नहीं है। कल मैंने उनसे कहा कि वानिया ठीक तरह से नहीं पढ़ता है और इम्तिहान में पास नहीं होगा तो वह बोले उसके लिए अच्छा तो यही है कि वह एकदम स्कूल जाना छोड़ दे।

पीटर—फिर कहां जाय?

मेरी—कहीं नहीं! यही तो बड़ी भयानक बात है। हम लोग जो करते हैं उसीको वह बुरा और गलत बताते हैं। लेकिन यह नहीं कहते कि ठीक और सही बात कौनसी है?

पीटर—यही तो बुरी बात है।

अलेक्जेण्डरा—इसमें बुराई क्या है? यह तो तुम लोगों का मामूल है कि सब चीजों को बुरा बताना और खुद कोई काम न करना।

मेरी—स्टयूपा ने विश्वविद्यालय की शिक्षा समाप्त कर दी है और उसे अब किसी काम में डालना चाहिए। लेकिन उसके पिता इस बारे में कुछ बोलते ही नहीं। यह सिविल सर्विस में दाखिल होना चाहता था, लेकिन उसके पिता कहते हैं कि यह ठीक नहीं है। तब उसने फौजी विभाग में जाना चाहा, लेकिन उन्होंने यह भी नापसंद किया। तब लड़के ने पिता से पूछा "फिर मैं क्या करूं? कहीं न जाकर हल चलाऊं?" बाप ने कहा—"हल क्यों नहीं जोतना चाहिए? सरकारी नौकरी से तो यह हजार दर्जे बेहतर है।" भला वह क्या करे? मेरे पास आया और सलाह पूछने लगा, और मुझे ही यह सबकुछ तय करना पड़ता है। लेकिन फिर भी सब अधिकार तो उन्हींके हाथ में हैं।

अलेक्जेण्डरा—तुम्हें साफ-साफ उनसे यह सब बातें कह देनी चाहिए।

मेरी—मुझे यह करना होगा। उनसे यह सब कह ही देना पड़ेगा।

अलेक्जेण्डरा—उनसे स्पष्ट कह दो कि इस तरह गुजारा नहीं हो सकता। मैं

अपना काम करती हूं और तुम्हें अपना कर्तव्य पूरा करना चाहिए। और इसपर अगर वह राजी न हो तो उसे चाहिए कि वह सब अधिकार तुम्हें सौंपदे।

मेरी—लेकिन यह तो बहुत ही अरुचिकर बात है।

अलेक्जेण्डरा—अगर तुम कहो तो मैं उससे सब बातें कह दूं।

(एक घबराये हुए युवक पुरोहित का प्रवेश। उसके हाथ में एक किताब है। सबसे हाथ मिलाता है।)

पुरोहित—मैं निकोलससाहब से मिलने आया हूं। वास्तव में मैं एक किताब लौटाने आया हूं।

मेरी—वह शहर गये हैं, मगर अब आते ही होंगे।

अलेक्जेण्डरा—आप कौनसी किताब लौटाना चाहते हैं?

पुरोहित—मि. रेनन का लिखा हुआ क्राइस्ट का जीवन-चरित्र है।

पीटर—ओह गजब! आप लोग कैसी किताबें पढ़ते हैं?

पुरोहित—**(कुछ विचलित होता है और सिगरेट जलाता है)** निकोलससाहब ने मुझे पढ़ने के लिए यह किताब दी थी।

अलेक्जेण्डरा—**(हिकारत के साथ)** निकोलस ने दी! तो क्या तुम निकोलस और मि. रेनन से सहमत हो?

पुरोहित—जी नहीं, अगर सचमुच सहमत होता तो वास्तव में गिरजा का सेवक न रहता।

अलेक्जेण्डरा—लेकिन वास्तव में यदि आप गिरजा के वफादार सेवक हैं तो निकोलस को रास्ते पर क्यों नहीं लाते?

पुरोहित—सच्ची बात तो यह है कि इस विषय में हरेक आदमी अपनी जुदा राय रखता है और निकोलससाहब के विचारों में वस्तुतः बहुत-कुछ सच्चाई है। सिर्फ वह एक खास-गिरजे के--विषय में भ्रम में पड़े हुए हैं।

अलेक्जेण्डरा—**(हिकारत से)** निकोलस के ऐसे कौन-कौन-से विचार हैं जिनमें बहुत-कुछ सच्चाई है। क्या 'पर्वत पर का उपदेश' यह आज्ञा देता है कि हम अपनी सारी जायदाद दूसरे लोगों को दे डालें और अपने कुटुम्ब के लोगों को भिखारी बना दें?

पुरोहित—वास्तव में गिरजा पारिवारिक जीवन को विहित बतलाता है और

गिरजा के पूज्यपाद महंतों ने परिवार के लिए आशीर्वाद भी दिया है, लेकिन उच्चतम समुन्नति का, आदर्श-मर्यादा पुरुषोत्तम का जीवन इस बात को चाहता है कि सांसारिक लाभ और पार्थिव ऐश्वर्य का त्याग किया जाय।

अलेक्जेण्डरा—निस्संदेह साधु-संतों ने तो ऐसा ही किया; किंतु मैं समझती हूं कि साधारण आदमियों को साधारण रूप से ही काम करना चाहिए जैसाकि सब नेक ईसाइयों को शोभा देता है।

पुरोहित—कोई यह नहीं कह सकता कि उसे क्या नहीं करना होगा।

अलेक्जेण्डरा—आपकी शादी हो गई है?

पुरोहित—जीहां।

अलेक्जेण्डरा—आपके कोई बच्चे भी हैं?

पुरोहित—दो।

अलेक्जेण्डरा—तब आप सांसारिक लाभ और पार्थिव ऐश्वर्य को त्याग क्यों नहीं देते और क्यों सिगरेट पीते फिरते हो?

पुरोहित—यह मेरी कमजोरी है। सच पूछिए तो मेरी नालायकी है।

अलेक्जेण्डरा—हां, मैं समझी! आप उसको राह पर लाने के बजाय खुद उसके विचारों का समर्थन करते हैं। लेकिन मैं कहे देती हूं यह बात ठीक नहीं है। (**दाई का प्रवेश**)

दाई—बच्चा रो रहा है। मेहरबानी करके उसे दूध पिला दीजिए।

मेरी—चलो, यह चली। (उठकर जाती है)

अलेक्जेण्डरा—मुझे अपनी बहन को देखकर बड़ा दुःख होता है। बेचारी को कितनी परेशानी है। सात बालक हैं। उनमें एक अभी दूध पीता है। तिसपर यह नये-नये चोंचले। मुझे तो साफ मालूम होता है कि उसके दिमाग में कुछ खलल है। (पुरोहित से) हां, जरा यह तो बतलाइए कि आप लोगों ने यह कौन-सा नया मत निकाला है?

पुरोहित—वास्तव में मुझे मालूम नहीं...

अलेक्जेण्डरा—अजी बातें न बनाइए। आप अच्छी तरह जानते हैं कि मैं क्या पूछ रही हूं।

पुरोहित—मगर सुनिए तो...

अलेक्जेण्डरा—मैं पूछती हूं कि यह कौनसा मत है जो हरेक किसान के साथ हाथ मिलाने की आज्ञा देता है और कहता है कि उनको दरख्त करने ले जाने दो, उनको शराब के लिए पैसे भी दो और अपने परिवार को त्याग दो?

पुरोहित—यह मैं नहीं जानता...

अलेक्जेण्डरा—वह कहता है कि यही ईसाई धर्म है। आप यूनानी गिरजे के पुरोहित हैं और इसीलिए आपको मालूम होना चाहिए और बताना चाहिए कि क्या वास्तव में ईसाई धर्म डकैती को उत्साहित करता है?

पुरोहित—लेकिन मैं...

अलेक्जेण्डरा—और नहीं तो आप पुरोहित क्यों कहलाते हैं। लंबे बाल क्यों रखते हैं और चोंगा क्यों पहनते हैं?

पुरोहित—लेकिन यह नहीं कहा है कि...

अलेक्जेण्डरा—नहीं कहा है, बेशक! पर मैं पूछती हूं, क्यों? मुझसे उसने कहा था कि बाइबिल में लिखा है "जो तुमसे मांगे उसे दे दो।" लेकिन इसका मतलब क्या है?

पुरोहित—मैं तो समझता हूं कि इसका मतलब बिल्कुल साफ ही है।

अलेक्जेण्डरा—लेकिन मैं समझती हूं कि इसका मतलब स्पष्ट नहीं है। हमें हमेशा यह सिखाया गया है कि प्रत्येक मनुष्य का स्थान ईश्वर ने नियत किया है।

पुरोहित—बेशक, लेकिन फिर भी।

अलेक्जेण्डरा—ठीक है, यह तो बिल्कुल वैसा ही मामला है जैसाकि मैंने सुना था। आप उसका पक्ष लेते हैं। और यह बिल्कुल अनुचित है। यह मैं आपके मुंह पर कहती हूं। अगर कोई नौजवान स्कूल का मास्टर या कोई छोटा छोकरा उसकी हां-में-हां मिलाता तो यही बुरा था लेकिन आपको एक पुरोहित की हैसियत से यह ध्यान रखना चाहिए कि आपके ऊपर कितनी बड़ी जिम्मेदारी है।

पुरोहित—मैं कोशिश करता हूं...

अलेक्जेण्डरा—जब वह गिरजा नहीं जाता और जंत्रमंत्र में विश्वास नहीं रखता तो फिर धर्म रहा कहां? और उसको होश में लाने के बजाय उसके

साथ आप भी रेनन की पुस्तकें पढ़ते हैं और बाइबिल का मनमाना अर्थ लगाते हैं।

पुरोहित—(**उत्तेजित होकर**) मैं उत्तर नहीं दे सकता। सच बात तो यह है कि मैं गड़बड़ा गया हूं और अब मैं कुछ न कहूंगा।

अलेक्जेण्डरा—अगर मैं बिशप होती तो तुम लोगों को रेनन पढ़ने का और सिगरेट पीने का मजा चखाती।

पीटर—मगर, ईश्वर के लिए ठहरो। भला तुम्हें क्या हक है?

अलेक्जेण्डरा—मेहरबानी करके आप मुझे सिखाइए मत। मुझे विश्वास है कि आप–हमारे पूज्य पुरोहित–मुझसे नाराज नहीं हैं। क्या हुआ अगर मैंने साफ-साफ बातें कीं। यह तो और भी बुरा होता अगर मैं गुस्से को दिल ही में रहने देती। ठीक है न?

पुरोहित—क्षमा कीजिएगा, यदि मैं समुचित रूप से अपने विचारों को प्रकट न कर सका होऊं। (**खामोशी, ल्यूबा और लिसा का प्रवेश—ल्यूबा मेरी की एक 20 वर्ष की खूबसूरत और फुर्तीली लड़की, लिसा अलेक्जेण्डरा की लड़की। उम्र में वह ल्यूबा से कुछ बड़ी है। उनके हाथ में रुमाल है और फूल लेने के लिए छोटी-छोटी डलियां भी लिये हुए हैं। दोनों अलेक्जेण्डरा, पीटर और पुरोहित को प्रणाम करती है।**)

ल्यूबा—मां कहां है?

अलेक्जेण्डरा—अभी बच्चे के पास गई है।

पीटर—देखो बहुत-से अच्छे-अच्छे और सुन्दर फूल लाना। आज सवेरे एक मालिन की लड़की अच्छे-अच्छे सफेद फूल चुनकर लाई थी। मैं खुद भी तुम्हारे साथ चलता, मगर गर्मी बहुत है।

लिसा—चलिए चलिए पिताजी, आप भी चलिए।

अलेक्जेण्डरा—हां, जाओ, तुम बहुत मोटे हो रहे हो।

पीटर—अच्छा, चलता हूं, मगर पहले सिगरेट लेता आऊं।

(**जाता है**)

अलेक्जेण्डरा—सब बच्चे कहां हैं?

ल्यूबा—स्ट्यूपा तो साईकिल पर स्टेशन गया है क्योंकि उसके मास्टर पिताजी

के साथ शहर गये हैं, छोटे बच्चे गेंद खेल रहे हैं और वानिया बाहर बरामदे में कुत्तों के साथ खेलता है।

अलेक्जेण्डरा—हां, तो स्ट्यूपा ने कुछ फैसला किया है ?

ल्यूबा—हां, वह "अश्व-रक्षकों" में भरती होने के लिए खुद ही अर्जी देने गया था। कल वह पिताजी से बहुत बिगड़ पड़ा था।

अलेक्जेण्डरा—इसमें शक नहीं कि बेचारा बड़ी मुश्किल में है। मानवी सहनशीलता की भी आखिर एक हद है। अब वह सयाना हुआ है। रोजी का सिलसिला देखना है और उससे कहा जाता है कि हल जोतो।

ल्यूबा—पिताजी ने यह तो नहीं कहा था; उन्होंने तो कहा था...

अलेक्जेण्डरा—कोई हर्ज नहीं। फिर भी स्ट्यूपा को अब जीवन में श्रीगणेश करना ही होगा और जिस बात को वह चाहता है उसीमें आपत्ति उठाई जाती है। लेकिन वह तो यहीं आ रहा है।

(पुरोहित एक तरफ हटकर, किताब खोलकर पढ़ने लगता है। स्ट्यूपा का बरामदे की तरफ साईकिल पर प्रवेश)

अलेक्जेण्डरा—तुम्हारी उमर बहुत बड़ी है। हम लोग अभी तुम्हारी ही बातें कर रहे थे कि इतने में तुम आ गये। ल्यूबा कहती है कि कल तुम अपने पिताजी से बिगड़ पड़े थे।

स्ट्यूपा—बिल्कुल नहीं, कोई ऐसी बात नहीं हुई। उन्होंने अपने विचार प्रकट किये और मैंने अपने। अगर हमारे विचारों में अंतर और फेर है तो इसमें मेरा दोष नहीं है; ल्यूबा को तो आप जानती ही हैं, वह समझती तो खाक नहीं, लेकिन दखल हर बात में देती है।

अलेक्जेण्डरा—अच्छा तो तुमने क्या फैसला किया है ?

स्ट्यूपा—पता नहीं, पिताजी ने क्या निश्चय किया। मुझे भय है कि उन्होंने अभी तक इसका निश्चय नहीं किया है; लेकिन मैंने "अश्व-रक्षकों" में सम्मिलित होने का फैसला कर लिया है। हमारे घर में तो हरेक बात पर कोई-न-कोई खास ऐतराज किया जाता है। लेकिन यह तो बिल्कुल सीधी-सी बात है। मेरी पढ़ाई समाप्त हो गई है; इसलिए अब कुछ-न-कुछ काम तो करना ही होगा। फौज में भरती होना और निम्नश्रेणी के शराबी अफसरों के साथ रहना अरुचिकर होगा। इसीलिए मैं "अश्व-रक्षकों" में भरती हो

रहा हूं जहां मेरे कुछ दोस्त भी हैं।

अलेक्जेण्डरा—ठीक है, लेकिन तुम्हारे बाप इस बात पर राजी क्यों नहीं होते?

स्ट्यूपा—मौसी! उनका जिक्र करने से क्या फायदा? उनको तो एक तरह की धुन लगी है। उनको अपनी बातों के अलावा कुछ दिखाई ही नहीं पड़ता। वह कहते हैं कि फौजी मुलाजमात सबसे नीच वृत्ति है। इसलिए उसमें किसीको न जाना चाहिए, और इसीलिए वह मुझे रुपया नहीं देते।

लिसा—नहीं, स्ट्यूपा! उन्होंने यह नहीं कहा। तुम्हें याद है, मैं उस वक्त वहां मौजूद थी। वह कहते थे कि जब जरूरत पड़े और तुम बुलाये जाओ तब लाचारी की हालत में फौजी खिदमत अंजाम दे सकते हो। लेकिन इस तरह खुद-बखुद अपनी इच्छा से भरती होना ठीक नहीं है।

स्ट्यूपा—लेकिन नौकरी करने मैं जाता हूं, खुद वह तो जाते नहीं? वह खुद भी तो फौज में रहे थे।

लिसा—मगर उन्होंने यह तो नहीं कहा कि वह रुपया नहीं देंगे; बल्कि उन्होंने कहा था कि वह एक ऐसे काम में भाग नहीं ले सकते जोकि उनके विचारों के विरुद्ध है।

स्ट्यूपा—इसमें विचार और विश्वास का कोई काम नहीं है। कोई सेवा करना चाहता है—बस यही काफी है।

लिसा—मैंने जो कुछ सुना वह कह दिया।

स्ट्यूपा—मुझे मालूम है कि तुम हमेशा पिताजी से सहमत रहती हो। आप जानती हैं, मौसी, लिसा हर बात में पिताजी की तरफदारी करती हैं।

लिसा—जो बात सच्ची है...

अलेक्जेण्डरा—मैं जानती हूं कि लिसा हर तरह की बेवकूफी में भाग लेने को तैयार हो जाती है। बेवकूफी की तो उसे बू आती है और वह उसे दूर से ही सूंघकर पहचान लेती है।

(लाल कमीज पहने हुए एक हाथ में तार लिये वानिया का दौड़ते हुए प्रवेश। उसके पीछे कुत्ते भी आते हैं।)

वानिया—(**ल्यूबा से**) बताओ देखें, कौन आता है?

ल्यूबा—बताने से क्या फायदा? लाओ तार मुझे दो।

(तार लेने को वानिया की तरफ हाथ फैलाती है; वह तार नहीं देता है।)

वानिया—मैं तुम्हें यह तार नहीं दूंगा और न यही बतलाऊंगा किसने भेजा है। हां, यह एक ऐसे आदमी के पास से आया है, जिससे तुम शरमाती हो।

ल्यूबा—वाहियात! किसने भेजा है? मौसी, तार कहां से आया है?

अलेक्जेण्डरा—चेरमशनोब्स के पास से।

ल्यूबा—ओह!

वानिया—देखो देखो, तुम शरमाती क्यों हो?

ल्यूबा—मौसी, जरा तार देखूं? (**पढ़ती है**) "हम तीनों जने डाकगाड़ी से आ रहे हैं–चेरमशनोब्स।" इसके मानी हैं शाहजादी साहबा, बोरिस और टानिया; ठीक है, बड़ी खुशी की बात है।

वानिया—अहा तुम्हें खुशी हो रही है; स्ट्यूपा, देखो तो वह कितनी शरमा रही है।

स्ट्यूपा—इतना बस है–बार-बार दिक करना ठीक नहीं।

वानिया—तुम टानिया को चाहते हो न? तुम लोगों को लाटरी डालनी होगी; क्योंकि दो आदमी एक दूसरे की बहन को नहीं ब्याह सकते।

स्ट्यूपा—चुप रहो, बको मत, कितनी बार तुम्हें मना किया?

लिसा—यदि वे डाकगाड़ी से ही आते हैं तब तो वे थोड़ी देर में आनेवाले हैं।

ल्यूबा—यह ठीक है, तब हम फूल चुनने को नहीं जा सकते।

(पीटर सिगरेट लिये हुए आता है)

ल्यूबा—मौसाजी, अब हम लोग नहीं जायंगे।

पीटर—क्यों?

ल्यूबा—चेरमशनोब्स आ रहे हैं। अच्छा है, आओ हम लोग तबतक टेनिस खेलें। क्यों स्ट्यूपा! तुम भी खेलोगे न?

स्ट्यूपा—हां तैयार हूं।

ल्यूबा—वानिया और मैं एक तरफ और तुम और लिसा दूसरी तरफ–क्यों राजी हो न? अच्छा तो मैं गेंद ले जाऊं और छोकरों को भी बुला लाऊं।

(जाती है)

पीटर—तो आखिर मुझे यहीं ठहरना पड़ा।

पुरोहित—(**जाना चाहता है**) मेरा आदाब-अर्ज है।

अलेक्जेण्डरा—नहीं पुरोहितजी, जरा ठहरिए, मैं अभी आपसे बात करना चाहती हूं और दूसरे निकोलस भी अब आता होगा।

पुरोहित—(**बैठता है और सिगरेट जलाता है**) शायद उन्हें आने में देर लगे।

अलेक्जेण्डरा—वह देखिए, कोई आ रहा है। मैं समझती हूं निकोलस ही है।

पीटर—चेरमशनोव खानदान के लोग हैं। कहीं गालिटजन की लड़की तो नहीं है।

अलेक्जेण्डरा—हां-हां, यह तो वही चेरमशनोव ही है जो अपनी फूफी के साथ रोम में रहता था।

पीटर—ओहो! मुझे उनसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता होगी। मैं उनसे उस समय के बाद नहीं मिला हूं जब हम रोम में साथ-साथ गजलें गाया करते थे। वह बहुत अच्छा गाती थी। उसके दो बच्चे भी हैं न?

अलेक्जेण्डरा—हां, वे दोनों बच्चे भी आ रहे हैं।

पीटर—मुझे नहीं मालूम था कि सरियन्सव खानदान के साथ उन लोगों की इतनी घनिष्ठता है।

अलेक्जेण्डरा—घनिष्ठता तो नहीं लेकिन पारसाल वे लोग बाहर परदेश में कहीं एक साथ ठहरे थे। शाहजादी ने ल्यूबा को अपने बेटे के लिए पसंद किया है। वह होशियार है, जानती है, कि इतना दहेज और कहां मिलेगा?

पीटर—लेकिन चेरमशेनव खानदान खुद भी तो अमीर था।

अलेक्जेण्डरा—अमीर था, किसी जमाने में। शाहजादा अब भी जिंदा है मगर उसने सबकुछ बरबाद कर दिया है। वह शराबी है, और बिलकुल तबाह हो गया है। शाहजादी ने बादशाह के पास अर्जी भेजी, अपने पति को छोड़ दिया और इस तरह से वह थोड़ा-बहुत बचा सकी है। लेकिन उसने अपने बच्चों को शिक्षा अच्छी दी है, यह तो मानना पड़ेगा। लड़की गाने में निपुण है। लड़का सुन्दर तथा होनहार है और उसने विश्वविद्यालय की शिक्षा भी समाप्त कर ली है। मगर मैं समझती हूं कि मेरी बहुत खुश नहीं है। इसी वक्त मेहमान का आना जरा कष्ट-प्रद है। यह लो निकोलस भी आ गया।

(**निकोलस का प्रवेश**)

निकोलस—चित्त तो प्रसन्न है, अलीना (अलेक्जेण्डरा का छोटा नाम) और

पीटरसाहब आपका मिजाज तो मुबारक! **(पुरोहित को देखकर)** ओहो! वासिली साहब हैं।

(सबसे हाथ मिलाता है।)

अलेक्जेण्डरा—इसमें अभी कुछ काफी और बची है, क्या एक प्याले में दूं? जरा ठंडी हो गई है मगर अभी गरम हुई जाती है। **(घंटी बजाती है)**

निकोलस—नहीं, कोई जरूरत नहीं, मैं कुछ खा-पी चुका हूं। मेरी कहां है?

अलेक्जेण्डरा—बच्चे को दूध पिलाने गई है।

निकोलस—वह अच्छी तरह तो है?

अलेक्जेण्डरा—हां अच्छी तरह है। तुम अपना काम कर आये?

निकोलस—कर आया। देखो, अगर कुछ चाय या काफी बची हो तो मुझे दीजिए। (**पुरोहित से**) अच्छा आप पुस्तक वापस लाये हैं? आपने उसे पढ़ लिया? घर आते वक्त रास्ते में मैं आपके ही विषय में सोच रहा था।

(एक नौकर प्रवेश करता है और सबको सलाम करता है। निकोलस उससे हाथ मिलाता है और अलेक्जेण्डरा अपनी आंख से पति को इशारा करती है।)

अलेक्जेण्डरा—जरा इस सामवार[1] को गरम कर लो।

निकोलस—इसकी जरूरत नहीं। वास्तव में तो वह मुझे नहीं चाहिए; मैं जैसी है वैसी ही पी लूंगा।

(मिसी अपने पिता को देखकर गेंद खेलना छोड़ दौड़ती हुई आती है और उससे लिपट जाती है।)

मिसी—पिताजी, हमारे साथ चलो।

निकोलस—**(पीठ पर हाथ फेरते हुए)** अभी चलता हूं। जरा मैं कुछ खालूं। तुम चलो, खेलो, मैं जल्दी आऊंगा।

(मिसी का प्रस्थान) (निकोलस मेज के पास बैठ जाता है और चाव के साथ खाता-पीता है।)

अलेक्जेण्डरा—हाँ तो क्या, उन्हें सजा हो गई?

निकोलस—हां, सजा हो गई। उन्होंने खुद जुर्म इकबाल कर लिया। **(पुरोहित**

1. केटली की तरह का तांबे का बर्तन जो चाय बनाने के काम आता है।

से) मैंने समझा था कि आपको रेनन के विचारों पर पूरा यकीन नहीं आयगा।

अलेक्जेण्डरा—और तुमने फैसले को पसंद नहीं किया?

निकोलस—(झुंझलाकर) बेशक, मैं उसे पसंद नहीं करता। आपके सामने मुख्य प्रश्न ईसा के देवत्व या क्रिश्चियानिटी के इतिहास का नहीं बल्कि गिरजे का है...

अलेक्जेण्डरा—तो क्या हुआ; उन्होंने तो अपने जुर्म का इकबाल किया और तुमने कहा कि नहीं यह ठीक नहीं है, तो उन्होंने लकड़ी चुराई नहीं बल्कि उसे ले लिया?

निकोलस—(पुरोहित से बोलते-बोलते दृढ़ता के साथ अलेक्जेण्डरा की ओर घूमकर) प्यारी आलीना, तुम इस तरह की चुटकियां लेकर मेरे दिल में सूइयां क्यों चुभाती हो?

अलेक्जेण्डरा—बिल्कुल नहीं...

निकोलस—अगर आप वास्तव में जानना चाहती हैं कि मैं किसानों को, सिर्फ उस लकड़ी के लिए, जिसकी उन्हें जरूरत थी और वे काट लाये थे, फंसाकर क्यों तकलीफ नहीं दे सकता...

अलेक्जेण्डरा—मैं समझती हूं कि शायद उन्हें इस सामवार की भी जरूरत होगी।

निकोलस—अगर आप जानना चाहती हैं कि मैं क्यों किसानों को महज इसी बात के लिए कि उन्होंने उस जंगल से दस दरख्त काट डाले, जिसे लोग मेरा कहते हैं, कैद में डालने के लिए और उनकी जिंदगी बरबाद करने के लिए राजी नहीं होता...

अलेक्जेण्डरा—सब आदमी ऐसा कहते हैं।

पीटर—यह लो, फिर वही बहस करने लगीं।

निकोलस—यदि थोड़ी देर के लिए मान भी लूं, जैसाकि मैं नहीं कर सकता, कि वह जंगल मेरा है, तो हम लोगों के पास 3000 एकड़ जमीन है जिसमें फी एकड़ 150 दरख्त होंगे। सब मिलाकर 450000 दरख्त हुए–ठीक है न? अब देखो कि उन्होंने उसमें से 10 पेड़ काट डाले–यानी 45 हजारवां हिस्सा। जरा सोचिए तो सही कि क्या यह मुनासिब है और क्या वास्तव में

कोई मनुष्य इस बात को पसंद करेगा कि इस छोटी-सी बात के लिए बेचारे एक गरीब आदमी को उसके परिवार से बेहरमी के साथ जुदा करके जेल में डाल दिया जाय?

स्टयूपा—लेकिन अगर आप इस 45 हजारवें हिस्से को सुरक्षित नहीं रखेंगे तो बाकी 44990 दरख्त भी शीघ्र ही काट डाले जायंगे।

निकोलस—लेकिन यह तो मैंने मौसी को जवाब देने के लिए कहा था। वास्तव में तो मेरा इस जंगल पर कोई हक नहीं है। जमीन हरेक आदमी की है या यों कहिए कि वह किसी की मिलकियत नहीं है। हमने इस जंगल के लिए भी कोई मेहनत नहीं की।

स्टयूपा—नहीं, लेकिन आपने रुपया बचाया और इस जंगल की रखवाली की जो?

निकोलस—मैंने रुपया कहां से बचाया, और वह बचत कैसे हुई? इसके अलावा मैंने जंगल की रखवाली नहीं की। लेकिन यह एक ऐसी बात है जो कि बहस के जरिये साबित नहीं की जा सकती। उस शख्स को जो कि अपनी हरकत से खुद शरमिंदा नहीं होता, जबकि वह किसी दूसरे आदमी को मारता है...

स्टयूपा—लेकिन यहां तो कोई किसीको मारता नहीं।

निकोलस—लेकिन जिस तरह एक आदमी खुद कोई काम न करके दूसरों से अपनी गुलामी कराने में शर्म महसूस नहीं करता और कोई शख्स इस बात को उसके सामने साबित नहीं कर सकता कि उसे अपनी हरकत पर लज्जित होना चाहिए; ठीक इसी तरह दूसरा आदमी इस बारे में हमारी भूल साबित करके हमें लज्जित नहीं कर सकता। और तुमने कॉलेज में जो अर्थशास्त्र पढ़ा है उसका एकमात्र उद्देश्य यही है कि वह यह बात साबित कर दिखावे कि हम लोग जिस स्थिति में अपना जीवन व्यतीत करते हैं वह ठीक है।

स्टयूपा—लेकिन, इसके विपरीत, साइंस हर तरह के बहमों को दूर करता है।

निकोलस—खैर, ये सब बातें जरूरी नहीं हैं। जरूरी यह है कि अगर मैं यकीम (**किसान का नाम**) की जगह होता तो मैं भी वैसा ही करता है जैसाकि उसने किया है। और अगर मुझे कैद हो जाती तो मैं न जाने क्या कर

बैठता? और चूंकि मैं दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहता हूं जैसाकि मैं चाहता हूं कि वे मेरे साथ करें—इसलिए मैं उसे सजा नहीं दे सकता बल्कि जहांतक होगा बचाने की ही कोशिश करूंगा।

पीटर—मगर इस तरह से तो कोई आदमी किसी भी चीज को अपने पास नहीं रख सकता।

(अलेक्जेण्डरा और स्टयूपा दोनों एक साथ बोलते हैं)

अलेक्जेण्डरा—तब तो काम करने के बनिस्बत चोरी करना कहीं अधिक फायदेमंद है।

स्टयूपा—आप किसी की दलीलों का उत्तर देते ही नहीं। मैं कहता हूं, जो आदमी रुपया बचाता है उसे उपनी बचत से लाभ उठाने का अधिकार है।

निकोलस—(**हँसकर**) समझ में नहीं आता कि किसकी बात का मैं जवाब दूं। (**पीटर से**) हां, यह सच है कि किसी को कोई भी चीज अपने पास नहीं रखनी चाहिए।

अलेक्जेण्डरा—लेकिन कोई चीज अपने पास न रखी जाय इसका अर्थ तो यही होता है कि कोई भी आदमी कपड़ा-लत्ता यहांतक कि रोटी का टुकड़ा भी अपने पास नहीं रख सकता–सब दूसरों को दे डालना चाहिए और तब तो मनुष्यों का जीवन भी असंभव हो जायगा।

निकोलस—लेकिन जीवन-निर्वाह असंभव तो यह होना चाहिए जैसी कि हम अपनी जिंदगी बसर करते हैं।

स्टयूपा—दूसरे शब्दों में इसका मतलब यह हुआ कि हम लोगों को मर जाना चाहिए और इसलिए यह शिक्षा जीवन के काम की नहीं...

निकोलस—नहीं, लेकिन शिक्षा इसलिए दी जाती है कि मनुष्य जीवित रहना सीख सके। हां; यह भी ठीक है कि हमको सबकुछ दे डालना चाहिए न केवल जंगल ही, जिसका हम कोई उपयोग नहीं करते और शायद ही कभी जिसकी देखभाल करते हों, बल्कि अपने कपड़े और खाना तक दे डालना चाहिए।

अलेक्जेण्डरा—और बच्चों का खाना भी?

निकोलस—हां-हां, बच्चों का भी! और सिर्फ खाना ही नहीं बल्कि खुद अपने-आपको भी। यही तो ईसा की शिक्षा है। हमें अपने पूरे बल के साथ

दूसरों के लिए अपने को कुर्बान करने की—संपूर्ण आत्मत्याग करने की चेष्टा करनी चाहिए।

स्टयूपा—इसके मानी होते हैं मरने के लिए।

निकोलस—हां, यदि तुम अपने मित्रों के लिए जान तक निसार कर दो तो यह भी तुम्हारे और तुम्हारे दोस्तों के लिए अच्छा होगा। लेकिन असली बात तो यह है कि मनुष्य केवल आत्मा ही नहीं है, बल्कि शरीर-स्थित आत्मा है। मांस-मज्जा का बना हुआ यह शरीर जहां उससे केवल अपने ही लिए जीने का अनुरोध करता है वहां आत्मा उससे ईश्वर के लिए तथा परोपकारमय जीवन व्यतीत करने के लिए जीने का अनुरोध करती है। हमारा जीवन पाशविक ही नहीं है बल्कि पाशविक और आत्मिक दोनों के बीच में है। सो वह जितना ही ईश्वर के निकट होगा उतना ही अधिक अच्छा है। हमारी पशु-प्रवृत्ति तो शरीर की रखवाली करने से चूकने की नहीं।

स्टयूपा—तब बीच ही का रास्ता क्यों पसंद करें—अधर में क्यों रहें—अगर ऐसा ही करना उचित है तो सभी चीजें देकर मर क्यों न जाना चाहिए।

निकोलस—यह तो बहुत ही अच्छा और शानदार होगा। जरा करके देखो। और फिर तो यह तुम्हारे लिए और दूसरों के लिए—सभी के लिए—श्रेयस्कर सिद्ध होगा।

अलेक्जेण्डरा—नहीं, यह ठीक नहीं। इसमें न तो स्पष्टता है, न सरलता। इसमें तो हद से ज्यादा बारीकी है।

निकोलस—इसके लिए तो अब और मैं कुछ नहीं कर सकता। और यह बात दलील देकर साबित नहीं की जा सकती। मगर जो कुछ हो, अभी तो इतना ही काफी है।

स्टयूपा—हां, बिल्कुल ठीक है। मेरी भी समझ में यह बात नहीं आती है।

(जाता है)

निकोलस—**(पुरोहित की तरफ घूमकर)** कहिए, किताब का आपके ऊपर कैसा असर पड़ा ?

पुरोहित—**(उत्तेजित होकर)** किस तरह बताऊं ? सुनिए, पुस्तक का ऐतिहासिक भाग लिखा तो ठीक-ठीक गया है, पर न तो उससे पूरा यकीन ही होता और न, कहना चाहिए, वह पूरी तरह विश्वसनीय ही है। क्योंकि वास्तव में

उसके लिए पर्याप्त सामग्री ही नहीं मिलती। रहा ईसा के देवत्व और अदेवत्व का प्रश्न; सो यह इतिहास से कभी हल नहीं किया जा सकता। उसके लिए तो एक ही अकाट्य प्रमाण है।

(इसी बातचीत के बीच में पहले तो स्त्रियां और फिर पीटर बाहर चले आते हैं।)

निकोलस—आपका मतलब गिरजा से है?

पुरोहित—हां, बेशक गिरजा तो हुई है, पर साथ ही विश्वसनीय लोगों के, जैसेकि साधु-संतों के, प्रमाण भी हैं।

निकोलस—इसमें संदेह नहीं कि अगर विश्वास करने के लिए कुछ भ्रम-रहित लोगों के समूह का अस्तित्व होता तो बहुत ही अच्छा होता—बहुत वांच्छनीय होता। लेकिन उनकी वांच्छनीयता से यह सिद्ध नहीं होता कि ऐसे लोग मौजूद हैं।

पुरोहित—मगर मैं समझता हूं कि उनके अस्तित्व की वांच्छनीयता और उपयोगिता ही उनके अस्तित्व का प्रमाण है। प्रभु ईसा मसीह ने अपने कानून को इसलिए संसार में प्रकट नहीं किया होगा कि वह नष्ट-भ्रष्ट हो जाय बल्कि वास्तव में अपने सत्य की रक्षा के लिए और उसे नष्ट-भ्रष्ट होने से बचाने के लिए अवश्य ही कोई-न-कोई संरक्षक छोड़ गये होंगे।

निकोलस—अच्छा, समझा, पर अबतक तो हमने सत्य को सिद्ध करने की चेष्टा की और अब सत्य के संरक्षक के अस्तित्व की संभावना को सिद्ध करने का उद्योग करते हैं, और शायद भविष्य में हमें उसकी प्रामाणिकता साबित करनी होगी।

पुरोहित—इसके लिए सच पूछिए तो श्रद्धा की जरूरत है।

निकोलस—श्रद्धा की? हां, बेशक—श्रद्धा की जरूरत है। श्रद्धा के बिना काम नहीं चल सकता। मगर हमें श्रद्धा दूसरों के कहने पर नहीं, बल्कि हम खुद, जो कुछ देखकर सोच-विचारकर बुद्धि के द्वारा निश्चय करें, उसमें रखनी चाहिए। हमें श्रद्धा रखनी चाहिए ईश्वर में, सत्य और अविनाशी जीवन में।

पुरोहित—बुद्धि धोखा दे सकती है, क्योंकि हरेक का दिमाग जुदा-जुदा होता है।

निकोलस—**(तेजी से)** यही तो बड़ा भारी कुफ्र है। ईश्वर ने सत्य को जानने के लिए हमें यही तो एक पवित्र साधन दिया है; और यही एक साधन है सबको एकता के सूत्र में बांधने का और हम उसी का विश्वास नहीं करते हैं।

पुरोहित—जबकि आपके निश्चयों में ही पारस्परिक विरोध है तब हम उसपर किस तरह विश्वास करें?

निकोलस—विरोध है कहां? क्या इसमें विरोध है कि दो और दो मिलकर चार होते हैं या इसमें भी विरोध है कि हमें दूसरों के साथ वह काम नहीं करना चाहिए जिसे हम चाहते हैं कि दूसरे लोग हमारे साथ न करें? और क्या इसमें भी किसी को विरोध है कि प्रत्येक कार्य के साथ कारण होता है? इस प्रकार की सच्चाइयों को हम सब लोग मान लेते हैं क्योंकि यह हमारी बुद्धि के अनुकूल है। लेकिन यह कि खुदा कोहेनूर पर हजरते मूसा से मिला, बुद्धदेव एक सूर्य रश्मि पर चढ़कर आसमान में उड़ गये और मुहम्मदसाहब आस्मान को चले गये और ईसामसीह भी उड़कर वहीं गये—इस किस्म की बातों पर हम लोगों में मतभेद है।

पुरोहित—नहीं, हम लोगों में मतभेद नहीं है। जो लोग सत्य धर्म में विश्वास रखते हैं वे सब सम्मिलित होकर ईसा और ईश्वर में श्रद्धा और भक्ति रखते हैं।

निकोलस—नहीं, इस विषय में भी आप सब लोगों में एकता नहीं है। सब जुदा-जुदा रास्ते पर जा रहे हैं। तब फिर मैं एक बुद्ध लामा के वचनों पर विश्वास न करके आपकी ही बातों पर क्यों विश्वास करूं? क्या सिर्फ इसलिए कि मेरा जन्म आपके मजहब में हुआ है?

(टेनिस खेलनेवाले झगड़ते हैं)

"आउट!" "नाट आउट!"

वानिया—मैंने देखा...

(इसी बातचीत के दरम्यान नौकर लोग मेज पर चाय और काफी ला रखते हैं)

निकोलस—आप कहते हैं कि गिरजा लोगों को परस्पर मिलाता है, मगर इसके बरखिलाफ गिरजे के बदौलत तो भारी-भारी झगड़े पैदा होते रहे हैं।

"कितनी बार मैंने तुम्हें एकत्र करना चाहा, जिस तरह कि एक मुर्गी अपने बच्चों को इकट्ठा करती है..."।

पुरोहित—यह तो ईसा के पहले की बात है, उसने तो फिर सबको इकट्ठा किया।

निकोलस—हां, मैं मानता हूं कि ईसा ने उन्हें मिलाया—एकत्र किया, मगर हम लोगों ने फूट का बीज बोया, क्योंकि हमने उनकी शिक्षा का उल्टा मतलब समझा है। ईसा ने तो गिरजाघरों का नाश किया है।

पुरोहित—क्यों, उन्होंने एक जगह यह नहीं कहा है–

"जाओ गिरजा से कहो।"

निकोलस—यहां शब्दों का प्रश्न नहीं है। इसके अलावा इन शब्दों का तात्पर्य उससे नहीं है जिसे हम लोग आजकल "गिरजा" कहते हैं। हमें तो उपदेशों का जो भाव होता है उसी की आवश्यकता है। ईसामसीह की शिक्षा विश्व-व्यापी है, उसमें सब धर्मों का समावेश है। वह किसी एकांत, अद्‌भुत और असंगत बात को नहीं मानती है, न वह पुनरुत्थान को मानती है और न ईसा के देवत्य ही में बिश्वास रखती है। वह मंत्र-जंत्रादि ऐसी बातों का प्रचार नहीं करती जो आपस में फूट डालती हों।

पुरोहित—गुस्ताखी माफ करें, मैं समझता हूं कि आपने ईसा की शिक्षा का यह अर्थ तो अपनी तरफ से ही निकाला है। प्रभु मसीह की शिक्षा की बुनियाद तो वास्तव में उनके देवत्व और पुनरुत्थान पर ही है।

निकोलस—गिरजाघरों के विषय में यही तो बड़ी भयानक बात है। वे लोग इस बात की घोषणा करते हैं कि संपूर्ण अकाट्य और अचूक सत्य उनके अधिकार में है और लोगों में अंतर डालते हैं। देखिए अगर मैं यह कहूं कि ईश्वर एक है और वह इस समस्त विश्व का एक मूल कारण है तो प्रत्येक पुरुष मुझसे सहमत हो सकता है और ईश्वर की यह परिभाषा हमें एकत्र करने में कारणभूत हो सकती है, लेकिन अगर मैं यह कहूं कि ईश्वर एक है परंतु वह ब्रह्म है या जिहोवा है या त्रिमूर्ति है तो इस प्रकार के भाव से लोगों में भेद उत्पन्न होता है। मनुष्य मेल चाहते हैं, एकता चाहते हैं और इसके लिए तरह-तरह की युक्तियां भी खोज निकालते हैं किंतु मेल और एकता का मात्र असंदिग्ध साधन-सत्य और प्रेम की खोज-को भूल जाते

हैं। यह तो ऐसा ही है जैसेकि सूरज की रोशनी को छोड़कर कोई घर की अंधेरी कोठरी में चिराग जलाकर एक दूसरे को पहचानने की चेष्टा करे।

पुरोहित—लेकिन जबतक कोई निश्चित सत्य न हो तबतक लोगों की रहनुमाई क्यों कर हो सकती है ?

निकोलस—यही तो आफत है। हममें से प्रत्येक को अपनी-अपनी आत्मा की रक्षा करनी है और स्वयं अपने-आप ईश्वर का काम करना है। लेकिन इसके बजाय हम अपना समय लगाते हैं दूसरों को बचाने और उनको सिखाने में। और हम उन्हें इस उन्नीसवीं सदी के अंत में सिखाते क्या हैं ? हम उन्हें सिखाते हैं कि ईश्वर ने छः दिन में दुनिया पैदा की, फिर एक तूफान आया और उसने सब जीवों को एक नाव में बिठाकर उन्हें बचाया आदि और ऐसी "ओल्ड टेस्टामेंट" की तरह-तरह की भयंकर और वाहियात बातें सिखाई जाती हैं। इसके आगे फिर बताते हैं कि ईसा ने सबको पानी से बपतिस्मा दिया और इसके बाद पापों के निराकरण के भ्रमपूर्ण सिद्धांतों पर यह कहकर विश्वास दिलाया जाता है कि ये मुक्ति के लिए आवश्यक हैं। और पश्चात् यह बताया जाता है कि वह उड़कर स्वर्ग में चला गया कि जिसका वास्तव में कोई अस्तित्व ही नहीं है, और वहां जाकर वह अपने स्वर्गीय पिता के दाहिनी तरफ बैठ गया। हम लोग इसके आदी हो गये हैं, वरना सच पूछिए तो यह बड़ी ही भयंकर बात है। एक बच्चा, जिसका दिमाग साफ और ताजा है और अच्छी शिक्षा को पाने के लिए तैयार है, पूछता है कि यह दुनिया कैसी है, इसके नियम क्या हैं ? और हम लोग सत्य और प्रेम की शिक्षा का प्रकाश डालने के स्थान पर चालाकी के साथ उसके दिमाग में तरह-तरह की वाहियात बातें भर देते हैं। क्या यह भयानक नहीं है ? यह तो एक इतना बड़ा पाप और अपराध है कि जितना संसार में हो सकता है। और हम और आपका गिरजा यही करते हैं। बस माफ कीजिए।

पुरोहित—यदि ईसा की शिक्षा को बुद्धि की दृष्टि से देखा जाय तब तो वह ऐसी ही है।

निकोलस—चाहे जिस दृष्टि से देखिए यह बात ऐसी ही है।

(खामोश हो जाता है)

(अलेक्जेण्डरा का प्रवेश, पुरोहित जाने के लिए उठता है और नमस्कार करता है।)

अलेक्जेण्डरा—नमस्कार! आप निकोलस की बातें न सुनिए वह आपको बहका देगा।

पुरोहित—धर्म-पुस्तकों का मंथन कर हमें इस बात का निर्णय करना चाहिए। इसमें संदेह नहीं कि यह मामला निहायत जरूरी है और योंही छोड़ देने लायक नहीं है।

(जाता है)

अलेक्जेण्डरा—सचमुच निकोलस तुम्हें उसपर जरा भी रहम नहीं आता। यद्यपि वह है पुरोहित लेकिन फिर भी अभी लड़का ही है? क्या तुम उसे कोई निश्चित विचार नहीं दे सकते।

निकोलस—क्या उसे मायाजाल में फंसकर सर्वथा विनष्ट हो जाने दूं? नहीं, मैं ऐसा नहीं करूंगा। इसके अलावा वह एक नेक और ईमानदार आदमी है।

अलेक्जेण्डरा—लेकिन यदि वह तुम्हारी बातें मान ले तो उसका क्या परिणाम होगा?

निकोलस—उसे मेरी बात मानने की जरूरत नहीं। लेकिन यदि वह सत्य को खोज लेगा तो यह उसके तथा और उन्य लोगों के लिए भी अच्छा होगा।

अलेक्जेण्डरा—यदि वास्तव में यह बात ठीक होती तो प्रत्येक आदमी तुम्हारी बात मानने के लिए तैयार हो जाता; लेकिन इस वक्त तो कोई भी नहीं मानता, यहांतक कि खुद तुम्हारी पत्नी ही उस पर विश्वास नहीं करती।

निकोलस—यह आपसे किसने कहा?

अलेक्जेण्डरा—अच्छा, उसे समझाकर देखो तो? वह कभी इस बात को न समझ सकेगी। और दुनिया का कोई आदमी इस बात पर यकीन नहीं कर सकता कि दूसरे लोगों की तो खबरगीरी रखनी चाहिए और अपने बाल-बच्चों को छोड़ देना चाहिए। जरा जाकर मेरी को यह बात समझाओ तो सही।

निकोलस—हां-हां, मेरी अवश्य इस बात को समझेगी। मगर माफ करना अलीना, सच्ची बात तो यह है कि अगर दूसरे लोग अपना प्रभाव डालकर उसे न भड़काते तो वह अवश्य इस बात को समझती, इसपर विश्वास

करती और मेरे कहने के अनुसार काम भी करती।

अलेक्जेण्डरा—यफिम और उसके-जैसे नशेबाज लोगों की खातिर तुम्हारे बच्चों को भिखारी बनाने के लिए? कभी नहीं! अगर तुम इससे नाराज हो गये हो तो मुझे माफ करना। मुझसे बोले बगैर रहा नहीं जाता।

निकोलस—नहीं, मुझे गुस्सा नहीं आया। उल्टी मुझे खुशी है कि आपने ये सब बातें कहकर मौका दिया कि मैं मेरी को जीवन-संबंधी अपने विचार खुलासा बतलाकर सब बातें समझा दूं। घर आते वक्त मैं रास्तेभर यही सोचता रहा था और अभी मैं उससे इस विषय पर बातचीत करूंगा। और आप देखेंगी कि वह मेरी बात पर राजी हो जायगी; क्योंकि वह नेक और बुद्धिमती है।

अलेक्जेण्डरा—परंतु इस विषय में मुझे तो पूरा संदेह है।

निकोलस—लेकिन मुझे तो बिल्कुल संदेह नहीं है। आप इतना तो जानती ही हैं कि यह बात मैंने अपनी तरफ से तो निकाली ही नहीं है। यह तो वही बात है कि जिसे हम सब जानते हैं और जिसको ईसामसीह ने हम लोगों के वास्ते प्रकट किया है।

अलेक्जेण्डरा—अच्छा, तुम समझते हो कि ईसामसीह ने इसी बात को प्रकट किया है; लेकिन मैं समझती हूं कि उन्होंने कोई दूसरी ही बात प्रकट की है।

निकोलस—दूसरी बात तो हो ही नहीं सकती।

(टेनिस के मैदान से आवाजें आती हैं।)

ल्यूबा—'आउट'!

वानिया—नहीं, हमने देखा।

लिसा—मैंने देखा कि गेंद यहां गिरी थी।

ल्यूबा—'आउट'!'आउट' !!'आउट'!!!

वानिया—यह बात ठीक नहीं है।

ल्यूबा—हमेशा याद रखो कि किसी से यह कहना कि "यह बात ठीक नहीं है" एक उजडुपन है।

वानिया—और जो बात ठीक नहीं है उसे ठीक बतलाना भी उजडुपन है।

निकोलस—जरा ठहरिए! मेरी बात सुनिए। क्या यह सच नहीं है कि हम

किसी भी क्षण मौत के मुंह में चले जा सकते हैं और तब हम उस परम पिता के सामने पेश किये जायंगे जो यह आशा रखता है कि हम उसकी आज्ञानुसार बर्तेंगे।

अलेक्जेण्डरा—अच्छा?

निकोलस—तो भला, इस जीवन में इसके सिवा और मैं क्या कर सकता हूं कि मैं वही काम करूं जो मेरी आत्मा के अंतस्तल में सर्वोत्कृष्ट विचार के रूप में रमा हुआ ईश्वर मुझसे करने को कहता है। मेरा शुभ विवेक-मेरा ईश्वर चाहता है कि मैं हरेक आदमी को एक-समान समझूं–सबसे प्रेम करूं और सबकी सेवा करूं।

अलेक्जेण्डरा—अपने बच्चों के साथ भी वैसा ही बर्ताव करना?

निकोलस—बेशक, अपने बच्चों के साथ भी, मगर अंतरात्मा की आज्ञाओं का पालन करते हुए। और इन सबके अतिरिक्त मुझे यह ध्यान रखना चाहिए कि मुझे अपने जीवन पर कोई अधिकार नहीं है—न आपको अपने जीवन पर; उसपर केवल ईश्वर ही का अधिकार है, जिसने हमें इस दुनिया में भेजा और जो चाहता है कि हम उसकी आज्ञा का पालन करें। और उसकी आज्ञा है कि...

अलेक्जेण्डरा—क्या तुम समझते हो कि तुम मेरी को इस बात पर राजी कर लोगे?

निकोलस—बेशक!

अलेक्जेण्डरा—और क्या तुम्हारा यह भी खयाल है कि वह अपने बच्चों को शिक्षा देना बंद कर देगी और उन्हें छोड़ देगी? कभी नहीं!

निकोलस—न केवल वही इस बात को समझ लेगी, बल्कि तुम खुद समझने लग जाओगी कि यही एक चीज है जो करनी चाहिए।

अलेक्जेण्डरा—नहीं, कभी, नहीं।

(मेरी का प्रवेश)

निकोलस—क्यों मेरी, मेरे उठने से तुम जग तो नहीं पड़ीं?

मेरी—नहीं, मैं तो उस समय जगती थी। क्यों तुम्हारा काम हो गया?

निकोलस—हां, हो गया।

मेरी—यह क्या, तुम्हारी काफी तो इतनी ठण्डी हो गई है? ऐसी क्यों पीते हो?

हां, हमें मेहमानों के स्वागत के लिए तैयार हो जाना चाहिए। तुम्हें मालूम है न कि चेरमशेनव लोग आ रहे हैं?

निकोलस—अगर तुम उनके आने से संतुष्ट हो तो मैं बड़ा प्रसन्न हूं।

मेरी—मैं शाहजादी और उनके बच्चों को चाहती हूं, मगर वे लोग जरा बे-वक्त आ रहे हैं।

अलेक्जेण्डरा—(**उठकर**) अच्छा तुम लोग बातें कर लो तबतक मैं जाकर टेनिस देख आऊं।

(खामोशी, कुछ देर बाद दोनों बातचीत करते हैं)

मेरी—उनका आना बे-वक्त है; क्योंकि हमें कुछ बातचीत करनी है।

निकोलस—मैं अभी अलीना से कह रहा था...

मेरी—क्या?

निकोलस—नहीं, पहले तुम ही कहो।

मेरी—मैं तुमसे स्ट्यूपा के संबंध में बात करना चाहती थी? आखिर कुछ-न-कुछ तय तो करना ही पड़ेगा। वह बेचारा दु:खी और निरुत्साही होता जाता है। उसे यह मालूम ही नहीं पड़ता कि भविष्य में क्या होगा? वह मेरे पास आया, मगर मैं क्या बताऊं?

निकोलस—बताने की जरूरत क्या है? वह खुद इस बात को तय कर सकता है।

मेरी—वह अश्व-रक्षकों में बतौर एक स्वयं-सेवक के भरती होना चाहता है और इसके लिए उसे तुम्हारे हस्ताक्षर की जरूरत है। इसके अलावा उसे अपने निर्वाह के लिए खर्चे की भी जरूरत होगी। मगर तुम उसे कुछ देते ही नहीं।

(कुछ उत्तेजित हो जाती है)

निकोलस—मेरी, भगवान् के लिए जरा उत्तेजित मत हो। मैं न तो कुछ देता हूं और न रोकता हूं। अपनी इच्छा से फौज में नौकरी करना, मेरी राय में, एक विवेक और विचारहीन कार्य है जो वहशी आदमी के लायक है; क्योंकि वह उसकी बुराई को समझ नहीं सकता और अगर कोई मनुष्य उसे किसी लोभ की दृष्टि से करना चाहता है तो फिर तो वह एक महा-घृणित व्यवहार है।

मेरी—मगर आजकल तो तुम्हें हरेक बात वहशियाना और विवेकहीन दिखाई देती है। आखिरकार उसे भी दुनिया में रहना है न? और तुम भी तो इसी तरह रहे हो।

निकोलस—(**जरा तेज होकर**) हां, मैं इसी तरह रहा था, जबकि मैं कुछ भी समझता नहीं था और जब मुझे किसी ने नेक सलाह नहीं दी थी। मगर यह सब तय करना उसी के हाथ में है, मेरे हाथ में नहीं।

मेरी—तुम्हारे हाथ में कैसे नहीं? तुम्हीं तो उसको खर्च नहीं देते हो।

निकोलस—जो चीज मेरी नहीं है उसे मैं नहीं दे सकता।

मेरी—तुम्हारी नहीं है? तुम कह क्या रहे हो?

निकोलस—दूसरों की मेहनत-मजूरी पर मेरा कोई अधिकार नहीं है। मुझे उसे रुपया देने के लिए पहले दूसरों से लेना पड़ेगा। मुझे ऐसा करने का कोई हक नहीं है और मैं यह कर नहीं सकता। जबतक जायदाद का इंतजाम मेरे हाथों में है तबतक मुझे अपनी विवेक-बुद्धि के अनुसार ही उसका प्रबंध करना चाहिए। दूसरे मैं थके-मांदे किसानों का फल फौजी रक्षकों की वाहियात भ्रष्टतापूर्ण नालायकियों पर खर्च होने के लिए नहीं दे सकता। जायदाद मेरे हाथों में से ले लो, फिर मैं उसका जिम्मेवार न रहूंगा।

मेरी—यह तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं उसे लेना नहीं चाहती और न ले ही सकती हूं। मुझे बच्चों को खिला-पिलाकर परवरिश करने के अलावा उन्हें लिखाना-पढ़ाना भी तो है। यह तो बड़ी निठुरता है!

निकोलस—प्यारी मेरी, यह बात नहीं है। जब तुम इस तरह बोलने लगी तो मैं भी साफ-साफ बातें कहने लगा। हमें इस तरह नहीं रहना चाहिए। हम लोग एक-साथ और एक-जगह रहते हैं, लेकिन फिर भी एक-दूसरे को समझ नहीं पाये। कभी-कभी तो ऐसा मालूम होता है मानों हम लोग जान-बूझकर एक दूसरे को समझना नहीं चाहते।

मेरी—मैं समझना चाहती हूं, लेकिन समझ नहीं पाती। सचमुच मैंने तुम्हें बिल्कुल ही नहीं पहचाना है। आजकल तुम्हें न जाने क्या हो गया है।

निकोलस—अच्छा, तो जरूर कोशिश करके समझो। लेकिन इसके लिए यह वक्त ठीक नहीं है। ईश्वर जाने, हम लोगों को कब ठीक मौका मिलेगा। तुम्हें मुझको समझने की जरूरत नहीं। तुम खुद अपने को ही समझ लो

और सोचो कि तुम्हारे जीवन का अर्थ क्या है? ईश्वर ने तुम्हें पैदा क्यों किया है? बिना इस बात के जाने कि हम लोग जी किसलिए रहे हैं, इस तरह हम अपना जीवन नहीं बिता सकते?

मेरी—हम लोग इसी तरह जीवन व्यतीत कर रहे थे और बड़े आराम से थे, **(खिजलाहट का भाव देखकर)** अच्छी बात है, अच्छी बात है, कहिए मैं सुनती हूं।

निकोलस—बेशक, मैं भी इसी तरह जीवन व्यतीत कर रहा था, बिना इसका खयाल किये कि मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है? मगर एक वक्त ऐसा आया जबकि मैं अपने जीवन और अपनी परिस्थिति को देखकर दंग रह गया। जरा सोचो तो सही, हम लोग दूसरों की मिहनत पर अपना निर्वाह करते हैं। दूसरों से अपने लिए काम करवाते हैं, दुनिया में रहकर बच्चे पैदा करते हैं और उनको भी इसी तरह का जीवन व्यतीत करने की शिक्षा देते हैं। बुढ़ापा आयगा और मौत का सामना होगा, तब मन में विचार आवेंगे—मैंने संसार में रहकर क्या किया? यही न कि अपने-जैसे और अनेक मुफ्त के टुकड़े-खोर पैदा किये! इसके अलावा, इतना होते हुए भी हम अपने जीवन का आनंद नहीं पाते हैं। यह जीवन, तुम जानती हो, हमें तभी तक सहज प्रतीत होता है जबतक हमारे अंदर वानिया की तरह जीवन में स्फूर्ति रहती है।

मेरी—मगर सब कोई इसी तरह का जीवन व्यतीत करते हैं!

निकोलस—और वे सब दु:खी हैं।

मेरी—बिल्कुल नहीं।

निकोलस—खैर, मैंने देख लिया कि मैं बहुत दु:खी हूं, और मैंने तुम्हें और तुम्हारे बच्चों को भी दु:खी बना रखा है। तब मेरे दिल में विचार उठा कि क्या यह संभव है कि ईश्वर ने हमें इसीलिए पैदा किया है। और जिस वक्त मेरे दिल में विचार उठा उसी दम मुझे मालूम हुआ कि नहीं ऐसा नहीं है। तब मैंने पूछा "फिर ईश्वर ने हमें किसलिए पैदा किया है?"

(एक नौकर का प्रवेश)

मेरी—**(निकोलस की बात को अनसुनी करके नौकर से)** कुछ गरम मलाई ले आओ।

निकोलस—और बाइबिल में मुझे इस बात का जवाब मिला कि हमें अपने ही लिए नहीं जीना चाहिए—अपना सारा जीवन स्वार्थ में ही नहीं व्यतीत करना चाहिए। जब बगीचे में मजदूरों के इस सिद्धांत पर विचार कर रहा था तब मुझे यह बात स्पष्ट मालूम हो गई। तुम समझीं?

मेरी—हां, मजदूरों के संबंध की न?

निकोलस—मुझे ऐसा मालूम हुआ कि इस दृष्टांत ने, मेरी, और बातों की अपेक्षा मेरी भूलों को अधिक स्पष्ट दिखलाया। उन मजदूरों के समान मैं भी यह मानने लगा था कि वह बगीचा खुद मेरा है और यह जीवन भी मेरा अपना ही है। इससे सब चीजें मुझे बड़ी भयंकर मालूम होतीं। मगर ज्योंही मैंने यह समझ लिया कि यह जीवन मेरा नहीं है; बल्कि इस दुनिया में मैं उस ईश्वर के इच्छानुसार कार्य करने के लिए भेजा गया हूं...

मेरी—लेकिन इससे क्या? यह तो हम सब जानते हैं।

निकोलस—हां, यदि हम इतना जानते तो हम जिस प्रकार रहते हैं, न रहते होते; क्योंकि हमारा वर्तमान जीवन तो उसके बिल्कुल विरुद्ध है। और हम क्षण-क्षण पर उसकी आज्ञा का उल्लंघन करते हैं।

मेरी—मगर जब हम किसी दूसरे को हानि ही नहीं पहुंचाते तो अपराध कैसा?

निकोलस—मगर क्या सचमुच हम किसी को नुकसान नहीं पहुंचाते? तुम्हारी यह दलील बिल्कुल लचर है—अनपढ़ लोगों के जैसी है। हम दूसरों की मजदूरी से अपना फायदा नहीं करते? तो फिर यह अमीरी क्या है? यह ठाट-बाट साज-सामान आदि कहां से आये? नंगे बदन रहकर ठंड में ठिठुरनेवाले उन गरीब लोगों के शरीर का कपड़ा छीनकर हम अपने लिए बेशकीमती पोशाकें बनाते हैं, उनकी झोंपड़ियों को उजाड़कर हम अपने आलीशान महल बनवाते हैं और निरीह भूखों मरते लोगों के मुंह का कौल छीनकर हम लोग तरह-तरह के लजीज पकवानों की दावतें उड़ातें हैं। यदि कोई मनुष्य किसी चीज का अधिक उपभोग करता है तो निस्संदेह यह समझ लेना चाहिए कि अवश्य ही कहीं सैकड़ों मनुष्य भूखों मरते होंगे।

मेरी—हां, दृष्टांत तो मेरी समझ में आ गया। ईश्वर ने सभी को बराबर दिया है।

निकोलस—(**थोड़ी देर ठहरकर**) नहीं यह ऐसा नहीं है। मगर मेरी, जरा इस बात को सोचो कि मनुष्य दुनिया में केवल एक ही बार आता है। तो फिर

क्या यह उचित है कि हम उस जीवन को नष्ट कर दें? हमें उसका अच्छा-से-अच्छा उपयोग करना चाहिए।

मेरी—ना जी, मैं तुमसे बहस नहीं कर सकती। समझ में नहीं आता क्या करूं। रात को बच्चों के मारे पूरी तरह सो भी नहीं पाती। मुझे घर का सब काम-काज देखना पड़ता है; उस पर तुम सहायता देने के बजाय मुझे ऐसी नई-नई बातें कहते हो जो मैं समझ ही नहीं सकती।

निकोलस—नहीं, पहले हम लोगों को आपस में एक समझौते पर आ जाना चाहिए। (**प्यार से**) क्यों ठीक है न?

मेरी—हां, बस तुम पहले जैसे हो जाओ।

निकोलस—नहीं, यह तो नहीं हो सकता। मगर सुनो तो।

(घण्टियों और गाड़ियों के आने की आवाज)

मेरी—नहीं, अब नहीं—वे लोग आ गये हैं। मुझे उनसे मिलने के लिए जाना चाहिए।

(घर के पीछे के दरवाजे से जाती है। स्टयूपा और ल्यूबा उसके पीछे-पीछे जाते हैं। वानिया भी।)

वानिया—हम लोग इसे योंही नहीं छोड़ेंगे। हम लोग बाद में खेलकर फैसला कर लेंगे। क्यों, ल्यूबा, क्या है? अब तो तुम बड़ी खुश होगी?

ल्यूबा—(**गंभीरता से**) चुप रहो, बकवास न करो।

(अलेक्जेण्डरा अपने पति और लिसा के साथ बरामदे से बाहर आती है। निकोलस विचार-मग्न होकर इधर-उधर घूमता है)

अलेक्जेण्डरा—क्यों, तुमने उसे समझाकर राजी कर लिया?

निकोलस—अलीना, हम लोगों में परस्पर जो कुछ चल रहा है वह बड़ा गंभीर मामला है। इस वक्त मजाक बे-मौके है। कुछ मैं उसे थोड़े ही समझा रहा हूं; बल्कि जीवन, सत्य और स्वयं ईश्वर उसे सन्मार्ग दिखाने की चेष्टा कर रहे हैं। इसीलिए वह इसके बिना समझे और बिना यकीन किये रह ही नहीं सकती। अगर आज नहीं तो कल और कल नहीं तो परसों—एक-न-एक दिन वह सचाई को अवश्य समझेगी। मगर खेद है, ऐसे मौके पर उसे समय नहीं मिलता। अभी कौन आये हैं?

पीटर—चेरमशेनव लोग आये हैं। कैटिचि चेरमशेनव भी हैं। मुझे उनसे मिले

18 साल हो गये। पिछली बार जब हम लोग मिले थे तब हम लोगों ने यह गजल गाई थी—

''दर्द मिन्नत कशे दवा न हुआ।''

अलेक्जेण्डरा—मेहरबानी करके हमारी बातों में दखल न दो। और यह मत समझ बैठो कि मैं निकोलस से झगड़ पड़ूंगी। मैं तो सच-सच बात कहती हूँ। (**निकोलस से**) मैं तुमसे हँसी बिल्कुल नहीं करती हूं। लेकिन मुझे यह बात बड़ी अजीब मालूम हुई कि तुम मेरी को उस वक्त यह बात समझाकर राजी करना चाहते थे जबकि वह तुमसे जी खोलकर बातें करने को तैयार हुई थी।

निकोलस—अच्छा, लो वे लोग आ गये हैं। कृपा करके मेरी से कह दीजिएगा कि मैं अपने कमरे में हूं।

(**प्रस्थान**)

दूसरा अंक

पहला दृश्य

(उसी घर में एक सप्ताह बाद। एक बड़े भोजनालय में मेज के पास मेरी, शाहजादी और पीटर बैठे हैं; दीवार के पास एक पियानो भी रखा हुआ है।)

पीटर—शाहजादी, अब की दफे बहुत दिनों बाद हम लोगों की मुलाकात हुई। उस बार तो आपने खूब गाया था। कहिए, अब भी क्या आपको कुछ गाने का शौक है।

शाहजादी—मुझे तो अब उतना शौक नहीं रहा, मगर हमारे बच्चे गा सकते हैं।

पीटर—बेशक, आपकी लड़की बहुत अच्छा गाती है और पियानो भी अच्छा बजाती है। सब बच्चे कहां गये हैं ? क्या अभी तक सोते हैं ?

मेरी—हां, कल रात को चांदनी में वे लोग बाहर सैर करने निकल गये थे और रात को बड़ी देर से वापस आये, मैं उस समय बच्चे को दूध पिलाती थी। इससे मैंने उनकी आवाज सुनी थी।

पीटर—लेकिन हमारी अर्धाङ्गिनीजी कब पधारेंगी? क्या आपने उनके लिए गाड़ी भेज दी है ?

मेरी—हां, गाड़ी बड़े सवेरे ही चली गई थी, मैं समझती हूं वह अब आती ही होंगी।

शाहजादी—क्या सचमुच, अलीना बीबी बाबा जिरैसियम को बुलाने गई हैं ?

मेरी—जी हां, यह बात कल उनके ध्यान में आई और उसी वक्त वे रवाना हो गई।

शाहजादी—ओहो! कितनी फुर्ती है। इसके लिए मैं उनकी तारीफ करती हूं।

पीटर—ऐसे मामलों में हम लोग पीछे नहीं रहते। **(सिगार निकालता है)** अच्छा तो अब इजाजत दीजिए; मैं जरा जाकर सिगार पीऊंगा और कुत्तों के साथ पार्क की सैर करूंगा।

(जाता है)

शाहजादी—पता नहीं, कहांतक सच है, मगर मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि आप फिजूल में उस बात का इतना खयाल करती हैं। मैं उनकी दशा को समझती हूं। उनके दिमाग की हालत इस वक्त बहुत ही बढ़ी-चढ़ी और ऊंची है। खैर, मान भी लो कि वह गरीबों को कुछ दे देते हैं तो इससे क्या होता है? क्या हमको सदा ही जरूरत से ज्यादा अपनी फिक्र नहीं लगी रहती है?

मेरी—मगर इतना ही हो तब न? अभी आपको मालूम नहीं कि वह क्या करना चाहते हैं। सिर्फ गरीबों को मदद देने का ही सवाल नहीं है, बल्कि यह तो एक तरह की क्रांति है–सब चीजों का सर्वनाश है।

शाहजादी—मैं आपके पारिवारिक जीवन में व्यर्थ हस्तक्षेप करना नहीं चाहती, मगर आप...

मेरी—आप और व्यर्थ हस्तक्षेप? बिल्कुल नहीं। मैं तो आपको अपना ही समझती हूं, आप कोई गैर थोड़े ही हैं और खास कर अब-इस वक्त।

शाहजादी—मैं तो कहूंगी कि आप जी खोलकर उनसे साफ-साफ इस विषय में बातें करें और आपस में तय करके एक हद बांध लें।

मेरी—**(आवेश में)** हद कहां? यहां तो कोई हद नहीं है। वह तो सब-कुछ दे डालना चाहते हैं। वह तो चाहते हैं कि मैं अब इस उम्र में रसोइये और धोबिन का काम करूं।

शाहजादी—नहीं जी, भला यह भी कहीं मुमकिन है? यह तो बिल्कुल अजीब बात है।

मेरी—**(जेब से खत निकालते हुए)** हम लोग यहां अकेले ही हैं, इसलिए मैं आपसे सब बातें कह देती हूं! उन्होंने कल मुझे यह खत दिया था, मैं पढ़कर सुनाती हूं।

शाहजादी—क्या? वह आपके साथ एक ही घर में रहते हुए खत भेजते हैं? कैसे ताज्जुब की बात है?

मेरी—नहीं, इसका कारण मुझे मालूम है। वह बोलते-बोलते बहुत उत्तेजित हो जाते हैं। मुझे तो उनके स्वास्थ्य की बड़ी चिंता हो गई है।

शाहजादी—उन्होंने क्या लिखा है?

मेरी—पढ़ती हूं, सुनिए–(**पढ़ती है।**) "तुम मुझे अपना पूर्व-जीवन उलट-पुलटकर डालने और उसके बजाय कोई नई चीज न देने के लिए बार-बार झिड़कती हो और कहती हो कि मैं यह नहीं बताता कि हम लोग अपना पारस्परिक जीवन किस तरह संगठित करें। जब हम इस विषय पर बहस करते हैं तो दोनों ही उत्तेजित हो उठते हैं; इसलिए मैं यह चिट्ठी लिख रहा हूं। मैंने अक्सर बतलाया है कि किसलिए उस तरह का जीवन व्यतीत नहीं कर सकता, जैसाकि हम अबतक करते आये हैं और कर रहे लेकिन इस चिट्ठी में लिखकर तो मैं यह नहीं समझा सकता कि ऐसा क्यों है। और न मैं यही बतला सकता हूं कि किसलिए हमें ईसा-मसीह की शिक्षा के अनुसार जीवन व्यतीत करना चाहिए। तुम दो में से एक बात कर सकती हो; या तो सत्य में विश्वास रखकर स्वेच्छा से मेरे साथ-साथ चलो या मुझमें विश्वास रखकर, मेरे ऊपर पूरा भरोसा करके मेरा अनुसरण करो।" (**पढ़ना बंद करके**) मैं न तो यही कर सकती हूं और न वही। वह जिस तरह रहने को कहते हैं, वह मैं जरूरी नहीं समझती। मुझे बच्चों का खयाल रखना है और उनपर भरोसा नहीं कर सकती। (**फिर पढ़ती है**) "मेरा विचार तो यह है कि हम लोग जमीन किसानों को दे डालें और बाग, फुलवारी और नदी के चारागाहवाली जमीन के अलावा 135 एकड़ जमीन अपने पास रखें। हम लोग खुद मिहनत करने की कोशिश करें। मगर बच्चों को या एक-दूसरे को काम करने के लिए मजबूर न करें। हमारे पास जो कुछ जमीन बचेगी उससे भी तो 50 पौण्ड सालाना आमदनी होगी।

शाहजादी—50 पौण्ड सालाना पर जिंदगी बसर करना—सात बच्चों को लेकर? बिल्कुल असंभव।

मेरी—देखिए तो, उनकी सारी तजवीज तो यह है कि हम अपना सारा घर भी दे डालें और उसे एक मदरसे के रूप में परिवर्तित कर दें और हम लोग एक मामूली दो कमरेवाली झोंपड़ी में रहें।

शाहजादी—हां, अब मुझे मालूम हुआ कि इसमें कुछ विलक्षणता है। अच्छा,

आपने क्या उत्तर दिया?

मेरी—मैंने तो कह दिया कि यह नहीं हो सकता। यदि मैं अकेली होती तो निधड़क उनके पीछे चली जाती। मगर मेरे पास बच्चे हैं। जरा सोचो तो सही। छोटा बच्चा तो अभी दूध ही पीता है। मैंने तो उन्हें कहा कि हम सब चीजों को इस प्रकार दूर नहीं कर सकते। और क्या इसी बात पर ब्याह के वक्त मैं उनके साथ राजी हुई थी? दूसरे, अब न मैं जवान ही हूं और न मेरे शरीर में ताकत है। भला मैं किस तरह इस बात को मान लूं?

शाहजादी—यह तो मैंने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि बात इतनी बढ़ गई है।

मेरी—बस, यही हाल है। मालूम नहीं क्या होनेवाला है! कल उन्होंने एक गांव के किसानों का लगान माफ कर दिया! और वह जमीन भी उन्हींको दे डालना चाहते हैं।

शाहजादी—मैं समझती हूं कि ऐसा तो नहीं होने देना चाहिए। अपने बच्चों की रक्षा करना अपना कर्तव्य है। अगर वह जायदाद का इंतजाम नहीं कर सकते तो उन्हें चाहिए कि उसे वह आपके हवाले कर दें।

मेरी—मगर यह तो मैं नहीं चाहती।

शाहजादी—बच्चों की खातिर आपको लेना चाहिए। बेहतर है कि वह जायदाद आपके नाम कर दें।

मेरी—बहन अलीना ने उनसे ऐसा कहा था; लेकिन वह कहते थे कि उन्हें ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं है; क्योंकि जमीन उन लोगों की है जो उसे जोतते हैं, बोते हैं, और उन्होंने यह भी कहा था कि यह उनका कर्तव्य है कि वह उसे किसानों को दे दें।

शाहजादी—हां, अब मुझे मालूम होता है कि मामला बेढब और संजीदा है।

मेरी—और पुरोहित! वह भी उन्हींका पक्ष लेता है।

शाहजादी—हां, कल मैंने देखा था।

मेरी—इसीलिए अलीनाबहन मास्को गई हैं। वह इस मामले में वकील से सलाह लेना चाहती थीं। मगर खास तौर से तो वह बाबा जिरैसियन को बुलाने गई है कि जिससे वह अपना प्रभाव डालकर उन्हें रास्ते पर ले आवें।

शाहजादी—हां, मैं नहीं समझती कि हजरत ईसा का सिद्धांत हमें पारिवारिक जीवन नष्ट करने की आज्ञा देता है।

मेरी—मगर वह बाबा जिरैसियन की बात भी नहीं मानेंगे। वह अपनी धुन के पक्के हैं। और जब वह मुझसे बहस करते हैं, तब आप जानती हैं, मैं कुछ जवाब नहीं दे सकती। यह तो और भी भयानक है। मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि वह जो कुछ कहते हैं वह सब सच है।

शाहजादी—यह इसीलिए कि आप उन्हें प्यार करती हैं।

मेरी—मालूम नहीं। मगर है यह बड़ी गड़बड़—और यही इसाई-धर्म है।

(दाई का प्रवेश)

दाई—छोटा निकोलस जग पड़ा है। वह आपके लिए रोता है।

मेरी—अभी आती हूं। **(शाहजादी से)** जब मैं उत्तेजित होकर अधिक बहस करती हूँ तो उनकी तबीयत बिगड़ जाती है।

(दूसरे द्वार से हाथ में क़ागज लिये निकोलस का प्रवेश)

निकोलस—नहीं, यह तो असंभव है।

मेरी—क्यों, क्या हुआ ?

निकोलस—हुआ क्या! कुछ शीशम के दरख्तों की वजह से पीटर को कैद हो जायगी।

मेरी—सो कैसे ?

निकोलस—बिल्कुल सीधी-सी बात है। उसने कुछ पेड़ काट डाले, इसकी शिकायत मजिस्ट्रेट के पास की गई और मजिस्ट्रेट ने उसे तीन मास की सजा दी है। उसकी औरत उसके लिए आई है।

मेरी—क्या वह किसी तरकीब से बच नहीं सकता ?

निकोलस—नहीं, अब नहीं बच सकता। बस, यही एक रास्ता है कि हम जंगल ही न रखें और मैं ऐसा ही करूंगा। भला इसके सिवा और क्या हो सकता है ? मगर जाकर देखता हूं कि किसी तरह उस बेचारे को छुटकारा हो सकता है।

ल्यूबा—प्रणाम पिताजी, **(हाथ चूमती है)** अब कहां जाते हैं ?

निकोलस—मैं अभी गांव से लौटा था और फिर गांव को जा रहा हूं। वे एक भूखे आदमी को जेल में डालने के लिए घसीटे लिये जा रहे हैं। क्योंकि उसने...

ल्यूबा—शायद पीटर है ?

निकोलस—हां पीटर ही है।

(जाता है, उसके पीछे-पीछे मेरी भी जाती है।)

ल्यूबा—**(सामधार के पास बैठती है)** तुम कॉफी चाहते हो या चाय?

बोरिस—कुछ भी नहीं।

ल्यूबा—सदा ही यह लगा रहता है, आखिर इसका कोई अंत भी है।

बोरिस—मेरी समझ में नहीं आता। मैं जानता हूं कि किसान गरीब और अनपढ़ हैं और उनकी सहायता अवश्य करनी चाहिए; मगर इस तरह चोरों को उत्साहित करके नहीं।

ल्यूबा—फिर कैसे?

बोरिस—अपने समस्त कार्यों से। उनके लिए अपना समस्त ज्ञान काम में लाकर और अपने जीवन की कुर्बानी करके।

ल्यूबा—और पिताजी कहते हैं कि इसी बात की तो जरूरत है।

बोरिस—कुछ समझ में नहीं आता। एक आदमी अपना जीवन नष्ट किये बिना ही लोगों की सेवा कर सकता है। इसी तरह मैं अपने जीवन को ढालना चाहता हूं। सिर्फ अगर तुम...

ल्यूबा—जो तुम्हें पसंद है वही मुझे पसंद है। और मुझे किसी चीज का डर नहीं है।

बोरिस—उन बालियों का और उस पोशाक का क्या किया जाय?

ल्यूबा—बालियां बेच डाली जा सकती हैं और पोशाक में तबदीली होनी चाहिए। बिल्कुल छैल-छबीली भी बनना ठीक नहीं है।

बोरिस—मैं तुम्हारे पिताजी से एक बार फिर बातचीत करना चाहता हूं। क्या तुम समझती हो कि यदि मैं उनके साथ गांव तक जाऊं तो कुछ हर्ज होगा।

ल्यूबा—नहीं, बिल्कुल नहीं। देखती हूँ, कि वह तुमको पसंद करने लगे हैं और कल रात को तो वह ज्यादातर तुम्हींको मुखातिब करके बात करते रहे थे।

बोरिस—**(कॉफी पी लेता है)** अच्छा तो मैं जाऊंगा।

ल्यूबा—हां, जाओ, और मैं जाकर लिसा और टानिया को जगाती हूं।

(पर्दा गिरता है।)

दूसरा दृश्य

(गांव की गली, आहवन एक झोंपड़ी के पास लेटा हुआ है।)

आहवन—मालाशका! **(एक छोटी-सी लड़की बच्चों को गोद में लिये हुए आती है, बच्चा रोता है)** थोड़ा-सा पानी ले आ।

(मालाशका झोंपड़े में वापस जाती है; बच्चे का रोना सुनाई देता है; मालाशका एक लोटे में पानी लिए आती है।)

आहवन—बच्चे को क्यों मारती है? उसे हमेशा रुलाती रहती है। तेरी मां से कह दूंगा।

मालाशका—अच्छा तो उससे कह दो। वह भूख के मारे रोता है।

आहवन—**(पानी पीता है)** जाओ और डेमकिन से कुछ दूध मांग लाओ।

मालाशका—मैं गई थी, मगर वहां कोई नहीं था।

आहवन—ओह, क्या ही अच्छा हो यदि मैं मर जाऊं। क्या खाना तैयार है?

मालाशका—हां, तैयार है। यह देखो, जमींदारसाहब आ रहे हैं।

(निकोलस प्रवेश करता है)

निकोलस—क्यों, यहां बाहर क्यों लेटे हो?

आहवन—अंदर बहुत मक्खियां भिनभिनाती है और बड़ी गर्मी है।

निकोलस—यहां तुम्हें ठंड तो नहीं लगती?

आहवन—नहीं, मेरा जिस्म गरमी के मारे झुलस रहा है।

निकोलस—और पीटर कहां है? क्या घर में है?

आहवन—घर में! और इस वक्त? वह तो खेत में अनाज ढोने के लिए गया है।

निकोलस—मैंने सुना है कि वे लोग उसे जेल में डालनेवाले हैं।

आहवन—हां, यही बात है, पुलिस का आदमी उसे पकड़ने खेत पर गया है।

(एक गर्भवती स्त्री का प्रवेश, सर पर अनाज का गट्ठा है और हाथ में हंसिया है, मालाशका देखते ही सिर पर एक चपत लगाती है।)

स्त्री—क्योंरी, बच्चे को अकेला क्यों छोड़ दिया? सुनती नहीं, वह चिल्ला रहा है। बस इधर-उधर फिरना ही जानती है?

मालाशका—**(चिल्लाती हुई)** मैं अभी तो बाहर आई हूं। पिताजी ने पानी मांगा था।

स्त्री—देख बताती हूं अभी तुझे। (**निकोलस को देखकर**) वंदे ठाकुरसाहब। बच्चों की बड़ी आफत है। मैं तो बड़ी हैरान हो रही हूं। सारा बोझ मेरे ही सिर पर है। हमारे घर में कमाई करनेवाला एक ही आदमी है। उसे भी वे लोग जेलखाने लिये जाते हैं और यह काम-चोर इधर निठल्ला पड़ा हुआ है।

निकोलस—क्या बोलती हो? देखो तो यह बेचारा कितना बीमार है।

स्त्री—यह बीमार है और मैं कैसी हूं? क्या मैं बीमार नहीं हूं? जब काम का वक्त होता है तब वह बीमार पड़ जाता है; मगर हँसने-बोलने और मेरे सिर के बाल नोंचने के लिए बीमार नहीं होता। मरे, कुत्ते की मौत मरे! मुझे क्या?

निकोलस—ऐसी खराब बातें तुम्हारे मुंह से कैसे निकलती हैं?

स्त्री—मैं जानती हूँ, यह पाप है। मगर मेरी जबान काबू में नहीं रहती। मेरे एक और बच्चा होनेवाला है। और अभी दो को संभालना पड़ता है। सब लोगों की फसल कटकर तो घर में आ गई है, मगर हमारी चौथाई कटाई भी अभी नहीं हो पाई है। मुझे जौ के गट्ठे बांधने थे, मगर नहीं बांध सकी। बच्चों को देखने के लिए मुझे काम छोड़कर आना पड़ा।

निकोलस—जौ कट जायंगे। मैं मजदूरों को लगा दूंगा। वे काट कर गट्ठे बांध डालेंगे।

स्त्री—गट्ठे बांधने में कुछ नहीं है, यह तो मैं खुद कर सकती हूं, बस किसी तरह कटाई हो जाती। क्यों निकोलससाहब, आप क्या समझते हैं—क्या यह मर जायगा? यह बहुत बीमार है।

निकोलस—मालूम नहीं, मगर बीमार तो सचमुच बहुत है। उसे अस्पताल भेजना चाहिए।

स्त्री—हरे राम! (**रोती है**) ईश्वर के लिए उसे कहीं मत ले जाओ, यहीं मर जाने दो। (**अपने पति से, जो कुछ कहता है**) क्या कहते हो?

आहवन—मैं अस्पताल जाना चाहता हूं, यहां तो मैं कुत्ते से भी बदतर हूं।

स्त्री—खैर जो कुछ हो। मेरा तो इस वक्त जी ठिकाने नहीं है। मालाशका! खाना परोस।

निकोलस—तुम्हारे खाने में क्या-क्या चीजें हैं?

स्त्री—क्या-क्या चीजें हैं ? रोटी और आलू, और वह भी काफी नहीं हैं। **(झोंपड़े के अंदर आती है, एक सूअर का बच्चा चिल्लाता है, अंदर बच्चे रोते हैं)**

आहवन—हे ईश्वर, अब तो बस मौत दो। **(कराहता है)**

(बोरिस का प्रवेश)

बोरिस—क्या मैं कुछ सहायता कर सकता हूं ?

निकोलस—यहां कोई किसी की सहायता नहीं कर सकता। खराबी की जड़ गहरी पहुंच चुकी है। यहां बस हम अपनी सहायता कर सकते हैं–यह देखकर कि हम किन चीजों से अपने जीवन के सुख का निर्माण करते हैं। यह देखो, एक परिवार है, पांच बच्चे हैं; स्त्री गर्भवती है, पति बीमार है, आलुओं के सिवा घर में खाने के लिए कुछ नहीं है। और इस वक्त इस बात का निर्णय किया जा रहा है कि अगले साल भी उन्हें खाने के लिए काफी अनाज मिलेगा या नहीं ? माना कि मैं एक मजदूर कर दूं; मगर वह मजदूर होगा कौन ? बस ऐसा ही एक दूसरा आदमी होगा कि जिसने शराब पीने या पैसा न होने की वजह से अपनी खेतीबारी का काम छोड़ दिया है।

बोरिस—माफ कीजिएगा। मगर ऐसी बात है तो फिर आप यहां क्या कर रहे हैं ?

निकोलस—मैं अपनी स्थिति को समझने की कोशिश कर रहा हूं। मैं यह देख रहा हूं कि वह कौन है जो हमारे बागों में काम करता है, हमारे मकान बनाता है, हमारे कपड़े बनाता है और हमें खिलाता-पिलाता है। **(किसान हंसिये लिये हुए और स्त्रियां रस्सी लिये हुए जाते हैं और सलाम करते हैं। निकोलस एक किसान को रोककर)** एरमिल, क्या तुम इन लोगों के जौ काटकर नहीं ला सकते ?

एरमिल—**(सिर हिलाकर)** मैं बड़ी खुशी से करता लेकिन, इस वक्त मैं यह काम नहीं कर सकता। मैंने खुद अभी तक अपना खेत नहीं काट पाया है। हम लोग अब खेत काटने जाते हैं। मगर आहवन का क्या हाल है।

दूसरा किसान—यह देखो सिबेश्चियन हैं, शायद यह राजी हो जाय। शिबा काका, यह लोग जौ काटकर लाने के लिए एक आदमी चाहते हैं।

शिबा—तुम्हीं इस काम को ले लो; इस वक्त तो एक दिन की मिहनत से साल भर का खाना मिलता है।

(किसान जाते हैं)

निकोलस—यह सब नंगे-भूखे हैं। इन्हें आधा पेट खाने को मिलता है। इसीलिए सब रोगी हो रहे हैं। और कई बुड्ढे हैं । देखो, वह बूढ़ा आदमी बीमारी से अधमरा हो रहा है। लेकिन फिर भी वह सुबह चार बजे से लेकर रात के दस बजे तक काम करता है। और हम लोग? यह सब देखकर क्या यह संभव है कि हम लोग शांति-पूर्वक दिन बितावें और फिर भी अपने को धार्मिक मनुष्य समझे? धार्मिक मनुष्य न सही, केवल पशु न समझें?

बोरिस—लेकिन इसके लिए क्या करना चाहिए?

निकोलस—इस बुराई में भाग नहीं लेना चाहिए? न जमीन को अपने कब्जे में रखना और न दूसरों की मिहनत से फायदा उठाना चाहिए। इनसब बातों का क्या प्रबंध होना चाहिए यह तो मैं अभी नहीं बता सकता। दर असल बात यह है कि हम लोग यह कभी सोचते नहीं कि हमारा जीवन किस तरह गुजर रहा है। मैंने यह कभी नहीं समझा कि मैं ईश्वर का पुत्र हूं, और हम सब ईश्वर के पुत्र हैं, भाई भाई हैं। लेकिन जिस वक्त मैंने यह अनुभव किया था, जिस वक्त यह जान लिया कि हम सब एक-बराबर हैं, सबको इस दुनिया में जिंदा रहने का हक है, उसी वक्त मेरे दिल में हलचल मच गई। लेकिन यह सब बातें मैं इस वक्त नहीं बता सकता। इस वक्त तो मैं यही कहूंगा कि मैं बिल्कुल चक्षु-हीन था, जैसाकि इस वक्त मेरे घर के लोगों का हाल है। मगर अब मेरी आंखें खुल गई हैं और अब मैं इन बातों को देखें बिना नहीं रह सकता। लोगों की इस हीनावस्था को देखकर और उसका कारण जानकर अब मैं उसी तरह अपना जीवन व्यतीत नहीं कर सकता। खैर यह तो फिर देखा जायगा। इस वक्त किसी तरह इनको मदद देनी चाहिए। **(पुलिस का आदमी, पीटर, उसकी स्त्री और बच्चे का प्रवेश)**

पीटर—**(निकोलस के पैर पकड़कर)** माफ करो, ईश्वर के लिए, मुझे माफ कर दो। नहीं तो मैं बिल्कुल बरबाद हो जाऊंगा। अकेली औरत किस तरह

अनाज काटकर घर में ला सकेगी? कम-से-कम जमानत पर ही मैं छूट जाता!

निकोलस—मैं अर्जी लिखता हूं। (**पुलिस मैन से**) क्या तुम इसे अभी नहीं छोड़ सकते?

पुलिस मैन—मुझे पुलिस स्टेशन ले जाने का हुक्म मिला है।

निकोलस—अच्छा तो जाओ मुझसे जो हो सकेगा मैं करूंगा। यह सब मेरी करतूत है। भला, इस तरह कोई कैसे रह सकता है?

(जाता है।)

तीसरा दृश्य

(उसी घर में। वर्षा हो रही है, एक कमरे में पियानो रखा हुआ है। टानिया पियानो के पास बैठी है, उसने अभी एक गीत समाप्त किया है, स्ट्यूपा पियानो के पास खड़ा है। बोरिस बैठा है। ल्यूबा, लिसा, मित्राफेन, और वासिमी, पुरोहित सब गीत से प्रभावित और प्रसन्न हैं)

ल्यूबा—अहा! यह गीत कितना प्यारा है?

स्ट्यूपा—सचमुच बड़ी खूबसूरती से गाया।

लिसा—बहुत ही अच्छा है।

स्ट्यूपा—मगर मुझे मालूम नहीं था कि तुम गान-विद्या में इतनी निपुण हो। कोई उस्ताद भी इस तरह से शायद ही बजा पायेगा। ऐसा मालूम होता है कि तुम्हारे हृदय में स्वर्गीय भावों की अक्षय निधि है। उसमें से एक-एक करके वह चुने हुए सुन्दर दिव्य-भाव कुछ ललित किशोर स्वरों की सवारी पर बैठकर आकाश की तरफ उड़ते हैं और अपनी ज्योतिर्मयी प्रभा की स्फूर्ति से समस्त संसार को आच्छादित और आह्लादित करते हुए अंत में दूर, बहुत दूर, आसमान में झिलमिलाते हुए सितारों की रोशनी में लीन हो जाते हैं, और देखते-देखते ही वे सितारे और भी अधिक उज्ज्वल, और भी अधिक सजीव और भी अधिक चंचल हो उठते हैं।

ल्यूबा—बस स्ट्यूपा ने मेरे मन की बात कही है। सचमुच टानिया तुम अप्सरा हो।

टानिया—मगर तो समझती थी कि मैं पूरी तरह अपने भावों को व्यक्त नहीं कर सकी। बहुत-कुछ अभी अव्यक्त ही रह गया है।

लिसा—भला, इससे बढ़कर और क्या हो सकता है? गाना आश्चर्यजनक था।

ल्यूबा—तानसेन और बैजूबावरा की याद आती है। सुनते हैं, बैजूबावरा के गाने का दिलपर अधिक असर पड़ता है।

स्ट्यूपा—हां, उसमें भक्ति के भाव अधिक भरे होते हैं।

टानिया—हम लोग उन दोनों का एक-दूसरे से मुकाबला नहीं कर सकते।

ल्यूबा—भक्ति के गानों में मीराबाई भी अद्वितीय हैं। क्या तुम्हें कोई गीत याद है?

टानिया—कौन-सा गीत चाहती हो? "मेरे मन राम नाम दूसरा न कोई"

(बजाना शुरू करती है)

ल्यूबा—नहीं, यह नहीं, यह भी बहुत अच्छा है, मगर उसे सब कोई गाता फिरता है। देखिए यह गीत–

(जितना मालूम है उतना बजाती है, फिर छोड़ देती है)

टानिया—ओह, यह तो बहुत ही अच्छा है...गाते-गाते मन खुशी से नाच उठता है।

स्ट्यूपा—हां, हां, जरा गाइए तो सही। मगर नहीं तुम थक गई होगी। यों भी आज की सुबह हम लोगों ने बड़ी खुशी से बिताई, इसके लिए आपको धन्यवाद है।

टानिया—**(उठकर खिड़की में से देखती है)** बाहर कुछ किसान बैठे इंतजार कर रहे हैं।

ल्यूबा—इसीलिए तो गान-विद्या की इतनी कदर है, और कोई चीज इस तरह मनुष्य के सुख-दुःख को नहीं भुला सकती जिस तरह कि गान-विद्या करती है। **(खिड़की के पास जाकर किसानों से)** तुम किसे चाहते हो?

किसान—निकोलससाहब से मिलने हम लोग आये हैं।

ल्यूबा—वह घर पर नहीं हैं। तुम लोग जरा ठहरो।

टानिया—और फिर भी तुम बोरिस से ब्याह करना चाहती हो कि जिसे गान-विद्या का कुछ भी ज्ञान नहीं है।

ल्यूबा—जी नहीं, हरगिज नहीं।

बोरिस—गाना ? नहीं, नहीं, मैं उसे पसंद करता हूं, या यों कहिए कि मैं उसे नापसंद नहीं करता। गाने की बनिस्बत मैं गीतों को अधिक पसंद करता हूं। क्योंकि उनमें सादगी है, उनमें इतनी कृत्रिमता-जनक उलझन नहीं होती।

टानिया—मगर क्या यह राग अच्छा नहीं है ?

बोरिस—खास बात यह है कि यह चीज इतनी जरूरी नहीं है और मुझे यह देखकर दुःख होता है कि लोग गान-विद्या को इतना जरूरी समझते हैं जबकि हजारों आदमी बड़ी मुसीबत से अपने दिन काटते हैं।

(सब लोग मिठाई खाते हैं, मिठाई मेज पर सजी हुई है)

लिसा—यह कितने मजे की बात है कि प्रेमी मौजूद हों और मिठाइयां तैयार हों।

बोरिस—यह मेरा काम नहीं है, मांजी का है।

टानिया—बिल्कुल ठीक और मुनासिब है।

ल्यूबा—गाने की खूबी इसीमें है कि वह हमारे दिल पर जादू का-सा असर कर रहा है, हमें अपने वश में करके दुनिया के सुख-दुःख से दूर, बहुत दूर, ले जाता है, जहां थोड़ी देर के लिए हम संसार की स्थूल वास्तविकता को भूल जाते हैं। अभी थोड़ी देर पहले हरेक चीज सुस्त और बे-मजा मालूम होती थी, मगर तुम्हारे गाने ने मानों सबमें जीवन डाल दिया है।

लिसा—तुम्हें कबीर के कोई गीत भी मालूम है ?

टानिया—यह...(**बजाती है**)

(निकोलस का प्रवेश, बोरिस, टानिया, स्ट्यूपा, लिसा, मित्राफेन और पुरोहित से हाथ मिलाता है।)

निकोलस—तुम्हारी मां कहां है ?

ल्यूबा—मैं समझती हूं, वह पालनेवाले घर में होंगी।

(स्ट्यूपा नौकर को बुलाता है—अफनासी!)

ल्यूबा—पिताजी, टानिया कितना अच्छा गाती-बजाती है और तुम कहां थे ?

निकोलस—गांव में (**अफनासी का प्रवेश**)

स्ट्यूपा—दूसरा सामवार लाओ।

निकोलस—(नौकर को सलाम करके उससे हाथ मिलाता है) नमस्कार।

(नौकर गड़बड़ा जाता है। प्रस्थान। निकोलस भी जाता है।)

स्त्यूपा—गरीब अफनासी! वह कितना गड़बड़ा गया था; पिताजी की बातें मेरी समझ में नहीं आतीं, इससे तो ऐसा मालूम होता है मानो हमने कोई जुर्म किया है।

(निकोलस का प्रवेश)

निकोलस—मैं अपने दिल की बात कहे बिना ही अपने कमरे को वापस जा रहा था। (टानिया से) तुम हमारे मेहमान हो, अगर मेरा कहना तुम्हें नागवार गुजरे तो मुझे माफ करना। लिसा, तुम कहती हो कि टानिया बहुत अच्छा गाती-बजाती है। तुम सात-आठ नौजवान-तंदुरुस्त औरत और मर्द दस बजे तक पड़े सोते रहे। उसके बाद उठकर खाया पिया और अब भी खा रहे हो। तुम सब मिलकर यहां गाते-बजाते और आपस में गाने के संबंध में बातचीत करते हो, और वहां, जहां से कि मैं आ रहा हूं, गांव के सब लोग सवेरे तीन बजे से उठ बैठे और जो लोग कोल्हू चलाते हैं वह तो बिल्कुल सोये ही नहीं। बूढ़े और जवान, रोगी दुर्बल, बच्चे और दूध पिलानेवाली माताएं और गर्भवती स्त्रियां अपनी-अपनी शक्ति-भर मेहनत करती हैं और वह सिर्फ इसलिए कि हम लोग उनकी मेहनत से लाभ उठाकर मौज उड़ाया करें। इतना ही नहीं, अभी इसी वक्त उनमें से एक आदमी जो अपने कुटुम्ब में अकेला ही कमानेवाला है, जेल में डाल दिया गया है; क्योंकि उसने एक शीशम का पेड़ हमारे जंगल से काट लिया है। हम लोग यहां सजधज कर आराम से बैठे हुए हैं और बहस कर रहे हैं कि कबीर के गीत अधिक प्रभावशाली हैं या मीराबाई के। यही मेरे दिल में विचार थे सो मैंने प्रकट कर दिये। तुम लोग जरा सोचो तो सही, कि क्या इस तरह जिंदगी बिताना ठीक और मुनासिब है?

लिसा—सच, बिल्कुल सच है।

ल्यूबा—मगर इन बातों का खयाल किया जाय तब तो फ़िर जीना ही दूभर हो जाय।

स्त्यूपा—मगर मेरी समझ में नहीं आता कि कुछ लोग गरीब हैं इसीलिए हम लोग गाना क्यों न गायें? दोनों में पारस्परिक विरोध तो नहीं है। मगर...

निकोलस—(क्रोध से) अगर कोई निर्दयी है, अगर कोई पत्थर का बना है।...

स्ट्यूपा—अच्छी बात है, मैं नहीं बोलूंगा।

टानिया—यह बहुत ही कठिन प्रश्न है, यह हमारे जमाने की समस्या है और हमें उससे डरना नहीं चाहिए, बल्कि उसे हल करने की कोशिश करनी चाहिए।

निकोलस—हम लोग चुपचाप बैठकर इस बात का इंतजार नहीं कर सकते कि एक ऐसा वक्त आयगा कि जब खुद-बखुब यह मुश्किल हल हो जायगी। हरेक आदमी को मरना है, आज, नहीं तो कल। एक-न-एक दिन सभीको ईश्वर के समक्ष अपने कर्मों का जवाब देना है। ऐसी हालत में मैं किस तरह इनसब बातों को देखते हुए अपनी आत्मा की आवाज को दबाकर चुपचाप मौज और मजे से योंही अपना जीवन बिताता रहूं?

बोरिस—सच है, इस मुश्किल को हल करने का एक ही रास्ता है; और वह यह कि हम इन बातों में बिल्कुल ही भाग न लें।

निकोलस—अगर तुम्हें बुरा लगा हो तो मुझे माफ करना, मुझसे कहे बिना रहा नहीं गया।

(प्रस्थान)

स्ट्यूपा—इसमें भाग न लें? मगर हमारा समस्त जीवन इन्हीं बातों से बंधा हुआ है।

बोरिस—इसीलिए तो वह कहते हैं कि सबसे पहला काम यह होना चाहिए कि हम लोग कोई जायदाद ही न रखें, और अपने जीवन की गति को इस तरह बदल डालें कि हम दूसरों से अपनी सेवा न करायें, बल्कि खुद दूसरों की सेवा किया करें।

टानिया—अच्छा, तुम भी निकोलस की-सी बातें करने लगे हो!

बोरिस—हां, गांव में जाकर अपनी आंखों से देखने के बाद, मैं सब-कुछ समझ गया। बेचारे गरीब किसानों और दीन-दरिद्र मजदूरों की मुसीबतों और हम लोगों की आरामतलबी और ऐशो-अशरत में क्या संबंध है, इस बात को जानना हो तो बस इतना काफी है कि हम अपनी आंखों से रंगीन चश्मा उतारकर एक बार सहृदयता के साथ आंखें खोलकर उनकी हीन, निस्सहाय और निर्जीव दशा को देखें और फिर अपनी निर्लज्ज निर्दय

ऐयाशियों पर भी एक बार दृष्टिपात करें।

मित्रोफन—मगर उनकी मुसीबतों का इलाज यह नहीं है कि हम अपनी जिंदगी यों बरबाद कर दें।

स्ट्यूपा—ताजुब है कि मिट्रोफन और मेरा मत इस संबंध में एक ही है, यद्यपि हम दोनों के विचारों में जमीन और आसमान का फर्क है।

बोरिस—यह बिल्कुल ही स्वाभाविक है। तुम दोनों आराम के साथ अपनी जिंदगी गुजारना चाहते हो। (**स्ट्यूपा से**) इसलिए तुम वर्तमान स्थिति को बनाये रखना चाहते हो और मिट्रोफन एक नई प्रथा चलाना चाहते हैं।

(ल्यूबा और टानिया आपस में काना-फूसी करते हैं, टानिया पियानो के पास जाकर कबीर का एक गीत गाती है और खामोश है।)

स्ट्यूपा—बहुत अच्छा है, वह यहीं सब बातों को हल कर देता है।

बोरिस—इससे हल कुछ भी नहीं होता; बल्कि यह उसको और भी अस्पष्ट बनाकर अनिश्चित रूप में छोड़ देता है।

(टानिया गाती है; मेरी और शाहजादी चुपचाप आकर बैठ जाती हैं और गाना सुनती हैं। गीत खत्म होने से पहले गाड़ी की घंटियां सुनाई पड़ती हैं)

ल्यूबा—मौसीजी आ गईं। (**उससे मिलने जाती है**)

(गाना जारी है, अलेक्जेण्डरा का प्रवेश, उसके साथ बाबा जिरैसियन, एक पुरोहित, जिसकी गर्दन में क्रास लटक रहा है और एक मुहर्रिर वकील है। सब उठ खड़े होते हैं।)

फादर जिरैसियन—आप गाइए, यह तो बहुत ही अच्छा है।

(शाहजादी और युवक पुरोहित आशीर्वाद लेने के लिए उसके पास जाते हैं।)

अलेक्जेण्डरा—मैंने जैसा कहा था वैसा ही किया; मैं फादर जिरैसियन से जाकर मिली और उनसे प्रार्थना करके उन्हें यहां ले आई हूं—बस मैंने अपना काम पूरा कर दिया। यह देखो, मुहर्रिर भी मौजूद है। उसने दस्तावेज तैयार कर लिया है, सिर्फ दस्तखत करने की जरूरत है।

मेरी—आप कुछ नाश्ता तो कीजिए।

(मुहर्रिर कागजों को मेज पर रखकर बाहर जाता है)

मेरी—मैं फादर जिरैसियन की बहुत ही कृतज्ञ हूं।

फादर जिरैसियन—भला मैं क्या कर सकता था-यद्यपि मुझे दूसरी जगह जाना था; फिर भी ईसाई होने की हैसियत से मैंने यह अपना कर्तव्य समझा कि मैं उनसे मिलूं।

(अलेक्जेण्डरा उन नौजवानों से कानाफूसी करती है, वे एक दूसरे की राय लेते हैं और बोरिस के सिवा बाकी सब बरामदे में चले जाते हैं। नवयुवक पुरोहित भी जाना चाहता है।)

फादर जि०—नहीं, आपको पुरोहित और धार्मिक गुरु होने की हैसियत से यहां ठहरना चाहिए। आप खुद उससे लाभ उठाकर दूसरों को लाभ पहुंचा सकते हैं। अगर मेरी को कुछ आपत्ति न हो तो आप जरा ठहरिए।

मेरी—नहीं, मैं फादर वासिली को अपने घर का-सा समझती हूं। मैंने उनसे इस बारे में सलाह भी ली थी। मगर कम उम्र होने की वजह से उनकी बात प्रमाण नहीं हो सकती।

फादर जि०—बेशक, बेशक।

अलेक्जेण्डरा—**(पास आकर)** फादर जिरैसियन! आप ही मेरी नजर में एक ऐसे आदमी हैं, जो निकोलस को समझा-बुझाकर सीधे रास्ते पर ला सकते हैं। वह बहुत ही पढ़ा-लिखा और होशियार आदमी है; लेकिन आप जानते हैं कि एक तरह की विद्वत्ता से सिर्फ हानि पहुंचती है। वह एक तरह से भ्रम में पड़ा हुआ है। उसका विचार है कि ईसाई धर्म इस बात को मान्य करता है कि कोई आदमी निजी जायदाद न रखे—लेकिन यह भला किस तरह मुमकिन हो सकता है।

फादर जि०—यह सबकुछ नहीं, बड़ा कहलाने का लोभ, आत्मश्लाघा और अहम्मन्यता है। गिरजा के महंतों ने इस बात का संतोषजनक निर्णय कर दिया है। पर यह सब उसके मन में समाया कैसे?

मेरी—अरे साहब न पूछिए। जब हमारी शादी हुई तब धर्म-कर्म की तरफ उनका कोई खयाल न था और हम शुरू के बीस बरसों तक बड़े सुख-चैन से रहे। बाद को उनके मन में कुछ विचार आने लगे। या तो उनकी बहन के विचारों का प्रभाव उनपर पड़ा हो या शायद पुस्तकों का। जैसे भी हो, उनके मन में बहुत उथल-पुथल होने लगा और उन्होंने बाइबिल पढ़ना शुरू किया। एकाएक उनके अंदर धर्म का अंकुर जाग उठा—वे अपने जीवन को अत्यंत धार्मिक बनाने लगे। गिरजा जाने लगे और साधु-संतों से

धर्म-चर्चा करने लगे। फिर एकाएक उन्होंने यह सब बंद कर दिया और अपने जीवन-क्रम को बिल्कुल ही बदल डाला। अपना काम हाथ से करने लगे—नौकरों को अपना काम करने से मना कर दिया और नौबत यहांतक आई कि अब तो वे अपनी जायदाद भी छोड़ रहे हैं। कल उन्होंने एक जंगल दे डाला—पेड़ और जमीन दोनों। यह सब देखकर मेरी तो रूह कांप उठती है; क्योंकि मेरे छः-सात बच्चे हैं। मेहरबानी करके उन्हें कुछ जरूर समझाइए। मैं जाकर पूछती हूं कि वे आपसे मिलेंगे या नहीं।

(प्रस्थान)

फादर जि०—आजकल बहुत लोग इसी तरह अण्ट-शण्ट कर रहें हैं। और यह तो बताओ, जायदाद किसकी है, उसकी या उसकी बीबी की?

शाहजादी—उसकी है! यही तो मुसीबत है।

फादर जि०—और उसका ओहदा क्या है?

शाहजादी—कोई बहुत ऊंचा पद नहीं है। मेरा खयाल है, घुड़सेना का कप्तान है। फौज में भी रह चुका है।

फादर जि०—आजकल बहुत-से लोग इसी तरह बहक रहे हैं। मास्को में एक महिला थी, उसपर आध्यात्मिकता की धुन सवार हो गई और वह बड़ा नुकसान पहुंचाने लगी। आखिर बड़ी मुश्किल से हम उसे रास्ते पर लाये।

शाहजादी—खास बात आपके समझ लेने की यह है कि मेरा लड़का उसकी लड़की से ब्याह करनेवाला है। मैंने अपनी सम्मति दे दी है। लड़की को मौज-शौक से रहने की आदत पड़ी हुई है और मैं नहीं चाहती कि मेरे लड़के को ही उसकी सारी जरूरतें पूरा रखने का बोझ अपने सिर लेना पड़े। मैं यह मानती हूं कि वह मेहनती है और नवयुवकों में अपने ढंग का एक ही है।

(मेरी और निकोलस का प्रवेश)

निकोलस—कहिए शाहजादी साहबा, आपका मिजाज कैसा है? और आपका मिजाज शरीफ? **(फादर जिरैसियन से)** माफ कीजिए, मुझे आपका नाम मालूम नहीं है।[1]

---

1. वह जानता है कि पुरोहित फादर जिरैसियन हैं। परंतु वह उन्हें पुरोहित समझकर बात नहीं करना चाहता, बल्कि उनका असली नाम लेकर करना चाहता है—जैसाकि आदमी दूसरे से आम तौर पर बात करता है।

फादर जि०—क्या तुम मेरा आशीर्वाद लेना नहीं चाहते?

निकोलस—जी, नहीं।

फादर जि०—मेरा नाम है जिरैसियन सिडोरोंलिच, आपसे मिलकर मुझे बड़ी खुशी हुई।

(नौकर लोग नाश्ते का सामान लाते हैं।)

फादर जि०—यह मौसम बहुत ही सुहावना और फसल के लिए अच्छा है।

निकोलस—मैं समझता हूं कि आप मेरी भूल बतलाकर मुझे सन्मार्ग पर लाने के लिए ही अलेक्जेण्डरा के बुलाने से यहां आये हैं। अगर यह सच है, तो आप इधर-उधर की बातें छोड़कर अपना काम शुरू कीजिए। मैं इस बात से इंकार नहीं करता कि मैं गिरजा की शिक्षा को नहीं मानता। किसी जमाने में, गिरजा की शिक्षा को मानता था। मगर उसके बाद से ऐसा करना छोड़ दिया। लेकिन मैं तहेदिल से सच्चाई को पाने की कोशिश करता हूं और अगर आप सच्चाई मुझे दिखला देंगे तो मैं फौरन् बड़ी खुशी के साथ उसे कबूल कर लूंगा।

फादर जि०—यह भला तुम कैसे कहते हो कि तुम गिरजा की शिक्षा पर विश्वास नहीं रखते? अगर गिरजा नहीं तो फिर दूसरी कौन-सी चीज विश्वास करने के लिए है।

निकोलस—ईश्वर और बाइबिल में लिखा हुआ उसका कानून।

फादर जि०—गिरजा उसी कानून की तो तालीम देता है।

निकोलस—अगर ऐसा होता तो मैं गिरजा में विश्वास रखता, लेकिन दुर्भाग्य से वह इसके विरुद्ध शिक्षा देता है।

फादर जि०—गिरजा विरुद्ध शिक्षा नहीं दे सकता; क्योंकि स्वयं ईसा-मसीह ने उसकी स्थापना की है।

निकोलस—अगर यह भी मान लें कि ईसा-मसीह ने गिरजा को स्थापित किया तब यह कैसे मालूम हो कि वह 'आप ही' का गिरजा है।

फादर जि०—भला गिरजा से कोई इंकार कर ही कैसे सकता है? वही तो एक-मात्र मुक्ति का द्वार है।

निकोलस—यह तो मैं आपसे कह ही चुका हूं कि मैं इस बात को स्वीकार नहीं करता। उसे इसलिए स्वीकार नहीं करता, क्योंकि मुझे मालूम हो गया है

कि गिरजा कसम खाना, हत्या करना, और फांसी देना जायज समझता है।

फादर जि०—ईश्वर ने जो अधिकार दिये हैं, गिरजा उनको पाक और जायज करार देता है।

(बातचीत के वक्त, स्टयूपा, ल्यूबा, लिसा और टानिया एक-एक करके आते हैं और बैठकर या खड़े होकर उनकी बातें सुनने लगते हैं।)

निकोलस—मैं जानता हूं कि बाइबिल सिर्फ यही नहीं कहती है कि "मारो मत" बल्कि उसका उपदेश है कि 'क्रोध मत करो।' फिर भी गिरजा फौज को जायज मानता है। बाइबिल कहती है "कभी कसम मत खाओ" मगर फिर भी गिरजा कसम खिलाता है, बाइबिल कहती है...

फादर जि०—माफ कीजिएगा, एक बार खुद ईसा-मसीह ने पाइलेट की कसम को स्वीकार किया था।

निकोलस—अरे गजब! आप क्या कह रहे हैं। यह तो बिल्कुल ही असंगत और असंभव है।

फादर जि०—इसीलिए तो गिरजा हर किसी को गास्पल की व्याख्या करने की आज्ञा नहीं देता है कि लोग कहीं बहक न जायं; बल्कि खुद बच्चे की खबरगिरी करनेवाली मां की तरह बच्चों की शक्ति के अनुसार गास्पल की व्याख्या करता है! नहीं, ठहरिए, मुझे कह लेने दीजिए। गिरजा अपने बच्चों पर इतना भारी बोझ नहीं रखता है कि जिसे वह संभाल न सकें और सिर्फ यही चाहता है कि वह लोग इन आज्ञाओं का पालन करें–प्रेम करो, हत्या न करो, चोरी मत करो, व्यभिचारी मत बनो।

निकोलस—हां! मुझे मत मारो, मैंने जो चीज दूसरों से चुराकर जमा की है उसे मेरे पास से मत चुराओ। हमने दूसरों को लूटा है, उनकी जमीन जबरदस्ती चुरा ली है और उसके बाद यह कानून बना दिया है कि फिर कोई न चुराये, और गिरजा इनसब बातों को मंजूर करता है।

फादर जि०—कुफ्र और आध्यात्मिक अभिमान तुम्हारी वाणी द्वारा बोल रहे हैं। तुम्हें अपने इस पाण्डित्याभिमान को वश में रखना चाहिए।

निकोलस—यह गर्व या अभिमान नहीं है। मैं सिर्फ आपसे यह पूछता हूं कि जब मुझे इस बात का ज्ञान हो गया है कि मैं लोगों को लूटने और जमीन

के द्वारा उन्हें गुलामी में फंसाने का पाप कर रहा हूं तब, ऐसी दशा में, मुझे क्या करना चाहिए? क्या मैं जमीन को अपने अधिकार में रखकर भूखों मरनेवाले लोगों के परिश्रम से लाभ उठाता रहूं या मैं यह जमीन उन लोगों को वापस दे दूं कि जिनसे मेरे बुजुर्गों ने उसे किसी तरह से चुराया या छीन लिया था।

फादर जि०—तुमको वही करना चाहिए जो गिरजा के भक्त के उपयुक्त है। तुम्हारे कुटुम्ब-परिवार है, बाल-बच्चे हैं, तुम्हें उनकी हैसियत के मुताबिक उनका भरण-पोषण और उनकी शिक्षा का प्रबंध करना चाहिए।

निकोलस—क्यों?

फादर जि०—क्योंकि ईश्वर ने तुम्हें उस स्थिति में रखा है। अगर तुम दानी और उदार बनना चाहते हो तो तुम अपनी जायदाद का कुछ हिस्सा दान देकर और गरीब लोगों की सहायता करके अपनी उदारता को विकसित कर सकते हो।

निकोलस—लेकिन फिर हजरत ईसा ने उस नौजवान अमीरजादे से यह क्यों कर कहा था कि अमीर लोग स्वर्ग नहीं जा सकते। ''अमीर आदमी के स्वर्ग में जाने की बनिस्बत कहीं ज्यादा आसान है कि ऊंट सुई के नकुए में से होकर निकल जाय।''

फादर जि०—यह कहा है ''अगर तू पूर्णता प्राप्त करना चाहता है।''

निकोलस—मगर मैं तो पूर्णता प्राप्त करना चाहता हूं। बाइबिल कहती है, ''अपने स्वर्गस्थ पिता की भांति पूर्ण बनो।''

फादर जि०—मगर हमें यह भी तो देखना चाहिए कि किस संबंध में यह बात कही गई है।

निकोलस—मैं यह समझने की कोशिश करता हूं और ''पर्वत पर उपदेश'' में जो कुछ कहा गया है वह बिल्कुल स्पष्ट, बुद्धि-गम्य है।

फादर जि०—यह आध्यात्मिक अभिमान है।

निकोलस—अभिमान कैसा? जबकि यह कहा है कि जो बात बुद्धिमानों से गुप्त है वह बच्चों के लिए प्रकट की है।

फादर जि०—नम्र लोगों पर प्रकट और व्यक्त है न कि घमंडियों के लिए।

निकोलस—लेकिन घमंड किसे है? मैं अपने को मानव-जाति का एक साधारण

मनुष्य समझता हूं और इसीलिए विश्वास करता हूं कि मुझे भी दूसरे भाइयों की तरह मेहनत करके गरीब और सादगी से जीवन-निर्वाह करना चाहिए। कहिए, मैं घमंडी हूं या वे जो अपने को विशेष रूप से पवित्र समझते हैं, अपने को सर्वथा भ्रम-रहित और सारी सच्चाई का ठेकेदार समझते हैं, और जो ईसा-मसीह के शब्दों का मनमाना अर्थ लगाते हैं।

फादर जि०—**(क्षुब्ध होकर)** माफ कीजिएगा, निकोलससाहब, मैं आपसे इस बात की बहस करने नहीं आया था कि हममें कौन ठीक है, और न आप से भर्त्सना-पूर्ण शिक्षा लेने आया था। मैं तो अलेक्जेण्डरा के बुलाने से आपके साथ बात-चीत करने चला आया। लेकिन चूंकि तुम हरेक बात मुझसे ज्यादा अच्छी तरह जानते हो इसीलिए यही अच्छा है कि हम बातचीत बंद कर दें। बस, एक बार और मैं तुमसे प्रार्थना करता हूं कि ईश्वर के लिए तुम होश सम्हालो। तुम बे-तरह बहक गये हो और अपने को बरबाद कर रहे हो।

(उठता है)

मेरी—क्या आप कुछ नाश्ता नहीं करेंगे?

फादर जि०—नहीं, मैं आपको धन्यवाद देता हूं।

(अलेक्जेण्डरा के साथ प्रस्थान)

मेरी—**(नवयुवक पुरोहित से)** कहिए, आप क्या कहते हैं?

पुरोहित—मेरी राय में निकोलस साहब का कहना सत्य था और फादर जिरैसियन ने अपने पक्ष में कोई प्रमाण नहीं दिया।

शाहजादी—उन्हें बोलने ही नहीं दिया और उन्होंने सबके सामने इस प्रकार बहस करना पसंद नहीं किया। उन्होंने शिष्टता के विचार से बहस बंद कर दी।

बोरिस—यह किसी प्रकार की शिष्टता या नम्रता नहीं थी। यह स्पष्ट है कि उनके पास कुछ कहने को था ही नहीं।

शाहजादी—हां, तुम अपनी स्वाभाविक अस्थिरता के कारण हर बात में निकोलस से सहमत होने लगे हो। यदि तुम्हें ऐसी बातों पर विश्वास है तो तुम्हें शादी नहीं करनी चाहिए।

बोरिस—मैं तो केवल यही कहता हूं कि सच्चाई सदा सच्चाई है और मैं उसे

बिना कहे नहीं रह सकता।

शाहजादी—कोई कुछ कहे, मगर तुमको तो ऐसी बातें नहीं करनी चाहिए।

बोरिस—सो क्यों।

शाहजादी—क्योंकि तुम गरीब हो और तुम्हारे पास दे डालने को कुछ भी नहीं है। लेकिन, हमें इन बातों से क्या मतलब?

(जाती है। पीछे-पीछे मेरी और निकोलस के सिवा सब बाहर जाते हैं)

निकोलस—**(बैठा हुआ विचार करता है, फिर अपने ही आप मुसकराता है।)** मेरी! यह सब तुम क्या करती हो? तुमने उस बदबख्त गुमराह आदमी को क्यों बुला भेजा? यह शोर मचानेवाली औरत और पुरोहित हमारी अत्यंत आंतरिक जीवन में क्यों दखल देते हैं? क्या हम लोग खुद अपने मामलों को तय नहीं कर सकते?

मेरी—मगर तुम बच्चों को भिखारी बना देना चाहते हो तो मैं क्या करूं? इसको तो मैं चुपचाप सहन नहीं कर सकती। तुम्हें मालूम है कि तुम्हारी बातें मेरी समझ में नहीं आती और तुम यह भी जानते हो कि मैं अपने लिए कुछ भी नहीं चाहती।

निकोलस—जानता हूं। मैं यह जानता और विश्वास करता हूं। मगर दुर्भाग्य तो यह है कि तुम सत्य पर विश्वास नहीं करती। मुझे विश्वास है कि तुम सत्य को देखती हो, मगर अपने मन को उसपर विश्वास करने के लिए तैयार नहीं कर पातीं। तुम न तो सत्य पर विश्वास करती हो, न मुझपर। तुम विश्वास करती हो भीड़ पर, शाहजादी का और उसीके-जैसे दूसरे लोगों का।

मेरी—मैं तुममें विश्वास रखती हूं, सदा से रखती हूं, मगर जब तुम बच्चों को भिखारी बनाना चाहते हो।

निकोलस—इसके मानी हैं कि तुम मुझपर विश्वास नहीं करतीं। क्या तुम समझती हो कि मेरे भी दिल में इस तरह द्वंद्वयुद्ध और शंकाओं का तूफान नहीं उठा था? मेरे दिल में भी इसी तरह की आशंकाएं पैदा हुईं, मगर बाद को मुझे पूर्ण निश्चय हो गया कि यह मार्ग संभव ही नहीं, वरन् नितांत आवश्यक है और इस मार्ग का अनुसरण स्वयं बच्चों के लिए भी आवश्यक और उपयोगी है। तुम हमेशा कहा करती हो कि अगर बच्चों का खयाल न

होता तो तुम खुशी से मेरे कहने के मुताबिक काम करती, मगर मैं कहता हूं कि अगर हमारे पास संपत्ति न होती तो हम लोग इसी लापरवाही से जिंदगी बिता देते, जैसे अब तक हम अपनी जिंदगी बसर करते थे, क्योंकि उस हालत में तो हम सिर्फ अपने ही आपको नुकसान पहुंचाते, मगर अब तो हम बच्चों को भी हानि पहुंचा रहे हैं।

मेरी—मगर मैं क्या करूं? जबकि तुम्हारी बातें मेरी समझ में नहीं आतीं।

निकोलस—मैं ही क्या करूं? क्या मैं यह नहीं जानता कि वह बदबख्त मनुष्य क्यों बुलाया गया था? और अलेक्जेण्डरा उस मुहर्रिर को बुलाकर क्यों लाई? तुम चाहती हो कि मैं जायदाद तुम्हें दे दूं, लेकिन मैं नहीं दे सकता। तुम जानती हो कि मैं तुम्हें बीस साल से, जब से हम साथ रहते आये हैं, प्यार करता हूं। मैं तुम्हें प्यार करता हूं और तुम्हारा भला चाहता हूं इसीलिए जायदाद तुम्हारे नाम नहीं कर सकता। यदि मैं दूं ही, तो उन किसानों को ही जिनसे मैंने ली है। अच्छा है, मुहर्रिर आ ही गया है, सब काम अभी हो जायगा।

मेरी—नहीं यह भयानक है। यह निष्ठुरता किसलिए? यद्यपि तुम इसे पाप समझते हो, फिर भी अपनी जायदाद मेरे हवाले कर दो।

(रोती है)

निकोलस—तुम नहीं जानतीं कि तुम क्या कह रही हो? यदि अपनी जायदाद तुम्हें दे दूं तो मैं तुम्हारे साथ नहीं रह सकता। मुझे चला जाना पड़ेगा। किसानों का खून, मेरे नहीं तो तुम्हारे नाम पर चूसा जायगा और वे जेल भेजे जावेंगे। मैं यह देख नहीं सकता। तुम क्या पसंद करती हो?

मेरी—तुम कितने निठुर हो? क्या यही ईसाई-धर्म है? यह कठोरता है। जिस तरह तुम मुझे रखना चाहते हो मैं उस तरह नहीं रह सकती। मैं अपने बच्चों से छीनकर सारी जायदाद दूसरों को नहीं लुटा सकती, इसीलिए तुम मुझे छोड़ देना चाहते हो। अच्छा वही करो। मैं देखती हूं कि तुमने मुझे प्यार करना छोड़ दिया, और यह भी जानती हूं कि क्यों?

निकोलस—अच्छी बात है—मैं हस्ताक्षर किये देता हूं, मगर तुम मुझसे असंभव बात करा रही हो **(मेज के पास जाकर सही कर देता है।)** तुमने जो चाहा, मैंने कर दिया, मगर मैं इस तरह अपनी जिंदगी नहीं बिता सकता।

तीसरा अंक

पहला दृश्य

(एक बड़े कमरे में बढ़ईगीरी का सामान रखा हुआ है, एक मेज पर कुछ कागजात हैं, किताबों की एक अल्मारी है, दीवार से तख्ते टिके हुए हैं, एक बढ़ई और निकोलस बढ़ईगिरी का काम कर रहे हैं।)

निकोलस—**(एक तख्ते को रंदते हुए)** यह ठीक है न?

बढ़ई—**(रंदा हाथ में लेकर)** नहीं, इसमें खुरदरापन है, रंदे को इस तरह मजबूती से पकड़िए।

निकोलस—मजबूती से पकड़ो, यह कह देना तो आसान है। मगर मुझसे फिर यह चलता नहीं।

बढ़ई—लेकिन हुजूर, बढ़ई का काम सीखने का कष्ट क्यों उठाते हैं? आजकल योंही इतने बढ़ई बढ़ गये हैं कि हमें पेट भरना मुश्किल हो गया है।

निकोलस—**(फिर काम करता है।)** मुझे निकम्मा जीवन बिताते लज्जा आती है।

बढ़ई—आपकी हैसियत ही ऐसी है। ईश्वर ने आपको जायदाद दी है।

निकोलस—यही तो भूल है। मैं इस बात को नहीं मानता कि वह जायदाद ईश्वर की दी हुई है। मेरा खयाल है कि हमने उसे ले लिया है और अपने ही भाइयों से लिया है।

बढ़ई—**(आश्चर्य से)** यह बात है। लेकिन फिर भी आपको यह काम करने की जरूरत नहीं है।

निकोलस—मैं समझता हूं कि तुम्हें ताज्जुब मालूम होता है कि मैं एक ऐसे घर में रहकर, जो गैर-जरूरी चीजों से भरा हुआ है, मेहनत-मजदूरी करके कुछ कमाना चाहता हूं।

बढ़ई—(हँसकर) नहीं; सब कोई जानता है कि भले घराने के लोग हरफन-मौला बनना चाहते हैं। हां, अब जरा रंदे को तेजी से चलाइए।

निकोलस—तुम मेरी बात का विश्वास नहीं करते और हंसते हो; मगर फिर भी मैं कहता हूं कि पहले इस तरह की जिंदगी से मुझे शर्म नहीं लगती थी, अब, चूंकि मैं ईसा की शिक्षा पर विश्वास रखता हूं, मुझे अपने निकम्मे जीवन पर लज्जा आती है; क्योंकि उनका उपदेश है कि हम सब मनुष्य आपस में भाई-भाई हैं।

बढ़ई—अगर आपको उससे शर्म लगती है तो अपनी जायदाद दूसरों को दे डालिए।

निकोलस—मैं करना तो यही चाहता था, मगर कर न सका। मैं वह जायदाद अपनी स्त्री को दे बैठा।

बढ़ई—मगर बहर-हाल आपको ऐसा करना मुमकिन नहीं, क्योंकि आप आराम के आदी हैं।

(दरवाजे के बाहर से आवाज) पिताजी, क्या मैं अंदर आ सकती हूं?

निकोलस—आओ बेटी, तुम जब चाहो आ सकती हो।

(ल्यूबा का प्रवेश)

ल्यूबा—बंदगी, जैकब।

बढ़ई—बंदगी अर्ज है, साहबजादी!

ल्यूबा—बोरिस अपनी पलटन को गये हैं। मालूम नहीं, वह वहां क्या कहें या कर बैठें? मुझे तो बड़ा भय लगता है। आप क्या कहते हैं?

निकोलस—मैं भला क्या बताऊं! वह जो मुनासिब समझता है वही करेगा।

ल्यूबा—यह बड़े दु:ख की बात है। उन्हें थोड़े ही दिन नौकरी करनी होगी। मगर डर है कि वहां जाकर वह अपने समस्त जीवन को बरबाद न करवा लें।

निकोलस—उसने यह अच्छा ही किया कि वह मुझसे मिलने नहीं आया। वह जानता है कि मैं उसे सच्ची बात के सिवाय और कुछ नहीं कह सकता कि जिसे वह खुद जानता है। उसने मुझसे कहा था कि उसके इस्तीफे देने का केवल यही कारण नहीं है कि उसकी दृष्टि में इससे बढ़कर नीति-भ्रष्ट नियम-रहित, क्रूर और हिंसक वृत्ति कोई और नहीं है; क्योंकि उसका

उद्देश्य ही हत्या करना है; वरन् इस बात को भी भ्रष्टता और नीचता की पराकाष्ठा समझता है कि एक आदमी अपने अफसर की आज्ञा को चुपचाप, बिना चूंचपड़ किये मानने को बाधित किया जाता है-फिर वह आज्ञा कितनी ही कठोर, कितनी ही निर्दय अथवा आत्मा, बुद्धि और विवेक-विरुद्ध ही क्यों न हो। बोरिस इन सब बातों को जानता है।

ल्यूबा—मुझे यही तो डर है। वह इन बातों को जानते हैं। कहीं कुछ कर न बैंठें।

निकोलस—उसकी आत्मा और आत्मा में रहनेवाला परमात्मा उसका फैसला करेगा। अगर बोरिस मेरे पास आता तो मैं उसे सिर्फ एक सलाह देता। मैं बस यही कहता कि कोई ऐसा काम-मत करो, जिसमें केवल बुद्धि की ही प्रेरणा हो। इससे बढ़कर बुरी बात कोई नहीं है—बस उसी वक्त किसी महत्त्व के काम में हाथ डालो जब तुम्हारा मन, तुम्हारी आत्मा प्राण-पण से उस काम में लग जाने के लिए प्रेरित करे। मिसाल के तौर पर, मुझे ही लो। मैं ईसा-मसीह के उपदेश का स्मरण करने के लिए माता-पिता, स्त्री और बच्चों को छोड़ देना चाहता था। मैंने घर छोड़ भी दिया, किंतु उसका परिणाम क्या हुआ? मैं वापस आकर शहर में तुम लोगों के साथ ऐशो-आराम से रहने लगा। मेरी इस निरर्थक और लज्जा-जनक स्थिति का कारण यही है कि मैं अपनी शक्ति से बाहर का काम करना चाहता था। मैं सादगी के साथ रहकर और अपने हाथ से मेहनत करके खाना चाहता हूं; किंतु इस परिस्थिति में, जहां नौकर और दरवान हैं, किसी तरह की मेहनत-मजदूरी करना एक तरह की बनावट और दिखावा मालूम होता है। देखो न, अभी तक जैकब मुझ पर हंस रहा है।

बढ़ई—मैं क्या हसूंगा? आप मुझे वेतन देते हैं और पीने के लिए चाय देते हैं, मैं आपका कृतज्ञ हूं।

ल्यूबा—मैं समझती हूं, शायद यह अच्छा होगा कि मैं उनके पास हो आऊं।

निकोलस—मेरी बेटी, मेरी प्यारी बच्ची, मुझे मालूम है कि तुम्हें यह देखकर बड़ा कष्ट और भय होता है, हालांकि ऐसा होना नहीं चाहिए। तुम डरो मत। ईश्वर सब भला करेगा। जो बात जाहिरा बुरी मालूम होती है, हकीकत में वही ज्यादा खुशी देती है। तुम्हें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जो मनुष्य इस मार्ग पर चलता है उसे दो बातों में से एक बात पसंद करनी

होती है, और कभी-कभी ऐसा होता है कि ईश्वर और शैतान का पक्ष बिल्कुल एक समान होता है, दोनों पलड़े एक-बराबर तुले रहते हैं, और ऐसे ही समय पर मनुष्य को महत्त्वपूर्ण निश्चय करना पड़ता है। उस वक्त, किसी तरह का बाहरी हस्तक्षेप अत्यंत भयावह और कष्ट-प्रद होता है। इस वक्त उसकी हालत ऐसी ही है, जैसे कोई आदमी किसी तंग पगडंडी पर एक भारी बोझ ले जाने की कोशिश कर रहा हो और उसकी हालत ऐसी नाजुक हो कि अगर कोई जरा भी छू दे तो वह मुंह के बल गिरकर हाथ-पैर तोड़ ले।

ल्यूबा—उसे इतना दु:ख उठाने की क्या जरूरत है?

निकोलस—यह बात ऐसी है, जैसे कोई कहे, मां प्रसव-पीड़ा क्यों सहती है? प्रसव-पीड़ा के बिना संतानोत्पत्ति हो ही नही सकती और यही हाल आध्यात्मिक जीवन का है। मैं तुमसे एक बात कहता हूं। बोरिस सच्चा ईसाई है, और इसीलिए वह स्वतंत्र है। अगर तुम खुद अभी उसकी तरह नहीं बन सकतीं, या उसकी तरह ईश्वर में विश्वास नहीं कर सकतीं तो उसके द्वारा ईश्वर में विश्वास करना सीखो।

मेरी—(**दरवाजे के पीछे**) क्या मैं अंदर आ सकती हूं?

निकोलस—हां, तुम जब चाहो आ सकती हो, आज तो यहां मेरा खूब स्वागत हो रहा है।

मेरी—हमारे पुरोहित, वासिली महोदय, आये हैं। वह बिशप के पास जा रहे हैं और उन्होंने त्याग-पत्र दे दिया है।

निकोलस—असंभव है।

मेरी—वह यहीं हैं, ल्यूबा, जाओ, उन्हें बुला तो लाओ। वह तुमसे मिलना चाहते हैं। (**ल्यूबा का प्रस्थान**) मेरे आने का एक और कारण है। मैं तुमसे वानिया के विषय में बातचीत करना चाहती थी। उसके लक्षण कुछ अच्छे नहीं दिखाई पड़ते। वह अपना सबक भी याद नहीं करता। मुझे आशा नहीं कि वह इस साल पास हो। और जब मैं उससे कुछ कहती हूं तो वह मेरे सिर चढ़ता है।

निकोलस—मेरी, तुम जानती हो कि मैं उस प्रकार के जीवन को पसंद नहीं करता जिस प्रकार तुम लोग अपना जीवन व्यतीत कर रहे हो। और न उस शिक्षा ही से मुझे सहानुभूति है, जो तुम बच्चों को दे रही हो। यह मेरे सामने

एक भयंकर समस्या है कि क्या मैं बच्चों को इस तरह बरबाद होते हुए देखता रहूं।

मेरी—तो तुम इसके सिवाय कोई दूसरी बात निश्चित रूप से बताओ। तुम क्या चाहते हो?

निकोलस—सो, मैं कुछ नहीं कह सकता। मगर मैं इतना जरूर कहूंगा कि सबसे पहले हमें इस निकृष्ट बनानेवाले सुखसंभोग से छुटकारा पाना चाहिए।

मेरी—ताकि वह लोग किसान बन जावें। यह तो मैं नहीं मान सकती।

निकोलस—तब फिर मुझसे कुछ मत पूछो। जो बातें तुम्हें बुरी मालूम होती हैं, जिनसे तुम्हें दुःख होता है वह बिल्कुल स्वाभाविक और अपरिहार्य हैं।

(पुरोहित और ल्यूबा का प्रवेश, पुरोहित और निकोलस मिलते हैं)

निकोलस—क्या यह सच है कि आपने उन सब बातों से हाथ धो लिया।

पुरोहित—हां, मुझसे अधिक नहीं सहा गया।

निकोलस—मुझे आशा नहीं थी कि यह बात इतनी जल्दी हो जायगी।

पुरोहित—मगर वास्तव में मेरे लिए यह बिल्कुल असंभव हो गया था। इस पेशे के अंदर उदासीन होकर नहीं रह सकते। हमें लोगों की पाप-स्वीकृतियां (Confessions) सुननी पड़तीं, और मंत्र देने पड़ते हैं और जब एक बार इस बात का विश्वास हो गया कि यह सब असत्य है...

निकोलस—हां, तो अब आप क्या करेंगे?

पुरोहित—मैं अब बिशप के पास जाता हूं, उसने जवाब-तलब किया है। मालूम होता है वह मुझे जिलावतन करके सालेवेट्स मठ में भेज देगा। पहले तो मैंने सोचा कि मैं आपसे कहीं बाहर भाग जाने के लिए मदद मांगूं, मगर फिर मैंने सोचा कि इसमें कायरता प्रकट होगी। बस, मुझे अपनी पत्नी का खयाल है।

निकोलस—वह कहां हैं?

पुरोहित—वह अपने बाप के घर गई है। मेरी सास आई थी, वह मेरे बच्चे को अपने साथ ले गई। इससे मुझे बड़ा दुःख हुआ। मैं चाहता हूं।...

(ठहरता है, आंसू रोकने की कोशिश करता है।)

निकोलस—ईश्वर आपकी सहायता करें। क्या आप आज हमारे यहां ठहरेंगे?

शाहजादी—(**कमरे में दौड़ती आती है**) आखिर, वही हुआ। उसने नौकरी करने से इन्कार कर दिया और वह गिरफ्तार कर लिया गया। मैं वहां गई थी, मगर मुझे अंदर नहीं जाने दिया। निकोलस, तुम्हें चलना पड़ेगा।

ल्यूबा—क्या उन्होंने इन्कार किया है? आपको कैसे मालूम हुआ?

शाहजादी—मैं खुद वहां मौजूद थी। आन्ड्रीविच ने, जो कौंसिल का मेंबर है, मुझसे सारा हाल बयान किया। बोरिस ज्योंही अंदर गया उसने कह दिया कि न वह नौकरी करेगा और न हलफ उठायेगा, गर्जेकि उसने वह सारी बातें कहीं कि जो निकोलस ने सिखाई थीं।

निकोलस—शाहजादी! क्या यह बातें किसी को सिखाई जा सकती हैं?

शाहजादी—मुझे नहीं मालूम, मगर यह ईसाई-धर्म नहीं हो सकता। क्यों बाबा, आपकी क्या राय है?

पुरोहित—अब मैं पादरी नहीं रहा।

शाहजादी—लेकिन बात एक ही है...। हां, तुम उनसे सहमत हो। सो यह तुम्हारे लिए तो ठीक है। पर मैं सब बातें इस दशा में नहीं छोड़ सकती। यह कैसा बदबख्त ईसाई-धर्म है, जो लोगों को दुःख देकर तवाह और बरबाद करता है। मैं तुम्हारे इस ईसाई-धर्म से घृणा करती हूं। यह चोचले तुम्हें भले ही अच्छे हों, क्योंकि तुम्हारा उनसे कुछ नहीं बिगड़ता। मगर मेरे तो एक ही लड़का है, और तुमने उसको बरबाद कर दिया।

निकोलस—शांत होओ, शाहजादी।

शाहजादी—हां, हां, तुम्हींने उसके जीवन को नष्ट किया है। तुमने उसे आफत में फंसाया, इसीलिए तुम्हींको उसकी रक्षा करनी होगी। जाओ और समझाओ कि वह इनसब वाहियात बातों को छोड़ दे। अमीरों के लिए यह सब ठीक हो सकता है, मगर हम लोगों के लिए नहीं।

ल्यूबा—(**रोती हुई**) पिताजी अब क्या होगा?

निकोलस—मैं जाता हूं, शायद मैं कुछ कर सकूं।

(चादर उतारता है)

शाहजादी—(**कोट पहनते हुए**) वह मुझे अंदर नहीं जाने देते, मगर अब हम दोनों साथ-साथ जायंगे।

(प्रस्थान)

दूसरा दृश्य

(एक सरकारी दफ्तर। एक क्लर्क मेज के पास बैठा है और एक सिपाही इधर-से-उधर घूम रहा है। एक जनरल का अपने सेक्रेटरी के साभ प्रवेश। क्लर्क उठ खड़ा होता है; सिपाही फौजी सलाम करता है)।

जनरल—कर्नल कहां है?

क्लर्क—हुजूर, वह उस नये सिपाही को देखने गये हैं, जो अभी भर्ती हुआ है।

जनरल—हां, ठीक है, जाओ, उन्हें यहीं बुला लाओ।

क्लर्क—बहुत अच्छा, हुजूर।

जनरल—और तुम क्या नकल कर रहे हो? नये सिपाही का बयान है न?

क्लर्क—जीहां, जनाब।

जनरल—लाओ, जरा मुझे दो।

(क्लर्क कागज जनरल के हाथ में देकर बाहर जाता है, जनरल अपने सेक्रेटरी को देता है)

जनरल—जरा उसे पढ़िये तो सही।

सेक्रेटरी—''मुझसे तीन प्रश्न पूछे गये हैं कि (1) मैं कसम क्यों नहीं खाता? (2) मैं सरकार की आज्ञाओं का पालन क्यों नहीं करता? (3) किस वजह से मैंने ऐसे शब्द लिखे कि जो न केवल फौज का ही बल्कि उच्च पदाधिकारियों का भी विरोध और अपमान करते हैं। पहले प्रश्न का उत्तर यह है कि मैं ईसा-मसीह के उपदेश को मानता हूं, जिसमें कसम खाने की साफ-साफ मनाई की गई है। देखिए मेथ्यू की गास्पल में परिच्छेद 5, पद 33-37 और जेम्स के एपिशेल में परिच्छेद 65, पद 12......

जनरल—नुकताचीनी करता है। अपना मन-माना अर्थ निकालता है।

सेक्रेटरी—(पढ़ना जारी है)''गास्पल में लिखा है, कसम कभी मत खाओ, जो बात है उसके लिए बस 'हां', बोलो और जो नहीं है उसके लिए सिर्फ 'नहीं' कह दो, और इससे अधिक जो कुछ होता है वह बुरा है। सेंट जेम्स के एपिशेल में है 'भाइयों, किसी के सामने आसमान या जमीन की कसम मत खाओ और न किसी दूसरी तरह की कसम खाओ, बस हां के लिए

'हां' कहो और नहीं के लिए 'नहीं' जिससे तुम लोभ में न फंसो। अव्वल तो बाइबिल में ही बिल्कुल साफ-तौर पर कसम खाने की मनाई है, लेकिन बाइबिल में अगर ऐसी आज्ञा न भी होती, तो भी, मैं मनुष्य की आज्ञा पालन करने की कसम नहीं खा सकता, क्योंकि ईसाई होने की हैसियत से मुझे हमेशा ईश्वर की मर्जी पर चलना चाहिए और उसकी मर्जी हमेशा ही आदमी की मर्जी के अनुकूल हो, ऐसा नहीं होता।......"

जनरल—बहस करता है। अगर मेरा बस चलता तो ऐसा कोई आदमी रहने नहीं पाता।

सेक्रेटरी—"मैं उन आदमियों के आज्ञा-पालन करने से इन्कार करता हूं, जो अपने आपको गवर्नमेंट के नाम से पुकारते हैं, क्योंकि...

जनरल—कितनी बड़ी गुस्ताखी है?

सेक्रेटरी—"क्योंकि वे आज्ञाएं पाप-मय और दुष्टतापूर्ण हैं, उनकी आज्ञा है कि मैं फौज में भरती होऊं और फौजी शिक्षा प्राप्त कर मनुष्यों की हत्या करने के लिए तैयार हो जाऊं हालांकि यह बात पुराने और नये दोनों ही टेस्टामेंटों में मना की गई है और खुद मेरी आज्ञा उसके विरुद्ध है। तीसरे सवाल।"

(कर्नल का प्रवेश, जनरल उससे हाथ मिलाता है।)

कर्नल—आप उसका बयान सुन रहे हैं।

जनरल—उसकी गुस्ताखी बेहद बढ़ी हुई है। हां, पढ़ो।

सेक्रेटरी—"तीसरा सवाल है कि किस वजह से मैंने अदालत के सामने ऐसे तीव्र और अरुचिकर शब्दों का प्रयोग किया। इसका जवाब है कि मैंने ईश्वर-सेवा के विचार से और उसके नाम पर जो धोखे-बाजी हो रही है उसकी पोल खोलने के उद्देश्य से ही उनका प्रयोग किया था, और मैं अपने इस विचार और उद्देश्य का आजन्म पालन करूंगा, और इसीलिए...।"

जनरल—बस, इतना काफी है। मैं इन वाहियात बातों को नहीं सुन सकता। जरूरत है कि इस तरह की बातों को जड़-मूल से उखाड़कर नष्ट कर दिया जाय। और इस बात का प्रयत्न करना चाहिए कि लोगों में यह बात न फैले और वह बहकने न पावें (**कर्नल से**) क्या आपने उससे बातचीत की थी?

कर्नल—मैं अबतक उसीसे बातें करता था। मैंने उसे शर्मिंदा करने की कोशिश की और उसे बताया कि यह हरकत उसके हक में निहायत मुजिर साबित होगी और उससे कोई फायदा उसे न मिलेगा। इसके अलावा मैंने उसके रिश्तेदारों का भी खयाल उसे दिलाया। वह बहुत ही उत्तेजित हो गया, मगर अपनी बात पर डटा रहा।

जनरल—अफसोस है, आपने उससे इतनी बातचीत की। हम फौजी लोग हैं, हमें बहस नहीं, काम करना चाहिए। उसे बुलाओ तो इधर।

(सेक्रेटरी और क्लर्क का प्रस्थान)

जनरल—**(बैठ जाता है)** नहीं कर्नल साहब, यह तरीका नहीं है। इस तरह के लोगों के साथ दूसरी तरह का सलूक करना चाहिए। सड़े हुए अंग को काटने के लिए जबरदस्त और पुर-असर तरीका इख्तियार करना चाहिए। एक रोगी भेड़ सारे गल्ले में संक्रामक रोग फैला देगी। ऐसे मामलों में किसी तरह लिहाज नहीं रखना चाहिए। वह शाहजादा है, उसके एक मां है और एक प्रेमिका है—इन बातों से हमें कोई मतलब नहीं। हमारे सामने तो, बस, वह एक सिपाही है, और हमें जार का हुक्म बजा लाना है।

कर्नल—मैंने समझा था कि शायद हमारे समझाने से वह रास्ते पर आ जावे।

जनरल—समझाने से! नहीं, कभी नहीं। सख्ती, बस सख्ती से ही ऐसे लोग राह पर आते हैं। मुझे ऐसे लोगों का तजुर्बा हो चुका है। उसे इस बात का अनुभव करा देना चाहिए कि वह बिल्कुल नाचीज है, अपदार्थ है–रथ के पहिए के नीचे वह केवल एक रज-कण है और वह इस रथ की गति में बाधा नहीं डाल सकता।

कर्नल—अच्छा, हम लोग कोशिश करके देखेंगे।

जनरल—**(नाराज होकर)** कोशिश करके देखने की जरूरत नहीं है। मुझे इस बात को आजमाने की जरूरत नहीं। मैंने चावालीस वर्ष जार की खिदमत में गुजारे हैं। मैंने जान हथेली पर रखकर खिदमत की है और अब भी कर रहा हूं। अब यह छोकरा आकर मुझे शिक्षा देना चाहता है और मेरे सामने धार्मिक लेक्चर झाड़ता है। वह किसी पादरी के पास जाकर ऐसी बातें करे। मेरे सामने तो वह सिपाही, या फिर एक कैदी है।

(बोरिस का प्रवेश। साथ में दो सिपाही हैं, सेक्रेटरी और क्लर्क

पीछे-पीछे आते हैं।)

जनरल—**(उंगली से दिखाकर)** लाओ, इसे उधर खड़ा करो।

बोरिस—मुझे कहीं आने की जरूरत नहीं है। जहां जी चाहेगा वहां मैं खड़ा रहूंगा, या बैठ जाऊंगा; क्योंकि मैं तुम्हारे शासन को नहीं मानता।

जनरल—चुप रहो! तुम शासन को नहीं मानते! देखो मैं अभी मनवाता हूं।

बोरिस—**(एक स्टूल पर बैठ जाता है)** तुम्हारा इतना चिल्लाना कितना अनुचित है?

जनरल—इसे उठाकर खड़ा कर दो **(सिपाही उसे उठाते हैं)।**

बोरिस—हां, यह तुम कर सकते हो। तुम मुझे मार डाल सकते हो, मगर तुम मुझसे कुछ मनवा नहीं सकते।

जनरल—खामोश, तुमसे एक बार कह दिया। मैं तुमसे जो कुछ कहता हूं उसे सुनो।

बोरिस—तुम्हें जो कुछ कहना है, उसे मैं बिल्कुल नहीं सुनना चाहता।

जनरल—यह पागल है। शफाखाने में ले जाकर इसकी जांच करनी चाहिए।

कर्नल—इसे जेण्डरमीन के दफ्तर में भेज कर जांच कराने का हुक्म हुआ था।

जनरल—अच्छा, तो इसे वहीं भेज दो। मगर इसे वर्दी पहना दो।

कर्नल—वह पहनता ही नहीं है। जोर करता है।

जनरल—इसे बांध दो। **(बोरिस से)** मैं जो कुछ कहता हूं मेहरबानी करके उसे सुनो। मुझे इस बात की पर्वा नहीं कि तुम्हारी क्या गति होगी, मगर मैं तुम्हारी खातिर तुम्हें सलाह देता हूं कि जरा सोच समझ कर देखो। तुम किसी किले में सड़ते रहोगे और किसी को कुछ भी फायदा नहीं पहुंचा सकोगे। इन बातों को छोड़ दो। तुमने बिगड़कर बातें कीं, इसीलिए मैं भी बिगड़ पड़ा। (**कंधे पर हाथ रखकर**) जाओ, कसम खा लो, और इस वाहियातपन को छोड़ दो। (**सेक्रेटरी से**) क्या पादरी साहब मौजूद हैं? (**बोरिस से**) क्यों, क्या कहते हो? (**बोरिस खामोश है**) तुम उत्तर क्यों नहीं देते? बेहतर है, तुम मेरे कहने के मुताबिक काम करो। तुम कोड़ा मारकर डण्डे को नहीं तोड़ सकते। तुम उन विचारों को दिल में रखकर किसी तरह मियाद पूरी कर दो। तुम्हारे साथ बल-प्रयोग नहीं करेंगे। क्यों?

बोरिस—मुझे जो कुछ कहना था, कह दिया। अब मुझे कुछ नहीं कहना।

जनरल—देखो, तुमने लिखा है कि बाइबिल में इस बात का वर्णन है। पादरी लोग इनसब बातों को अच्छी तरह से जानते हैं। तुम उनसे बातचीत करके निर्णय कर सकते हो। बस यही ठीक है। अच्छा, बंदे। मैं आशा करता हूं कि दुबारा मिलने पर, मैं तुम्हें जार की फौज में भरती हो जाने पर बधाई दे सकूंगा। पादरी साहब को यहां बुला लाओ।

(प्रस्थान, साथ ही कर्नल और सेक्रेटरी जाते हैं।)

बोरिस—**(क्लर्क और सिपाहियों से)** देखो, वह तुम्हें किस तरह धोखे में डालते हैं। उनकी बात मत मानो। अपनी बंदूकें रख दो और नौकरी छोड़कर चले जाओ। वह शायद तुम्हें कोठरी में बंद करके कोड़े लगायेंगे। लगाने दो। यह कोड़े खाना इतना बुरा नहीं जितना कि इन धोखेबाजों की नौकरी करना।

क्लर्क—मगर भला, फौज के बिना काम किस तरह चलेगा? यह तो असंभव है।

बोरिस—यह सोचना हमारा काम नहीं है। हमें तो यही देखना है कि ईश्वर की क्या आज्ञा है, और वह हमसे किस बात की आशा रखता है?

एक सिपाही—मगर फिर लोग ''ईसाई-फौज'' का नाम कैसे लेते हैं?

बोरिस—बाइबिल में इसका कहीं जिक्र नहीं। यह सब इन लोगों की मन गढ़ंत और चालबाजी है।

(क्लर्क के साथ एक जेन्डरमी अफसर का प्रवेश)

अफसर—क्या प्रिन्स चेरमशेनव नाम का नया सैनिक यहीं है?

क्लर्क—जी हां, यहीं है।

अफसर—मेहरबानी करके इधर आइए। क्या आप ही वह प्रिंस बोरिस चेरमशेनव हैं—जो शपथ खाना अस्वीकार करते हैं।

बोरिस—हां, मैं ही हूं।

अफसर—**(बैठता है और सामने बैठ जाने का इशारा करता है।)** मेहरबानी करके बैठ जाओ।

बोरिस—मैं समझता हूं, हमारी बातचीत बिल्कुल बेकार होगी।

अफसर—मैं तो ऐसा नहीं समझता। कम-से-कम आपके हक में बेकार साबित नहीं होगी। देखिए, बात यह है, मुझे सूचना मिली है कि आप

फौजी नौकरी करना और कसम खाना अस्वीकार करते हैं, इसलिए आप पर क्रांतिकारी होने का संदेह है और मैं इसी बात का अनुसंधान करना चाहता हूं। अगर यह बात सच है, तो हमें आपको नौकरी से हटाकर बगावत में आपने जैसा हिस्सा लिया उसके मुताबिक आपको कैद या जिला-वतन करना पड़ेगा। और अगर यह बात ठीक नहीं तो हम आपको फौजी अफसरों के हाथ में छोड़ देंगे। देखिए, मैं आपसे बिल्कुल साफ-साफ बातें करता हूं। और, आशा है, आप भी मेरे साथ वैसा ही व्यवहार करेंगे।

बोरिस—अव्वल तो मैं उन लोगों का विश्वास नहीं कर सकता जो इस तरह की बरदी बगैरह पहनते हैं। दूसरे, आपका पेशा ऐसा है कि जिसकी मैं इज्जत नहीं कर सकता और जिससे मुझे सख्त नफरत है। मगर मैं आपके सवालों का जवाब देने से इंकार नहीं करता। आप क्या पूछना चाहते हैं?

अफसर—अव्वल तो, आप अपना नाम, पेशा और मजहब बताइए।

बोरिस—आपको यह सब मालूम है, इसलिए मैं जवाब नहीं दूंगा। हां, सिर्फ एक सवाल जरूरी है। मैं "कट्टर-ईसाई" नहीं हूं।

अफसर—तब आपका क्या मजहब है?

बोरिस—मैंने उसका कोई नाम नहीं रखा है।

अफसर—मगर फिर भी ......?

बोरिस—अच्छा तो, ईसाई-धर्म; 'पर्वत पर के उपदेश' के अनुसार।

अफसर—लिख लो (**क्लर्क लिखता है**) आप किसी जाति या राष्ट्र से संबंध रखते हैं?

बोरिस—किसी से कोई संबंध नहीं है। मैं अपने को केवल मनुष्य और ईश्वर का सेवक समझता हूं।

अफसर—तुम अपने को रूसी-राष्ट्र का एक सदस्य क्यों नहीं मानते हो?

बोरिस—क्योंकि मैं किसी राष्ट्र को स्वीकार नहीं करता।

अफसर—स्वीकार नहीं करने से आपका क्या मतलब है? क्या आप उन्हें नष्ट कर देना चाहते हैं।

बोरिस—बेशक, मैं उन्हें नष्ट कर देना चाहता हूं और इसके लिए कोशिश कर रहा हूं।

अफसर—(**क्लर्क से**) इसे भी लिख लो (**बोरिस से**) आप किस तरह की कोशिश करते हैं ?

बोरिस—मैं धोखेबाजी और चालबाजियों की पोल खोलता हूं और सत्य का प्रचार करता हूं। आप, जिस वक्त आये मैं इन सिपाहियों को यही समझा रहा था कि इनकी चालबाजियों में मत फंसो।

अफसर—मगर समझाने और पोल खोलने के सिवा क्या आप दूसरे तरीकों से भी काम लेना पसंद करते हैं ?

बोरिस—नहीं, मैं सिर्फ नापसंद ही नहीं करता, बल्कि हर तरह की हिंसा को पाप समझता हूं। और सिर्फ हिंसा अथवा बल-प्रयोग को ही नहीं, बल्कि हर तरह के गुप्त-कार्यों को और चालबाजियों...

अफसर—इसको लिख लो। अच्छी बात है। अब मेहरबानी करके आप बताइए कि आप किस-किसको जानते हैं ? क्या आप आइवशेंको से परिचित हैं ?

बोरिस—नहीं।

अफसर—क्लीनको ?

बोरिस—मैंने उसका नाम सुना है, मगर कभी उससे मिला नहीं।

(पादरी का प्रवेश; पादरी बूढ़ा है, क्रास पहने हुए है, हाथ में बाइबिल है। क्लर्क उसके पास जाकर आशीर्वाद ग्रहण करता है।)

अफसर—बस, इतना ही काफी है। मैं समझता हूं कि आप खतरनाक आदमी नहीं हैं, और हमारे शासन-विभाग के अंदर नहीं आते हैं। मैं चाहता हूं, आप जल्दी रिहा हो जायं। अच्छा वंदे।

(हाथ मिलाता है)

बोरिस—एक बात मैं आप से कहना चाहता हूं। माफ कीजिए, मगर मुझसे कहे बिना नहीं रहा जाता। आपने इस दुष्टता-पूर्ण क्रूर-वृत्ति को क्यों पसंद किया है ? मैं आपको सलाह दूंगा कि आप इसे छोड़ दें।

अफसर—(**मुस्कराता है**) आपकी मेहरबानी का मैं शुक्रिया अदा करता हूं। इस बारे में मेरी राय आपसे नहीं मिलती। मैं आदाबअर्ज करता हूं। (**पादरी से**) पादरी साहब मैं अपनी जगह आपको सौंपता हूं।

(क्लर्क के साथ प्रस्थान)

पादरी—तुम अपने ईसाई-धर्म का पालन न करके और जार तथा मातृभूमि की

सेवा से इंकार करके हाकिमों को क्यों इतना नाखुश करते हो?

बोरिस—चूंकि मैं ईसाई-धर्म का पालन करना चाहता हूं, इसलिए मैं सैनिक नहीं बनना चाहता।

पादरी—क्यों नहीं चाहते हो? देखो, यह लिखा है, ''दोस्त के लिए जान दे देना'' सच्चे ईसाई का धर्म है।

बोरिस—हां, ''अपनी जान दे देना'' न कि दूसरे आदमी की जान लेना। बस, यही तो मैं करना चाहता हूं—मैं अपनी जान देने को तैयार हूं।

पादरी—ऐ नौजवान आदमी, तुम्हारा कहना ठीक नहीं है। जान ने सिपाहियों से कहा था—

बोरिस—इससे तो सिर्फ यह साबित होता है कि उन दिनों में भी सिपाही लोग लूटते थे और जान ने उन्हें ऐसा करने से मना किया।

पादरी—अच्छा, तुम कसम क्यों नहीं खाते?

बोरिस—आप जानते हैं, बाइबिल में कसम खाना मना है।

पादरी—बिल्कुल नहीं। तुम जनाते हो, एक बार पाइलेट ने ईसा-मसीह को कसम दिलाकर पूछा था कि वह सचमुच ईसा-मसीह है। ईसा-मसीह ने जवाब में कहा था, ''हां मैं वही हूं।'' इससे सिद्ध होता है कि कसम खाना मना नहीं है।

बोरिस—तुम्हें बूढे होकर ऐसी बात करते लज्जा नहीं आती?

पादरी—मेरा कहा मानो, हठ मत करो। हम और तुम दुनिया को बदल नहीं सकते। बस, शपथ ले लो और आराम से रहो। यह बात जानने का काम गिरजा को ही सौंप दो कि पाप किसमें है और किसमें नहीं?

बोरिस—तुम्हें सौंप दें। क्या तुम्हें अपने सिर पर इतना पाप का बोझा लादते डर नहीं लगता है?

पादरी—कैसा पाप? बचपन से ही मैं धर्म में श्रद्धा रखता हूं और तीस साल से मैं पादरी का कार्य कर रहा हूं। इसलिए मुझे कोई पाप लग ही नहीं सकता।

बोरिस—तुम इतने सारे लोगों को जो धोखा देते हो इसका पाप फिर किसको लगता है? इन बेचारों के दिमाग में क्या भरा हुआ है? **(सिपाहियों की ओर)**

पादरी—ऐ नौजवान आदमी, हम तुम कभी इस बात का फैसला नहीं कर

सकते। हमारा काम यही है कि हम अपने से बड़ों की आज्ञा मानें।

बोरिस—मुझे अकेला रहने दो। मुझे तुमपर अफसोस आता है और मैं कहता हूं कि तुम्हारी बातें सुनकर मुझे घृणा होती है। अगर तुम इस जनरल की तरह होते तो कुछ परवा नहीं थी, मगर तुम क्रास लटकाकर, बाइबिल लेकर ईसा-मसीह के नाम की दुहाई देकर, ईसा-मसीह की शिक्षा के विरुद्ध मुझे चलाना चाहते हो! जाओ (**उत्तेजित होकर**) हटो! मेरे पास से चले जाओ सिपाहियों, मुझे कोठरी में बंद कर दो। मैं किसी से मिल न सकूं। मैं थक गया हूं—बेहद थक गया हूं।

पादरी—यह बात है, तो मैं जाता हूं वंदे।

(सेक्रेटरी का प्रवेश)

सेक्रेटरी—कहिए?

पादरी—बड़ा ही हठ-धर्मी और बड़ा ही उद्दण्ड है।

सेक्रेटरी—तो वह शपथ लेने और नौकरी करने से इंकार करता है?

पादरी—यह किसी तरह राजी नहीं होगा।

सेक्रेटरी—तब फिर उसे शफाखाने में भेजना होगा।

पादरी—और कह दिया जायगा कि वह बीमार है? बेशक यह ठीक होगा, नहीं तो उसकी देखा-देखी और लोग भी बहक जायंगे।

सेक्रेटरी—मुझे हुक्म मिला है कि इसे मस्तिष्क-विकारवाले विभाग में निरीक्षण के लिए रखा जाय।

पादरी—ठीक है, आदाब अर्ज करता हूं। (**प्रस्थान**)

सेक्रेटरी—(**बोरिस के पास जाकर**) आइए, मुझे हुक्म मिला है कि मैं आपको पहुंचा दूं...

बोरिस—कहां?

सेक्रेटरी—अव्वल तो शफाखाने में, जहां आप शांति से रहेंगे और अच्छी तरह से सोच-विचार सकेंगे।

बोरिस—मैंने बहुत पहले ही सब-कुछ सोच विचार लिया है। मगर आइए, हम लोग चलें।

(प्रस्थान)

तीसरा दृश्य

(शफाखाने का कमरा, हेड डाक्टर, असिस्टेंट डाक्टर और एक अफसर, रोगी चारपाई पर बैठा है, वार्डर वर्दी पहने खड़े हैं।)

डाक्टर—देखो, तुम्हें उत्तेजित नहीं होना चाहिए, मैं खुशी से तुम्हें शफाखाना छोड़कर चले जाने की आज्ञा देता, मगर तुम खुद ही जानते हो, आजादी तुम्हारे लिए खतरे से खाली नहीं है। अगर मुझे विश्वास होता कि बाहर तुम्हारी अच्छी तरह खबरगिरी...

रोगी—आप समझते हैं, मैं फिर शराब पीने लगूंगा ? नहीं, मैं काफी शिक्षा पा चुका हूं। मगर जो दिन मैं अब यहां गुजारता हूं वह मुझे हानि ही पहुंचाता है। **(उत्तेजित होकर))** आपका जो कर्तव्य है, आप बिल्कुल उसके विरुद्ध कार्य कर रहे हैं। आप बड़े ही निर्दयी हैं, आप जो करें सो थोड़ा है।

डाक्टर—उत्तेजित मत होओ।

(वार्डरों को इशारा करता है, वह लोग पीछे से आते हैं।)

रोगी—आप स्वतंत्र हैं, इसलिए आप मजे से बहस कर सकते हैं; मगर हम क्या करें, जबकि हमें पागलों के बीच रहने को मजबूर किया जाता है। **(वार्डरों से)** तुम क्या करना चाहते हो ? चलो, हटो यहां से।

डाक्टर—मैं आपसे प्रार्थना करता हूं, आप जरा शांत रहिए।

रोगी—मगर मैं आपसे प्रार्थना और अनुरोध करता हूं कि आप मुझे स्वतंत्र कर दीजिए!

(चिल्लाता है, और डाक्टर पर झपटता है, मगर वार्डर उसे पकड़ लेते हैं, झगड़ा होता है, उसके बाद उसे बाहर ले जाते हैं।)

असिस्टेंट डाक्टर—यह देखिए फिर शुरू हो गया। इस वक्त तो वह आप पर ही झपट पड़ा।

हेडडाक्टर—नशे का असर है, कुछ भी नहीं किया जा सकता। मगर अब हालत कुछ बेहतर हैं।

(सेक्रेटरी का प्रवेश)

सेक्रेटरी—आदाबअर्ज है, जनाब।

हेड-**डाक्टर**—आदाबअर्ज।

सेक्रेटरी—मैं प्रिन्स बोरिस चेरमशेनव नाम के एक मजेदार आदमी को आपके पास लाया हूं, वह हाल में ही फौज में भरती हुआ है, मगर धार्मिक कारणों से सैनिक सेवा करना अस्वीकार करता है। वह जेण्डरमीस के पास भेजा गया था, मगर वह कहते हैं कि राजनैतिक षड्‌यंत्रों में सम्मिलित न होने के कारण वह हमारे शासन-विभाग में नहीं आता है। पादरी ने भी समझाया, मगर सब बेकार हुआ।

हेड डाक्टर—(**हँसकर**) और उसके बाद, हस्ब-मामूल आप उसे यहां ले आये कि जिसे शायद आप अपील की सबसे ऊंची अदालत समझते हैं। अच्छा, लाइए।

(असिस्टेंट डाक्टर का प्रस्थान)

सेक्रेटरी—कहते हैं कि वह एक उच्च-शिक्षा प्राप्त मनुष्य है और एक अमीर लड़की के साथ उसका विवाह होनेवाला है। यह बिल्कुल अजीब बात है। मैं वास्तव में समझता हूं कि यह स्थान उसके योग्य ही है।

हेड डाक्टर—उसपर किसी बात की धुन सवार है।

(बोरिस अन्दर लाया जाता है)

हेड डाक्टर—आइए, आइए। मेहरबानी करके तशरीफ रखिए। हम लोग कुछ बात-चीत करेंगे। (**सेक्रेटरी से**) आप मेहरबानी करके जाइए (**सेक्रेटरी जाता है**)

बोरिस—मैं आपसे एक प्रार्थना करता हूं कि यदि आप मुझे कहीं बंद करना चाहते हैं तो मेहरबानी करके शीघ्र ही बंद कर दीजिए ताकि मैं कुछ आराम कर सकूं।

हेड डाक्टर—माफ कीजिए, हमें नियमानुसार काम करना पड़ता है। बस, मैं थोड़े-से ही सवाल करूंगा। आपको क्या हुआ? आपको किस बात की शिकायत है?

बोरिस—मुझे कुछ भी नहीं हुआ है, न मुझे कोई शिकायत है। मैं बिल्कुल भला-चंगा हूं।

हेड डाक्टर—मगर आप दूसरे लोगों का-सा व्यवहार तो नहीं करते?

बोरिस—मैं अपनी आत्मा के अनुसार व्यवहार करता हूं।

हेड डाक्टर—देखिए, आपने फौजी नौकरी करने से इन्कार कर दिया। आखिर,

आपने किस वजह से ऐसा किया?

बोरिस—मैं ईसाई हूं, इसलिए हत्या नहीं कर सकता।

हेड डाक्टर—मगर दुश्मनों से अपने देश की रक्षा करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है, और सामाजिक शृंखला का विध्वंस करनेवाले को रोकना भी जरूरी है।

बोरिस—कोई हमारे देश पर आक्रमण नहीं कर रहा है। गवर्नर अथवा राज-कर्मचारी ही अधिक संख्या में सामाजिक शृंखला को विध्वंस करनेवाले होते हैं, बनिस्बत उन लोगों के कि जिन्हें वे पकड़ कर कैद करते हैं और सताते हैं।

हेड डाक्टर—जी, आपका मतलब क्या है?

बोरिस—मेरा मतलब यह है। सब बुराइयों की जड़ शराब है, इसे खुद गवर्नमेंट बेचती है; झूठे और जालिम मजहब का प्रचार भी गवर्नमेंट ही करती है और यह फौजी नौकरी, जो वह मुझसे कराना चाहते हैं और जो लोगों को नीति-भ्रष्ट और पतित बनाने का मुख्य साधन है-यह भी इसी गवर्नमेंट के हाथ में है।

हेड डाक्टर—तब आपकी राय में गवर्नमेंट अर्थात् शासन-संस्था और राष्ट्र अनावश्यक हैं।

बोरिस—यह तो मैं नहीं जानता; मगर यह बात मैं खूब अच्छी तरह से जानता हूं कि मुझे किसी बुराई में भाग नहीं लेना चाहिए।

हेड डाक्टर—मगर फिर दुनिया का क्या हश्र होगा? क्या ईश्वर ने हमें बुद्धि इसलिए नहीं दी है कि हम दूरदर्शिता से काम लें?

बोरिस—ईश्वर ने बुद्धि इसलिए भी दी है कि हम इस बात को समझें कि सामाजिक शृंखला की रक्षा हिंसा के द्वारा नहीं बल्कि नेकी के द्वारा करनी चाहिए; और इसलिए भी कि एक आदमी का किसी बुराई में भाग लेने से इंकार कर देना किसी तरह खतरनाक नहीं हो सकता।

हेड डाक्टर—अच्छा, अब जरा मुझे जांच करने दीजिए। क्या आप मेहरबानी करके लेट सकते हैं? **(उसको छूकर)** यहां दर्द तो नहीं होता?

बोरिस—नहीं।

हेड डाक्टर—और न यहां?

बोरिस—नहीं।

हेड डाक्टर—जरा गहरी सांस तो लीजिए। अब जरा दम साध लीजिए। गुस्ताखी माफ हो। **(एक फीता लेकर उसकी पेशानी और नाक नापता है।)** अब मेहरबानी करके आप जरा आंख बंद करके चलिए।

बोरिस—आपको यह सब करते हुए शर्म नहीं आती ?

हेड डाक्टर—आप कह क्या रहे हैं ?

बोरिस—यह सब वाहियात है। आप जानते हैं कि मैं बिल्कुल स्वस्थ हूं और मैं यहां इसलिए भेजा गया हूं कि मैं उनके दुष्कर्मों में सम्मिलित होना नहीं चाहता। और चूंकि मैंने जो कुछ कहा है वह बिल्कुल सच है और उसका यह कोई जवाब नहीं दे सकते, इसीलिए वह मुझे पागल समझने का बहाना करके लोगों को भुलावे में डालना चाहते हैं। और आप उनको इन वाहियात बातों में मदद देते हैं। यह बहुत ही घृणित और लज्जास्पद है।

हेड डाक्टर—तो आप टहलना नहीं चाहते ?

बोरिस—नहीं, कभी नहीं! आप जबरदस्ती से चाहे जो कराइए, मगर मैं अपने-आप कुछ नहीं करूंगा। **(तेजी से)** मुझे अकेले में रहने दीजिए।

(डाक्टर घंटी बजाता है, दो वार्डरों का प्रवेश)

हेड डाक्टर—उत्तेजित मत होओ। मैं जानता हूं कि आप बहुत थक गये हैं। क्या आप मेहरबानी करके अपने वार्ड को जायंगे ?

(असिस्टेंट डाक्टर का प्रवेश)

असिस्टेंट—चेरमशेनव से मिलने के लिए कुछ लोग आये हैं।

बोरिस—कौन लोग हैं ?

असिस्टेंट—निकोलस और उनकी लड़की।

बोरिस—मैं उनसे मिलना चाहता हूं।

हेड डाक्टर—न मिलने की कोई वजह भी नहीं है। उन्हें अंदर बुलालो। आप उनसे यहीं मिल लीजिए।

(प्रस्थान, पीछे-पीछे असिस्टेंट और वार्डर जाते हैं, निकोलस और ल्यूबा का प्रवेश, शाहजादी दरवाजे से झांकती है और कहती है— ''तुम चलो, मैं पीछे से आऊंगी'')

ल्यूबा—**(सीधी बोरिस के पास जाती है, उसका हाथ अपने हाथों में**

लेकर चूमती है) अभागे बोरिस?

बोरिस—तुम मेरे लिए दु:ख न प्रकट करो। मुझे अत्यंत हर्ष, अत्यंत आनंद और अत्यंत आह्लाद है। आप कैसे हैं?

(निकोलस का हाथ चूमता है)

निकोलस—मैं तुमसे खासकर एक बात कहने को आया हूं। सबसे पहली बात यह है कि ऐसे मामलों में हद से ज्यादा बढ़ जाना काफी दूर न जाने से भी अधिक बुरा है। इस मामले में तुम्हें वही करना चाहिए जो बाइबिल में लिखा है, और पहले से ही इस तरह पेश-बंदी नहीं करना चाहिए, कि मैं यह कहूंगा या ऐसा करूंगा।''जब वे तुम्हें गिरफ्तार कर लें, तो तुम यह मत सोचो कि तुम क्या बोलोगे और किस तरह बोलोगे; क्योंकि ऐसे मौके पर तुम नहीं बोलते हो बल्कि तुम्हारे स्वर्गीय पिता की आत्मा ही तुम्हारे द्वारा बोलती है।'' अर्थात् तुम किसी काम को महज इसलिए मत करो कि तुमने खूब सोच विचारकर उस काम को करने का निश्चय कर लिया है, बल्कि उसी वक्त उस काम में हाथ लगाओ कि जब तुम्हारा अंत:करण और तुम्हारी आत्मा उस काम के करने की प्रेरणा करे, और तुम्हें ऐसा महसूस हो कि तुम उस काम को किये बिना रह ही नहीं सकते।

बोरिस—मैंने ऐसा ही किया है। मैंने यह सोचा नहीं था कि मैं नौकरी करने से इंकार कर दूं, मगर जब मैंने यह धोखेबाजियां और पुलिस की चालाकियां देखीं, जब मुझे न्याय की नृशंसता और अफसरों की निरंकुशता मालूम हुई तब मैंने जो कुछ कहा वह मुझसे कहे बिना रहा नहीं गया। पहले, शुरू-शुरू में तो, मुझे भय लगा, मगर बाद को तो मेरा दिल हिम्मत और खुशी से भर गया।

(ल्यूबा बैठ जाती है और रोती है)

निकोलस—सबसे मुख्य बात यह है कि प्रशंसा के लिए और लोगों की सुसम्मति प्राप्त करने के लिए कोई काम न करना। अपने बारे में तो मैं साफ तौर से कहता हूं कि अगर तुम इसी वक्त शपथ लेकर नौकरी में भरती हो जाओ, तो मैं तुम्हें पहले से किसी तरह कम नहीं, बल्कि, अधिक ही प्यार करूंगा और पहले से अधिक आदर की दृष्टि से देखूंगा; क्योंकि बाह्य-जगत् में जो कुछ होता है वह महत्त्वपूर्ण नहीं है, महत्त्व तो उसी का है कि जो

आत्मा के अंदर विस्फूर्तिमय विकास होता है।

बोरिस—बेशक, क्योंकि आत्मा के अंदर जो कुछ होता है, उसका प्रभाव बढ़ने से बाह्य-जगत् में परिवर्तन अवश्य होगा।

निकोलस—मुझे जो कुछ कहना था, वह मैं कह चुका। तुम्हारी मां आई हैं। वह बहुत परेशान हैं। वह जो कुछ कहती हैं, अगर तुम कर सकते हो तो करो-बस; यही मैं तुमसे कहना चाहता था।

(नेपथ्य में रोने की आवाज, एक पागल अंदर घुस आता है। वार्डर उसे पकड़ ले जाते हैं।)

ल्यूबा—कितनी भयानक जगह है! और तुम्हें यहीं रहना होगा? **(रोती है)**

बोरिस—मुझे इस बात का डर नहीं है और सच पूछो तो अब मुझे किसी बात का डर नहीं रहा। मेरा दिल खुशी से भरा हुआ है; बस, मुझे तुम्हारा ही ख्याल है। क्या तुम मेरी खुशी बढ़ाने में सहायता दोगी?

ल्यूबा—क्या मैं यह देखकर खुश हो सकती हूं?

निकोलस—नहीं, खुश नहीं, खुश होना असंभव है। मैं खुद खुश नहीं हूं। मैं उसकी वजह से दुखी हूं और खुशी से उसकी जगह लेने को तैयार हूं। मगर, यद्यपि मैं दु:खी हूं, फिर भी मैं जानता हूं कि इसमें भलाई है।

ल्यूबा—हो सकती है। मगर वह इन्हें छोड़ेंगे कब?

बोरिस—यह कोई नहीं कह सकता। मैं तो भविष्य का ध्यान भी नहीं करता। वर्तमान ही बहुत सुखदायक है और तुम उसे और भी सुखदायक बना सकती है।

(शाहजादी का प्रवेश)

शाहजादी—मैं अधिक देर नहीं ठहर सकती। **(निकोलस से)** क्या तुमने इसे समझाया? वह राजी है न? बोरिस, मेरे लाल, जरा मेरी तरफ देख, मुझ पर रहम कर। तीस वर्ष से मैं तेरा मुंह देखकर जीती हूं। मैंने पाल-पोसकर इतना स्याना किया, और अब, जबकि सब ठीक-ठाक हो गया, तू निर्मोही होकर हम सबको छोड़ता है। जेलखाना और बेइज्जती! अरे नहीं, बोरिया!

बोरिस—मां, मेरी बात सुनो।

शाहजादी—**(निकोलस से)** तुम कहते क्यों नहीं? तुमने ही उसे बरबाद किया है और तुम ही इसे समझाओ। यह सब चोचले तुम्हारे लिए ठीक हैं।

ल्यूबा, कुछ बोलो। इसे समझाओ तो सही।

ल्यूबा—मैं कुछ नहीं बोल सकती।

बोरिस—सुनो मां, दुनिया में कुछ ऐसी बातें हैं जो बिल्कुल ही असंभव है। मैं फौजी नौकरी नहीं कर सकता।

शाहजादी—तुम समझते हो कि तुम नहीं कर सकते। यह सब वाहियात है। सभी ने फौजी नौकरी की है और अब भी कर रहे हैं। तुमने और निकोलस ने मिलकर एक नए तरह का ईसाई-धर्म निकाला है। यह ईसाई-धर्म नहीं, बल्कि शैतानी-सिद्धांत है जो सबको दुःख देता है।

बोरिस—जो कुछ बाइबिल में लिखा है, वही हमारा मत है।

शाहजादी—बाइबिल में यह कुछ नहीं है और अगर है तो वह मूर्खतापूर्ण है। मेरे प्यारे बोरिस! मुझपर रहम करो। (**गर्दन से लिपटकर रोती है**) मेरा सारा जीवन दुःखमय है। मेरे जीवन में केवल एक ही आशा और सुख की किरण है, तुम उसी को नष्ट किये डालते हो। बोरिस मुझपर दया करो।

बोरिस—मां, यह मुझे बहुत ही कठिन और असह्य है। मगर, मैं तुम्हें कैसे बताऊं?

शाहजादी—देखो, अब इन्कार मत करो। कह दो, तुम नौकरी करोगे।

निकोलस—कह दो, तुम इसपर विचार करोगे। और तुम जरूर इसपर एक बार विचार करना।

बोरिस—अच्छी बात है। मगर मां, तुम्हें भी मुझपर तरस खाना चाहिए। यह मेरे लिए असह्य है। (**नेपथ्य में फिर रोने की आवाज**) तुम जानती हो कि मैं पागलखाने में हूं और डर है कि कहीं सचमुच ही पागल न हो जाऊं।

(हेड डाक्टर का प्रवेश)

हेड डाक्टर—श्रीमतीजी इसका खराब असर हो सकता है। आपका लड़का बहुत ही उत्तेजित अवस्था में है। मैं समझता हूं कि इस मुलाकात को खत्म करना चाहिए। आप बृहस्पतिवार और रविवार को मिलने के लिए आ सकती हैं। मेहरबानी करके बारह बजे से पहले आइए।

शाहजादी—अच्छी बात है, अच्छी बात है, मैं जाती हूं। बोरिया, मुझपर रहम खाकर इसपर फिर से विचार करो और गुरुवार को खुश-खबरी सुनाने के लिए तैयार रहना।

निकोलस—(**बोरिस से हाथ मिलाकर**) ईश्वर का नाम लेकर और यह समझकर कि जैसे तुम कल ही मरनेवाले हो, इस विषय पर फिर से विचार करके देखो। सत्य निर्णय पर पहुंचने का यही मार्ग है। अच्छा, वंदे।

बोरिस—(**ल्यूबा के पास जाकर**) और तुम मुझसे क्या कहती हो ?

ल्यूबा—मैं झूठ नहीं बोल सकती, और मेरी समझ में नहीं आता कि तुम क्यों अपने को और दूसरे सब लोगों को दु:ख देते और सताते हो। तुम्हारी बातें मेरी समझ में नहीं आतीं—और मैं तुम्हें कुछ कह नहीं सकती।

(रोती हुई बाहर जाती है। बोरिस के सिवाय सबका प्रस्थान)

बोरिस—(**अकेला**) मोह कितना कठिन, कितना असत्य है ? ईश्वर मेरी सहायता करो। (**प्रार्थना करता है**)

(चोगा लेकर वार्डर आते हैं)

चौथा अंक

पहला दृश्य

(एक साल बाद निकोलस के मास्कोवाले घर में नाच का इंतजाम हो रहा है। पियानो के चारों तरफ प्यादे गमले रखते हैं। मेरी, एक शानदार रेशमी पोशाक पहने अलेक्जेण्डरा के साथ आती है।)

मेरी—बॉल? नहीं, नहीं दिल बहलाने के लिए कुछ नाचना-गाना होगा। नौजवानों के लिए एक भोज भी होना चाहिए। मेरे बालकों ने जबसे मेकफवाले नाटकों में पार्ट लिया था तब से उन्हें हर कहीं नाच-पार्टियों में जाने के लिए निमंत्रण आते हैं। निमंत्रणों के बदले मुझे भी तो एक बार उन्हें निमंत्रित करना चाहिए।

अलेक्जेण्डरा—मुझे भय है, निकोलस इसे पसंद नहीं करता।

मेरी—इसके लिए भला मैं क्या करूं? **(प्यादे से)** उसे इधर रखो। **(अलेक्जेण्डरा से)** ईश्वर जानता है, मेरी खुशी इसी में है कि मैं उन्हें सुखी देखूं और किसी तरह का रंज न होने दूं। मैं देखती हूं कि अब वह इन बातों पर इतना जोर नहीं देते।

अलेक्जेण्डरा—नहीं, नहीं, सिर्फ अपने दिल की बात अब उस तरह जाहिर नहीं करता है। भोजन के बाद जिस वक्त वह अपने कमरे में चला गया, मैंने देखा कि वह बहुत ही अप्रसन्न और असंतुष्ट था।

मेरी—मैं क्या कर सकती हूं? आखिर, हम आदमी हैं और हमें आदमियों की तरह रहना होगा। हमारे सात बच्चे हैं; अगर घर में उनके हंसने-खेलने और जी बहलाने का कोई इंतजाम न होगा तो ईश्वर जाने वह क्या न कर उठायेंगे। खैर, ल्यूबा की तरफ से मैं अब बिल्कुल निश्चित और संतुष्ट हूं।

अलेक्जेण्डरा—क्या सब तय हो गया? क्या उसने विवाह का प्रस्ताव किया था?

मेरी—हां, बस तय ही समझिए। वह उससे बोला था और ल्यूबा ने स्वीकार कर लिया।

अलेक्जेण्डरा—इससे उसके दिल को और भी चोट पहुंचेगी।

मेरी—वह सब जानते हैं, उनसे कुछ छिपा थोड़े ही है।

अलेक्जेण्डरा—वह उसे पसंद नहीं करता है।

मेरी—(**प्यादे से**) फल को अलमारी में रख दो। किसे पसंद नहीं करता? अलेक्जेण्डरा मिकालोविच को? जी, वह उसे कभी पसंद नहीं कर सकते; क्योंकि वह उनके प्रिय सिद्धांतों के खण्डन की जीती-जागती मूर्ति है। वह बहुत ही हंस-मुख, नेक और दयालु-प्रकृति है और दुनिया के रंग-ढंग को अच्छी तरह जानता है। मगर बोरिस चेरमशनव! ओह, उसके मारे तो मुझे नींद नहीं आती; स्वप्न देखकर सोते से चौंक उठती हूं। मालूम नहीं, उस बेचारे की क्या गति हुई।

अलेक्जेण्डरा—लिसा उसे देखने गई थी। वह (**बोरिस**) अब भी वहीं है। वह कहती है कि बोरिस बहुत ही दुबला हो गया है और डाक्टरों को उसकी जान जाने और दिमाग में खलल पड़ जाने का डर है।

मेरी—हां, उनके विचारों की वजह से ही उसने अपनी जिंदगी को कुर्बान कर दिया है। भला, उसके जीवन को नष्ट करने से क्या फायदा है! मैं तो इसे कभी पसंद नहीं करती।

(पियानो बजानेवाले का प्रवेश)

मेरी—क्या आप पियानो बजाने के लिए आये हैं?

पियानोवाला—हां, मैं पियानो बजानेवाला हूं।

मेरी—मेहरबानी करके बैठ जाइए। अभी कुछ देर है। थोड़ी चाय पीजिए न?

पियानोवाला—नहीं, इस वक्त तो माफ कीजिए (**पियानो के पास जाता है।**)

मेरी—मैं इन बातों को पसंद नहीं करती। मैं बोरिस को चाहती थी; मगर फिर भी वह ल्यूबा के योग्य वर नहीं था—खास तौर से जब वह उनके कहे मुताबिक काम करने लगा।

अलेक्जेण्डरा—मगर फिर भी उसके विश्वास की दृढ़ता को देखकर आश्चर्य होता है। इस वक्त वह कैसी मुसीबतें सह रहा है? कर्मचारी कहते हैं कि जबतक वह सैनिक सेवा करना अस्वीकार करेगा तबतक वह या तो उसी जगह बंद रखा जायगा, या फिर किसी किले के तहखाने में डाल दिया जायगा, मगर उसकी जबान से वही जवाब निकलता है! लिसा कहती है कि इस हालत में भी वह बहुत प्रसन्न और आनंद से परिपूर्ण है।

मेरी—केवल अंध-विश्वास है। यह देखो, अलेक्जेण्डरा मिकालोविच आ गये।

(मिकालोविच का प्रवेश)

मिकालोविच—मालूम होता है, मैं बहुत जल्दी आ गया हूं।

(दोनों महिलाओं के हाथ चूमता है।)

मेरी—अच्छा ही हुआ।

मिकालोविच—ल्यूबा कहां है? उन्होंने निश्चय किया है कि आज खूब नाचकर गये वक्त की पूर्ति करेंगी और मैंने आज उन्हें सहायता देने का वचन दिया है।

मेरी—वह महफिल के इंतजाम में लगी हुई है।

मिकालोविच—तो मैं जाकर उनकी मदद कर सकता हूं?

मेरी—जरूर, आप शौक से जाइए।

(मिकालोविच जाना चाहता है। ल्यूबा का प्रवेश, उसके हाथ में कुर्सी की गद्दियां और कुछ फीते हैं)

ल्यूबा—ओहो, तुम आ गये; बड़ी अच्छी बात है, तुम मुझे मदद दे सकते हो। बैठकखाने में तीन गद्दियां और हैं, उन्हें जाकर ले आओ।

मिकालोविच—मैं अभी दौड़कर जाता हूं।

मेरी—देखो ल्यूबा, मेहमान लोग आनेवाले हैं, दोस्त लोग इस बारे में सवाल करेंगे। क्या मैं उन लोगों को सूचना दे दूं?

ल्यूबा—नहीं, मां, नहीं। लोग सवाल करेंगे तो करने दो। पिताजी इसे पसंद कहीं करेंगे।

मेरी—मगर वह जानते हैं; क्योंकि अबतक वह सब समझ गये होंगे। और फिर किसी-न-किसी वक्त उनसे कहना तो होगा ही। मैं समझती हूं कि आज ही इस विषय की सूचना दें तो अच्छा होगा।

ल्यूबा—नहीं-नहीं, मां, ऐसा न करना। इससे रंग-में-भंग हो जायगा। नहीं, इस विषय में तुम अभी कुछ न कहना।

मेरी—जैसी तुम्हारी मर्जी।

ल्यूबा—अच्छी बात है, मगर नाच खतम होने के बाद, दावत के ठीक शुरू में।

(मिकालोविच का प्रवेश)

ल्यूबा—क्यों, सब ले आये न?

मेरी—मैं जाकर जरा बच्चों को देखती हूं।

(अलेक्जेण्डरा के साथ प्रस्थान)

मिकालोविच—**(तीन गद्दियां लिये हुए है, जिन्हें वह ठोड़ी से सम्हालता है और रास्ते में कुछ चीजें गिराता है)** तुम तकलीफ न करो। ल्यूबा, रहने दो मैं उन्हें उठा लूंगा। तुमने गुलदस्ते तो बहुत-से बनाये हैं। बस मैं आज ठीक तरह से नृत्य में भाग ले सकूंगा। वानिया इधर आओ।

वानिया—**(बहुत-से फूल और गुलदस्ते लिये हुए)** यह लो, मैं सब उठा लाया हूं।

ल्यूबा—मैंने और मिकालोविच ने आज शर्त बदी है; देखें कौन जीतता है।

मिकालोविच—तुम्हारे लिए बड़ी आसानी है; क्योंकि तुम सब लोगों को जानते हो। मगर मुझे तो पहले-पहल युवती महिलाओं को प्रसन्न करना होगा। इसके मानी यह है कि दौड़ने से पहले ही तुम चालीस कदम आगे हो।

वानिया—मगर तुम 'भावी वर' हो और मैं बालक हूं।

मिकालोविच—नहीं भाई मैं अभी 'भावी वर' नहीं हूं, और मैं बालक से भी गया- गुजरा हूं।

ल्यूबा—वानिया! जरा मेरे कमरे से गोंद, सुई और कैंची तो ले आओ। मगर मेहरबानी करके कोई चीज मत तोड़ डालना।

वानिया—मैं सब चीजें तोड़ डालूंगा **(भाग जाता है)**

मिकालोविच—**(ल्यूबा का हाथ थामकर)** ल्यूबा इसे चूम सकता हूं? **(उसका हाथ चूमकर)** मैं बहुत ही सुखी हूं। प्यारी ल्यूबा, क्या मेरी आशा पूरी होगी? क्या तुम मुझे स्वीकार करके अपना दास बनाने की कृपा

करोगी? नाच के वक्त हमें बात करने का मौका मिलेगा? क्या मैं अपने घरवालों को तार दे दूं कि मेरी प्रार्थना स्वीकृत हो गई और मैं बहुत ही सुखी हूं।

ल्यूबा—हां, आज रात को।

मिकालोविच—बस, एक बात और है। निकोलससाहब को यह कैसा लगेगा? क्या तुमने उनसे कह दिया है?

ल्यूबा—नहीं, मैने उनसे कहा नहीं है, मगर अब कह दूंगी। वह उसी तरह उदासीन भाव से उसे सुन लेंगे जिस तरह कि वह अब परिवार के सब कामों को देख-सुन लेते हैं। वह यही कहेंगे, "जैसा तुम्हें अच्छा लगे वैसा करो।" मगर इसमें शक नहीं कि उनके दिल को चोट लगेगी।

मिकालोविच—क्योंकि मैं चेरमशेनव नहीं हूं।

ल्यूबा—हां, उनकी खातिर अभी तक मैं अपने दिल को दबाये और धोखा देती रही। यह इसलिए नहीं कि उनके प्रति मेरा प्रेम कम हो गया है, बल्कि इसलिए कि मैं झूठ नहीं बोल सकती। वह खुद ऐसा कहते हैं। मैं चाहती हूं कि इसी तरह जीवन बिताऊं।

मिकालोविच—और जीवन ही एक सत्य है। हां, चेरमशेनव का क्या हाल है?

ल्यूबा—**(उत्तेजित भाव से)** मेरे सामने उनका नाम मत लो। मैं उन्हें दोषी ठहराना चाहती हूं—उस वक्त दोषी ठहराना चाहती हूं, जब वह बेचारे मुसीबतें उठा रहे हैं; और जानती हूं कि यह सब इसलिए है कि मैं उनकी अपराधिनी हूं। बस, मैं इतना जानती हूं कि मेरे दिल में उनके प्रति एक तरह का प्रेम है, मैं समझती हूं कि वह प्रेम पहले के प्रेम से कहीं अधिक सच्चा और वास्तविक है।

मिकालोविच—ल्यूबा, क्या यह सत्य है?

ल्यूबा—तुम मुझसे यह कहलाना चाहते हो कि मैं तुम्हें उस सच्चे प्रेम के साथ प्यार करती हूं? मैं यह नहीं कहूंगी। मैं तुम्हें प्यार करती हूं, मगर यह प्यार दूसरी तरह का है-यह आदर्श-प्रेम नहीं है। वास्तव में न तो यही आदर्श प्रेम है और न ही वह। अगर किसी तरह इन दोनों का मिश्रण हो जाता तभी, मैं समझती हूं, सच्चे प्रेम का आनंद आता।

मिकालोविच—नहीं-नहीं, मुझे जो कुछ मिला है, मैं उसी से संतुष्ट हूं (**ल्यूबा**

का हाथ चूमता है) ल्यूबा!

ल्यूबा—(उसे हटाकर) नहीं, जल्दी से इन्हें छांट लेना चाहिए। लोग आने लगे हैं।

(शाहजादी, टानिया और एक छोटी लड़की का प्रवेश)

ल्यूबा—बैठिए, मां अभी आती हैं।

शाहजादी—क्या हमीं लोग सबसे पहले आये हैं?

मिकालोविच—कोई-न-कोई तो सबसे पहले आवेगा ही।

स्ट्यूपा—कल रात मैं समझा था इटेलियन सिनेमा में तुमसे जरूर मुलाकात होगी।

टानिया—हम लोग चाची के यहां गये थे इसलिए नहीं आ सके।

(विद्यार्थी, महिलायें, मेरी और एक काउन्टेस आती हैं।)

काउन्टेस—क्या हम लोग निकोलससाहब से नहीं मिल सकते?

मेरी—नहीं, वह पढ़ना छोड़कर हमारी महफिल में शरीक नहीं होते।

मिकालोविच—अच्छा अब शुरू कीजिए। **(ताली बजाता है, नाचने वाले अपनी जगह आकर नाचते हैं।)**

अलेक्जेण्डरा—(मेरी के पास जाकर) वह बहुत ही उत्तेजित हो गया। वह बोरिस से मिलने गया था और लौटकर आया तो देखा कि यहां महफिल लगी हुई है। वह चला जाना चाहता है। मैं उसके दरवाजे तक गई थी और उसे अलेक्जेण्डर पेट्रोविच से बातें करते हुए देखा।

मिकालोविच—महिलाओ, तैयार हो जाइए, सज्जनो आगे बढ़ो।

अलेक्जेण्डरा—उसने निश्चय कर लिया है कि इस घर में रहना उसके लिए असंभव है, वह घर छोड़कर जा रहा है।

मेरी—आह, यह आदमी कितना जालिम है?

(प्रस्थान)

दूसरा दृश्य

(निकोलस का कमरा; संगीत की आवाज दूर पर सुनाई पड़ती है। निकोलस ओवरकोट पहने हुए है। मेज पर एक खत रख देता है।

अलेक्जेण्डर पेट्रोविच फटे कपड़े पहने उसके साथ है।)

अलेक्जेण्डर पेट्रोविच—आप कुछ चिंता न करें; हम लोग काकेशिया तो बिना एक पैसा खर्च किये जा सकते हैं; और वहां आप काम कर सकते हैं।

निकोलस—तूला तक हम रेल पर सफर करेंगे और वहां से पैदल चलेंगे। अच्छा, मैं तैयार हूं। (**खत को मेज के बीच में रखकर दरवाजे तक जाता है, वहां मेरी को खड़ा देखता है।**) अरे, तुम यहां क्यों आ गई?

मेरी—क्यों आ गई? तुम्हें इस बज्र निठुराई से रोकने के लिए। तुम यह क्या कर रहे थे? घर क्यों छोड़े जाते हो?

निकोलस—इसीलिए कि मैं इस तरह नहीं रह सकता। मुझसे यह वीभत्स पतित जीवन नहीं सहा जाता।

मेरी—यह तो बहुत ही दु:ख-प्रद है। मेरा जीवन—जिसे मैंने तुम्हारी और बच्चों की सेवा के लिए ही अर्पण कर दिया, अब एकबारगी तुम्हें वीभत्स और पतित मालूम पड़ने लगा है। (**अलेक्जेण्डर पेट्रोविच को देखकर**) कम-से-कम इस आदमी को तो बाहर भेज दो, मैं नहीं चाहती कि कोई हमारी बातें सुने।

अलेक्जेण्डर पेट्रोविच—आप लोग बातें कीजिए, मैं जाता हूं।

निकोलस—अलेक्जेण्डर पेट्रोविच, जरा बाहर ठहरो, मैं अभी आता हूं।

(अलेक्जेण्डर पेट्रोविच का प्रस्थान)

मेरी—भला, तुम्हारा इसका क्या मेल है? वह तुम्हारी स्त्री से भी बढ़कर तुम्हें प्यारा क्यों है? कुछ समझ में नहीं आता। और तुम जा कहां रहे हो?

निकोलस—मैंने तुम्हारे लिए एक खत लिखकर रख दिया है। मैं बोलना नहीं चाहता था, क्योंकि यह मेरे लिए बहुत ही मुश्किल हो जाता है। लेकिन अगर तुम शांति से सुनना चाहती हो तो मैं शांति के साथ तुम्हें बताने की कोशिश करूंगा।

मेरी—नहीं, मैं यह कुछ नहीं समझती। तुम अपनी पत्नी को, जिसने अपना सर्वस्व तुम्हारे लिए निछावर कर दिया हो, क्यों दु:ख देते हो और सताते हो? क्यों उससे घृणा करते हो? मुझे बताओ, क्या मैं कभी बाल-नाच-पार्टी में जाया करती हूं, या मैंने और कोई बुरी बात की है। मेरा सारा

जीवन परिवार के कामों में ही लग रहा है। मैंने बच्चों को खुद ही दूध पिलाया, उनकी परवरिश की। पिछले साल उनकी पढ़ाई और घर के इंतजाम का सारा बोझ भी सर पर आन पड़ा है...।

निकोलस—(**बात काटकर**) मगर यह सब तुम्हारे सिर पर इसीलिए पड़ा कि तुम मेरे कहने के अनुसार नहीं रहना चाहतीं।

मेरी—मगर यह तो बिल्कुल असंभव है। चाहे किसी से पूछकर देखो। यह असंभव था कि बच्चों को अशिक्षित रहने दिया जाय, जैसाकि तुम रखना चाहते थे और यह मेरे लिए बहुत कठिन था कि मैं धोबी और रसोइये का काम खुद करूं।

निकोलस—यह तो मैंने कभी नहीं कहा।

मेरी—खैर, उसका मतलब कुछ इसी तरह का था। देखो, तुम ईसाई हो, तुम दूसरों के साथ नेकी करना चाहते हो और तुम कहते हो कि सब आदमियों को प्यार करते हो, लेकिन उस विचारी औरत को क्यों सताते हो, जिसने जन्मभर तुम्हारी सेवा में बिताया है।

निकोलस—मैं तुम्हें सताता किस तरह हूं? मैं तुम्हें प्यार करता हूं, मगर...

मेरी—तुम मुझे छोड़कर चले जा रहे हो। यह सताना नहीं तो और क्या है? यह सुनकर सब लोग क्या कहेंगे? बस यही कहेंगे कि या तो मैं खराब औरत हूं और या तुम पागल हो।

निकोलस—अच्छा, यही समझ लो कि मैं पागल हूं, मगर मुझसे इस तरह नहीं रहा जा सकता।

मेरी—मगर इसमें ऐसी भयानक बात कौन-सी है? अगर साल में एक बार (**और सिर्फ एक बार-क्योंकि मुझे डर था कि तुम उसे पसंद नहीं करोगे**) मैंने एक पार्टी दी, और वह भी बहुत छोटी और सादी-सी, जिसमें सिर्फ मानिया और बारबरा वासिलेबना को ही बुलाया तो वह भी तुम्हें पसंद न आया। उसे तुम इतना बड़ा अपराध समझते हो कि जिसके लिए मेरी बे-इज्जती और बदनामी होगी। सिर्फ बे-इज्जती ही नहीं, सबसे बुरी बात तो यह है कि उब तुम मुझे प्यार नहीं करते। तुम औरों को प्यार करते हो, सारी दुनिया को चाहते हो, और उस शराबी अलेक्जेण्डर पिट्रोविच तक को प्यार करते हो, दुनिया भर में एक मैं ही ऐसी बुरी, बदकिस्मत और गई-गुजरी हूं कि जिसे तुम प्यार

करना नहीं चाहते? तुम मुझे प्यार करो या न करो, मगर मैं तुम्हें अब भी चाहती हूं और तुम्हारे बगैर जी नहीं सकती। अरे निर्मोही! तुम यह क्यों करते हो? क्यों मुझे छोड़ते हो? (**रोती है**)

निकोलस—मगर तुम मेरे जीवन—मेरे आध्यात्मिक जीवन को समझना भी तो नहीं चाहतीं।

मेरी—मैं समझना चाहती हूं, मगर नहीं समझ पाती। मैं तो देखती हूं कि तुम्हारे ईसाई-धर्म ने तुम्हें मुझसे और बच्चों से घृणा करना सिखला दिया है; मगर मेरी समझ में नहीं आता कि किसलिए?

निकोलस—तुम देखती हो कि दूसरे लोग जरूर समझते हैं।

मेरी—कौन? अलेक्जेण्डर पेट्रोविच जो तुमसे रुपये पाता है।

निकोलस—वह और दूसरे लोग भी। टानिया और वासिली साहब। लेकिन अगर कोई भी नहीं समझता तो इससे भी कोई अंतर नहीं पड़ता।

मेरी—वासिली साहब अपने किये पर पछताते हैं और टानिया इस वक्त भी स्ट्यूपा के साथ नाच रही है।

निकोलस—मुझे यह सुनकर दु:ख हुआ; मगर इससे स्याही सफेदी में नहीं बदल जाती। मैं अपने जीवन को नहीं बदल सकता। मेरी! तुम्हें मेरी जरूरत नहीं है। मुझे जाने दो। मैंने कोशिश की कि तुम्हारे जीवन में भाग लेते हुए मैं उन सिद्धांतों का भी समावेश करूं जोकि मेरे लिए बहुत आवश्यक और प्रिय हैं; मगर मैं देखता हूं कि यह असंभव है। इसका नतीजा यही है कि मुझे और तुम्हें दोनों को दु:ख होता है। इससे मुझे केवल दु:ख ही नहीं होता है, बल्कि मैं जिस काम को करना चाहता हूं वह खराब हो जाता है। हरेक आदमी, यहांतक कि यह अलेक्जेण्डर पेट्रोविच तक, यह कह सकता है कि मैं मक्कार हूं—मैं बातें बघारता हूं, मगर कुछ करके नहीं दिखाता। मैं सादगी और गरीबी की शिक्षा देता हूं; मगर ऐशो-आराम से रहता हूं और बहाना यह करता हूं कि मैंने अपनी जायदाद स्त्री के नाम लिख दी है।

मेरी—तो तुम्हें डर इस बात का है कि लोग क्या कहेंगे? सचमुच तुम इस लोकापवाद की अवहेलना करके ऊंचे नहीं उठ सकते।

निकोलस—मुझे इसका भय नहीं है कि लोग क्या कहेंगे—उनकी बातें सुनकर

मुझे शर्म जरूर लगती है। मगर मुझे भय इस बात का है कि मैं ईश्वर के काम को खराब कर रहा हूं।

मेरी—यह तो तुम्हीं अक्सर कहते थे कि ईश्वर अपनी इच्छा को मनुष्यों के विरोध करने पर भी पूरा करके छोड़ता है। मगर इससे कोई मतलब नहीं। बोलो, तुम मुझसे क्या कराना चाहते हो?

निकोलस—यह तो मैं कई बार तुम्हें बता चुका हूं।

मेरी—मगर, निकोलस, तुम जानते हो कि यह असंभव है। जरा सोचो तो सही, ल्यूबा का ब्याह होनेवाला है, वानिया कालेज में भरती होने जा रहा है, मिसी और काटिया स्कूल में हैं। भला, मैं इनसब बातों को किस तरह रोक सकती हूं?

निकोलस—फिर भला, मैं क्या करूं?

मेरी—वही करो कि जिसे तुम अक्सर मनुष्य का कर्तव्य बताते थे। धैर्य धारण करो और प्रेम-पूर्वक व्यवहार करो। क्या यह तुम्हारे लिए बहुत मुश्किल है। बस, हम लोगों के साथ रहकर जो कुछ हो सके करो, मगर घर छोड़कर मत जाओ। बोलो, तुम्हें किस बात का दु:ख है?

(दौड़ते हुए वानिया का आना)

वानिया—मां, वे लोग तुम्हें बुला रहे हैं।

मेरी—बोल दो, मैं अभी नहीं आ सकती, जाओ-जाओ!

वानिया—जल्दी आना (**भाग जाता है**)।

निकोलस—तुम मेरे विचारों को पसंद नहीं करती और न उहें समझना ही चाहती हो।

मेरी—यह बात नहीं है कि मैं समझना नहीं चाहती। मगर मैं समझ ही नहीं पाती।

निकोलस—नहीं, तुम समझती नहीं और हम एक दूसरे से दूर होते जाते हैं। तुम मेरे हार्दिक भावों को पहचानो, अपने को मेरी स्थिति में रखकर देखो, फिर तुम सब समझ सकोगी। एक तो यहां का जीवन नितांत पतित है। तुम्हें यह शब्द बुरा लगता है; मगर जिस जीवन की नींव डकैती के ऊपर है, उसे मैं किसी दूसरे नाम से पुकार ही नहीं सकता। हमारा जीवन "डकैती-मय" है; क्योंकि जिस धन पर हम निर्भर हैं, वह उसी जमीन से

आता है जिसे हमने किसानों से चुराया या छीन लिया है। इसके अलावा मैं देखता हूं कि इस प्रकार का जीवन बच्चों को भी अध:पतित और चरित्रहीन बना रहा है। कहा है कि जो बच्चों को गुमराह करता है वह बड़ा पापी है। और मैं रोज अपनी आंखों से देखता हूं कि धीरे-धीरे बच्चे खराब और बरबाद हो रहे हैं। हरेक दावत से मेरे कलेजे में चोट लगती है।

मेरी—मगर यह सब तो पहले भी था। दुनिया में सभी जगह यह होता है।

निकोलस—लेकिन मुझसे यह नहीं हो सकता। जबसे मैंने समझ लिया कि हम सब भाई-भाई हैं तबसे यह फिजूलखर्ची, खुदगर्जी और लापरवाही मेरे दिल में कांटे की तरह खटकती है।

मेरी—यह सब तुम्हारे मन की बातें हैं। कोई अपने मन से जो चाहे सो बात निकाल सकता है।

निकोलस—(**तेजी से**) तुम कुछ समझती नहीं, यही तो बड़ी भयानक बात है। आज ही की बात है, सुनो। मैं आज अछूतों के मुहल्ले में गया, वहां मैंने एक छोटे-से दूधमुंहे बच्चे को भूख से मरता हुआ देखा, एक दुबला-पतला बूढ़ा आदमी भयंकर रोग से पीड़ित जमीन पर पड़ा हुआ था; उसके पास एक छोटी लड़की अकेली पड़ी रो रही थी; उसके पास न खाने को अन्न था न दवा मोल लेने को पैसा; बाहर सड़क पर उसकी मां सर्दी से कांपती हुई तन पर का भीगा कपड़ा सुखा रही थी; उसके पास कोई दूसरा कपड़ा न था और वह रह-रहकर खांसी के मारे बेदम हो रही थी, शायद उसे क्षय रोग हो गया है। घर आकर मैंने देखा—सब ऐशो-अशरत में मशगूल हैं, नौकरों की एक पलटन काम करने के लिए तैयार है, अपने सुख के लिए हमें किसी दूसरे का खयाल भी नहीं है। मैं बोरिस से मिलने गया कि जिसने सच्चाई के खातिर अपना सर्वस्व निछावर कर दिया। बोरिस—शुद्ध, उच्च और दृढ़ प्रतिज्ञ बोरिस तरह-तरह की मुसीबतें उठा रहा है। गवर्नमेंट उससे छुटकारा पाने के लिए जान-बूझकर उसके दिमाग को नुकसान पहुंचाकर उसे बरबाद कर देना चाहती है। मैं जानता हूं और गवर्नमेंट को भी मालूम है कि उसका दिल कमजोर है, इसलिए वह पागलों के बीच में ले जाकर रखते हैं और उसे हर तरह से सताकर उत्तेजित करते हैं। यह दृश्य भयंकर महा भयंकर है। और जब मैं घर वापस

आया तो सुना कि हमारे घरभर में, जिसने सच्चाई को समझा था, न केवल सच्चाई को ही छोड़ दिया बल्कि उस आदमी को भी त्याग दिया, जिसे प्रेम-दान देकर ब्याहने का वादा किया था और अब वह ब्याह करना चाहती है एक झूठे मक्कार से।

मेरी—यही तुम्हारी ईसाइयत है ?

निकोलस—मैं जानता हूं कि यह मेरे अयोग्य है और मैं दोषी हूं; मगर तुमसे वही कहता हूं कि तुम अपने को मेरी स्थिति में रखकर देखो। मेरा मतलब है कि वह सच्चाई से फिर गई।

मेरी—तुम कहते हो "सचाई से फिर गई" मगर और लोग, अधिकांश लोग, कहते हैं "भ्रम से निकल गई"। देखा, वासिलीसाहब भी एक बार बहक गये थे मगर फिर गिरजा को जाने लगे।

निकोलस—यह असंभव है।

मेरी—उन्होंने लिसा को लिखा है। वह तुम्हें खत दिखायगी। इस तरह का विचार-परिवर्तन बहुत ही अस्थायी होता है, टानिया के मामले में भी ऐसा ही हुआ। मैं उस आदमी का जिक्र भी नहीं करना चाहती; क्योंकि वह तुम्हारी बात इसलिए मानता है कि इसे, वह लाभदायक समझता है।

निकोलस—**(क्रुद्ध होकर)** खैर, जाने दो। मैं सिर्फ तुमसे कहता हूं। मैं अब भी मानता हूं कि सत्य सत्य ही है। यह सब देखकर मुझे दुःख होता है। यहां घर पर मैं देखता हूं नाच-गाना हो रहा है, दावतों के सामान हैं और सैकड़ों रुपये बेकार पानी की तरह बहाये जा रहे हैं, जबकि बेचारे गरीब लोग भूखों मर रहे हैं। मुझसे यह नहीं देखा जाता। मुझपर दया करो, मुझे जाने दो। मैं यहां नहीं रह सकता। खुदा हाफिज।

मेरी—मगर तुम जाओगे तो मैं भी तुम्हारे साथ जाऊंगी और अगर साथ नहीं ले जाओगे तो तुम जिस गाड़ी से जाओगे उसके नीचे दबकर मर जाऊंगी। भाड़ में पड़ने दो सबको—मिसी और कातिया को भी। हरे राम, हरे राम, कितना जुल्म है, कितना अत्याचार है।

(रोती है)

निकोलस—**(दरवाजे के पास)** अलेक्जेण्डर पिट्रोविच, तुम घर जाओ, मैं नहीं जाऊंगा। **(अपनी पत्नी से)** अच्छी बात है, मैं ठहर जाता हूं।

(ओवर कोट उतारता है)

मेरी—(गले लगाकर) हमें बहुत दिन जिंदा नहीं रहना है। 28 वर्ष तक साथ रहने के बाद हमें अपने बीते हुए जीवन की खुशी को मिट्टी में नहीं मिलाना चाहिए। अब मैं कभी कोई पार्टी न दूंगी: मगर तुम मुझे इस तरह मत दण्ड दो।

(वानिया और कातिया दौड़े आते हैं।)

वानिया और कातिया—मां, आओ, जल्दी करो।

मेरी—आती हूं, अभी आती हूं। अच्छा, अब पुरानी बातें भूलकर एक दूसरे को क्षमा कर देना चाहिए।

(कातिया और वानिया के साथ प्रस्थान)

निकोलस—बालक है, बिल्कुल बालक है, या चालाक औरत है ? नहीं, एक चालाक बालक है, हां, ठीक है। मालूम होता है, ईश्वर, तू नहीं चाहता कि मैं तेरा सेवक बनकर तेरा यह काम पूरा करूं। तू चाहता है कि लोग मेरी ओर उंगली उठावें और कहें ''**यह उपदेश देता है मगर काम नहीं करता है**''। अच्छा यही सही मैं समझा, तू चाहता है, त्याग, नम्रता, और आत्म-समर्पण। काश! मैं इतना ऊंचा उठ सकता।

(लिसा का प्रवेश)

लिसा—क्षमा कीजिएगा। मैं वासिलीसाहब का खत आपके पास लाई हूं। वह मेरे नाम है, मगर उसमें लिखा है कि मैं आपको भी सुना दूं।

निकोलस—क्या यह वास्तव में सच है ?

लिसा—हां, क्या मैं पढ़कर सुनाऊं ?

निकोलस—हां, पढ़ो।

लिसा—(पढ़ती है) ''मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप यह निकोलस साहब को सुना दें। मुझे अपनी उस गल्ती पर सख्त अफसोस है कि जिसकी वजह से मैं गिरजा से बहक गया था। मगर खुशी की बात है कि मैं फिर गिरजा को मानने लगा हूं। मुझे आशा है कि आप और निकोलस साहब भी इसी मार्ग का अनुसरण करेंगे। कृपया मुझे क्षमा कीजिएगा।''

निकोलस—उन्होंने बेचारे को सता-सताकर आखिर काबू में कर लिया।

लिसा—मैं आपसे यह भी कहने आई थी कि शाहजादी यहीं हैं। वह मेरे साथ

दूसरी मंजिल तक अत्यंत उत्तेजित दशा में दौड़कर आईं और आपसे मिलकर जायंगी। वह अभी बोरिस से मिलकर आई हैं। मैं समझती हूं कि आप इस वक्त उससे न मिलें तो अच्छा है। आप से मिलकर उसे क्या फायदा हो सकता है?

निकोलस—नहीं, जाकर उन्हें अंदर भेज दो। मालूम होता है कि आज मुसीबतों का दिन है।

लिसा—अच्छा, तो मैं जाकर भेजती हूं। (**प्रस्थान**)

निकोलस—(**अकेले में**) हां, काश कि मैं यह अच्छी तरह समझ सकता कि जीवन का अर्थ यही है कि मैं तेरी सेवा कर सकूं; और मुझे आजमाने के लिए जब कोई मुसीबत मुझपर डालता है तब तू जानता है कि मैं उसे सहन कर सकूंगा, उसे सह लेने की शक्ति मेरे अंदर मौजूद है, नहीं तो वह आजमाइश नहीं रहेगी...ईश्वर मेरी मदद करें!

(**शाहजादी का प्रवेश**)

शाहजादी—तुमने मुझे अंदर बुलाया? इतनी बड़ी इज्जत बख्शी? मैं आपको सलाम करती हूं। मैं तुमसे हाथ नहीं मिलाऊंगी, क्योंकि मैं तुमसे घृणा करती हूं, तुम्हें तुच्छ समझती हूं।

निकोलस—बात क्या हुई?

शाहजादी—बस यह, कि वह उसे सजा देने के लिए दण्ड-भवन में लिये जा रहे हैं और इस बात के कारण तुम्हीं हो।

निकोलस—शाहजादी, अगर तुम्हें कुछ कहना है तो वह बोलो; लेकिन अगर तुम केवल मुझे कोसने ही को आई हो तो तुम अपने को ही हानि पहुंचाती हो। तुम्हारी बातों से मुझे चोट नहीं पहुंचेगी; क्योंकि मैं हृदय से तुम्हारे साथ सहानुभूति रखता हूं और तुम पर तरस खाता हूं।

शाहजादी—आहा, कितनी दया है! कैसी ऊंची ईसाइयत है! नहीं मि. सारयन्तसव, तुम मुझे धोखा नहीं दे सकते। अब हम तुम्हें अच्छी तरह समझ गये। तुमने मेरे लड़के को बरबाद कर दिया, और तुम्हें उसकी कुछ परवा नहीं। तुम 'बाल' कराते हो, नाच-पार्टी देते हो, और तुम्हारी लड़की, जिसका विवाह मेरे लड़के के साथ ठहरा था, अब किसी दूसरे लड़के के साथ विवाह करने वाली है और तुम इसपर राजी हो। मगर तुम दुनिया को

दिखाना चाहते हो कि तुम सादा जिंदगी बसर करते हो। इस मक्कारी और बहानेवाजी से तुम मुझे कितने घृणित और कितने तुच्छ मालूम होते हो?

निकोलस—शाहजादी, इतनी उत्तेजित मत होओ। बोलो, तुम किसलिए आई हो? महज मुझे झिड़कने या गाली सुनाने के लिए तो न आई होगी!

शाहजादी—हां, इसके लिए भी। मेरे दिल में जो आग जल रही है, उसे किसी तरह शांत भी करना है। मगर मैं जो कहना चाहती हूं, वह यह है कि उसे वह दण्ड-भवन में लिये जा रहे हैं और यह मुझसे नहीं सहा जाता। तुमने ही यह सब काम कराया है। तुम्हींने, हां, तुम्हींने!

निकोलस—मैंने नहीं, यह काम ईश्वर ने कराया है। और ईश्वर जानता है कि मुझे तुम्हारे लिए कितना दु:ख है। ईश्वर की इच्छा में बाधा मत डालो। वह तुम्हें आजमाना चाहता है, इस आजमाइश को नम्रतापूर्वक, शांति से सहन करो।

शाहजादी—मैं इसे शांति से सहन नहीं कर सकती। मेरी सारी जान मेरे लड़के में है और तुमने उसे मुझसे छीनकर बरबाद कर दिया। मैं शांत नहीं रह सकती। मैं तुम्हारे पास आई हूं और यह मैं अंतिम बार कहने आई हूं कि तुमने मेरे लड़के को बरबाद किया है और तुम्हींको उसकी रक्षा करनी चाहिए। जाओ, और कह सुनकर उसे आजाद कराओ। डाक्टर, गवर्नर-जनरल, शहन्शाह या जिससे जी चाहे मिलो। यह सब तुम्हारा काम है। और अगर तुम यह न करोगे तो, मैं नहीं जानती, मैं क्या कर बैठूंगी। इसके लिए उत्तरदायी तुम्हीं हो।

निकोलस—बोलो, मैं क्या करूं? तुम जो कहोगी वह मैं करने के लिए तैयार हूं।

शाहजादी—मैं फिर दुहराती हूं—तुम्हें उसकी रक्षा करनी होगी। अगर तुम नहीं करोगे तो सावधान! ईश्वर मालिक है!

(निकोलस गद्दी पर लेट जाता है। खामोशी। दरवाजा खुलता है और बाजे की आवाज जरा जोर से सुनाई देने लगी। स्त्यूपा का प्रवेश)।

स्त्यूपा—बाबा यहां नहीं हैं, अंदर आ जाओ।

(लोग जोड़े बनाकर नाचते हुए आते हैं)

ल्यूबा—**(निकोलस को देखकर)** ओहो, तुम यहीं हो बाबा, माफ करना।

निकोलस—(उठकर) कोई परवा नहीं है। **(नाचनेवाले जाते हैं)**

निकोलस—वासिली ने कदम पीछे हटा लिया; बोरिस को मैंने तबाह कर दिया। ल्यूबा ब्याह करनेवाली है। कहीं मैं भूल तो नहीं कर रहा हूं? भूल कर रहा हूं अपने में विश्वास करने की? नहीं, पिता मेरी मदद करो।

पांचवां अंक

(पांचवें अंक के लिए टाल्सटाय यह नोट छोड़ गये, जिसे वह कभी पूरा नहीं कर सके।)

दण्ड-भवन का एक कमरा। कैदी बैठे और लेटे हैं। बोरिस बाइबिल पढ़कर मतलब समझाता है। एक आदमी, जिसको कोड़े लगाये गये हैं, अंदर लाया जाता है। ''आह इसका बदला चुकाने के लिए अगर पुगचेव जीता होता।'' शाहजादी अंदर घुस आती है, मगर बाहर निकाल दी जाती है। एक अफसर से झगड़ा। कैदी प्रार्थना करने के लिए जाते हैं। बोरिस हवालात में डाला जाता है: ''उसको कोड़े लगेंगे।''

(दृश्य बदलता है)

जार की सभा। सिगरेट, हँसी-मजाक। शाहजादी मिलना चाहती है। ''उससे कहो जरा ठहरे।'' अर्जी देनेवालों की पेशी। खुशामद, उसके बाद शाहजादी। उसकी प्रार्थना अस्वीकृत हुई।

(प्रस्थान)

(दृश्य बदलता है)

मेरी, निकोलस की बीमारी के बारे में डाक्टर से बातचीत करती है। ''वह बदल गया है। नम्र और शांत है। मगर उदासीन रहता है।'' निकोलस आकर डाक्टर से बातचीत करता है और कहता है कि इलाज करना बेकार है। मगर पत्नी की खातिर उसपर राजी हो जाता है। टानिया और स्ट्यूपा का प्रवेश। ल्यूबा मिकालोविच के साथ। जमीन की बाबत बातचीत। निकोलस इस तरह बातें करता है, जिससे उन्हें बुरा न लगे। सबका प्रस्थान। निकोलस लिसा से कहता है, मुझे संदेह है कि मैंने जो कुछ किया वह ठीक है कि नहीं। मैं किसी काम में कामयाब न हुआ। बोरिस नष्ट हो गया; वासिली पीछे हट गया; मैंने कमजोरी दिखाई। इससे प्रकट है कि ईश्वर मुझे अपना सेवक नहीं बनाना चाहता। उसके

पास बहुत-से सेवक हैं-और वे मेरे बगैर उसकी इच्छा पूर्ण कर सकते हैं। जो आदमी इस बात को समझ लेता है, वह शक्ति पाता है। लिसा का प्रस्थान। वह प्रार्थना करता है। शाहजादी दौड़कर आती है और उसे गोली मारकर गिरा देती है। निकोलस कहता है कि इत्तफाक से गोली उसके हाथ से छूटकर लग गई। वह जार के नाम से एक चिट्ठी लिखता है। वासिली कुछ सच्चे ईसाइयों के साथ आता है! वह खुशी मनाते हुए मरता है कि गिरजा की धोखेबाजी जाहिर हो गई और कहता है कि वह अपने जीवन का अर्थ समझ गया।

❒❒❒

ISBN 81-7309-206-
9 788173 092060

Rs. 30.00